# अनुभवप्रकाश

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई.

श्रीः

# अनुभवप्रकाश

***

जोधपुरनिवासी
श्रीमहायोगीश्वर श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री १००८ श्रीबनानाथजी महाराज विरचित
तथा
बीकानेर निवासी
योगी श्री १००८ श्रीनवलनाथजी महाराज एवं
तत् शिष्य योगी श्री १००८ श्रीउत्तमनाथजी महाराज
कृत वाणी

***

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : १०० रुपये मात्र।

संशोधक :-
योगी शिवसत्यनाथजी महाराज अधिष्ठाता
योगी प्रहलादनाथ "विज्ञानी" सचिव
श्री नवलेश्वर मठ सिद्धपीठ
नत्थुसर वास, बीकानेर (राजस्थान)
मोबाइल- ९४१३६५९३६२
फोन- ०१५१-२२१०३४७

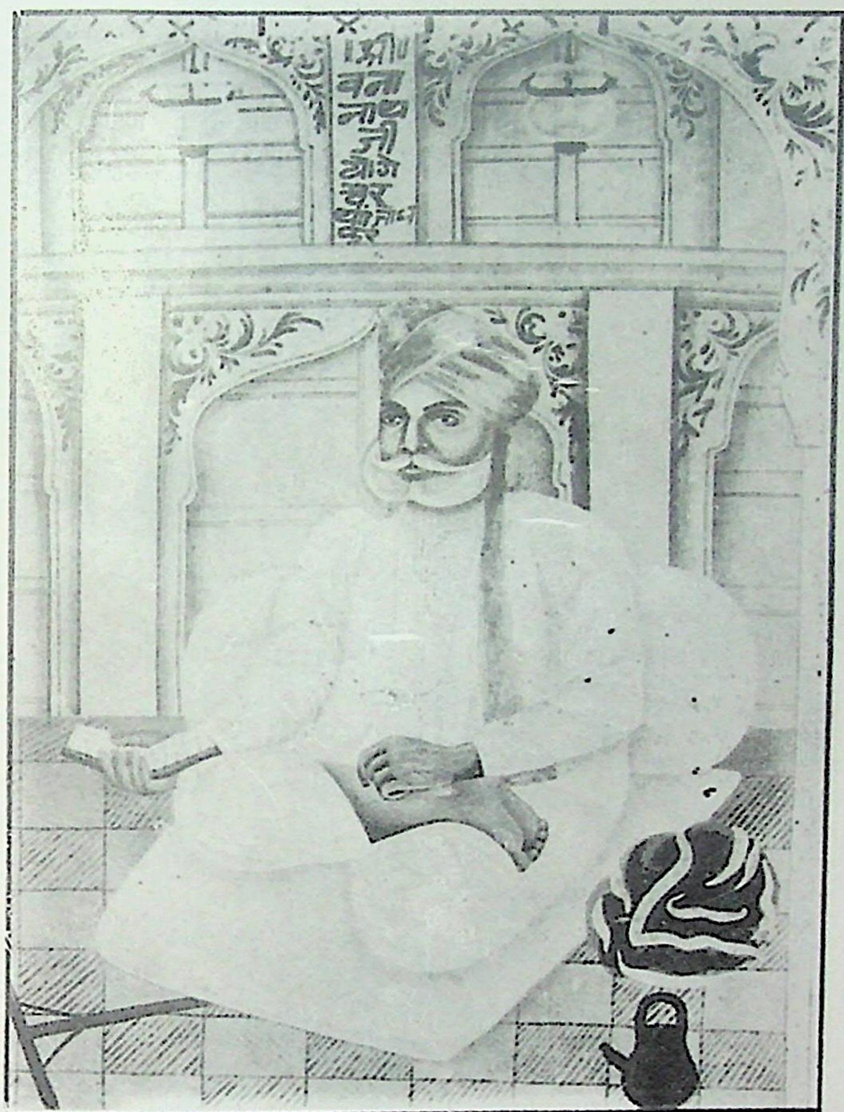


मुद्रक एवं प्रकाशक :
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४.

Printers & Publishers :
**Khemraj Shrikrishnadass**
**Prop. : Shri Venkateshwar press,**
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

**Web Site : http://www.khe-shri.com**
**Email : khemraj@vsnl.com**

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s. Khemraj Shrikrishnadass, Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai- 400 004, At, their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013




श्रीबनानाथजी योगेश्वर



श्रीनवलनाथजी योगेश्वर

श्रीउत्तमनाथजी

# अनुभवप्रकाश के राग आदिकों की अनुक्रमणिका



**राग आदिकों की अनुक्रमणिका समाप्त**

# अनुभवप्रकाश की पद अनुक्रमणिका

अनुभवप्रकाश की–पद अनुक्रमणिका समाप्त

*****



## अथ

# शङ्करप्रातःस्मरणम्

***

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषवाहनमंबिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।१।।
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरंविजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।२।।
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमखिलं पुरुषं महान्तम् ।
नामानिभेदरहितं सुखदुःखशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ।।३।।
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातःकाले पठेत्तु यः ।
स गत्वा किल कैलासं शिवेन सह मोदते ।।४।।

ॐ

# अथ

# श्रीनवलनाथेश्वरस्तोत्रप्रारम्भः

***

श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।
जगत्प्रकाशं निखिलावासं भवभयदारं पारेशम् ।।
गङ्गाशोभितजटाकलापं गगनविलासं गौरीशम् ।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।१।।
योगीन्द्रैरभिपूजितपादं तारणकारणरामेशम् ।
करुणाकारं मयपुरहारं धृतसुखवासं कैलासम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।२।।
जय जय कृतशेषं शिवामहेशं ध्यानधरेशं भूतेशम् ।
विद्यालयकारं विश्व विकाशं काशीवासं विश्वेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।३।।
परमपुनीतं निखिलगुणीतं वाराणसीशं तारेशम् ।
ब्रह्मकृतीतं सुरनरगीतं तारस्वरूपं परमेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।४।।
द्वादशशुभलिङ्गैः पूजितदेहमुमामहेशं योगीशम् ।
कुण्डलिकुण्डलभूषणभूषितसर्वशुभांगं ध्यानेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।५।।
जगद्विचित्रं करधृतडमरुं मुद्रावेशं सोमेशम् ।
भूतगणार्चितभूतिविभूषित–मङ्गलकारिकृतवेषम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।६।।

प्रणतसुखकारं कृपाविशालं त्रिशूलधारं भीमेशम् ।
भयकृद्भयनाशं धनपतिदासं मायापारं व्योमेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।७।।
अघटितमुद्राघटनाकारं शोभितरूपं नृतवेशम् ।
विबुधविशेषं विविध सुदेशं परमाकारं सोंकारम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।८।।
नेत्रत्रयधारं शोभितभालं चन्द्रविशालं स्तुतवेशम् ।
नानानगवासं सुकृतविलासं प्रीतिनिवासं धारेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।९।।
गणपतिषण्मुखलालितदेहं चित्रविचित्रं भूतेशम् ।
वरदवरेण्यं परमावेद्यं रूपाभेद्यं सुखवेद्यम् ।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।१०।।
यंरंलंवंवर्ण विचारं वर्णसुचारं वर्णेशम् ।
तारणकारणमुमया सहितं लिङ्गविशेषं स्तुतवेशम् ।।
श्रीनवलमहेशं नानावेशं चोत्तमदेशं नौमीशम् ।।११।।
स्तुतिमिमां प्रयतः पठेत् जनो भवति तस्य सुखं परमाद्भुतम् ।
जगति कीर्तिमनोरथवैभवं त्विह परत्र जनस्य शिवालयम् ।।

।। इति श्रीनवलनाथेश्वरस्तोत्रं समाप्तम् ।।

(इति श्रीनवलनाथ कृतं शङ्करस्तोत्रं समाप्तम् ।)

।। श्रीरस्तु ।। ॐ तत्सत् ।।



श्री गुरवे नमः ।। श्री सच्चिदानन्दाय नमः ।।

श्रीमहायोगीश्वर श्रीमत् श्री बनानाथजी कृत–

# अनुभवप्रकाश

***

पद–१ (राग– आसावरी)

साधो भाई हरिजन हरकूं ध्याता ।
समझ्या संत परम पद पावें, वारें निगे निरंजन आता ।।टेर।।
गवरीको नन्द गणेश मनाऊं, सिमरूँ शारद माता ।
भूलां भोम सवाई आपे, सुध बुध दो गुणदाता ।।१।।
सिवर्‍यां संत सदा सुख पावें, निरमल नीर में नाता ।
पल में पाप कटे कायाका, शील सज्यां घर आता ।।२।।
घरमें जुगत मुगत सब दरसें, कर मेहर मैं जस गाता ।
निगे करे निरख्यो निरगुणकूं, फल अमरापुर पाता ।।३।।
पायो सास उसाँसे सिमिरण, कर सिमिरण समझाता ।
बनानाथ कहे सेन सतगुरुकी, परस्यां मिटे विख्याता ।।४।।

***

पद–२

परम गुरु थारी कुदरतपर कुरबानी ।
आगम विरला जानी, सायब थारी कुदरतपर कुरबानी ।।टेर।।
पलमें राव रंक कर डारे, रंक करें सुलतानी ।
तेरी गति तूहीं जाणै करता, मैं हेरत रह्यो हैरानी ।।१।।
तै गज सिन्धु डूबतो तार्‌यो, चीर द्रौपदरानी ।
भारथमें भँवरीका इंडा, राखि लिया हरिजानी ।।२।।

हरिचन्द्र कँवर तारादे रानी, ज्यां भर्‌यौ नीच घर पानी।
संकट दे संतसार करी जद, दरशण दिया हर आनी।।३।।
केताई संत हुआ धरणीपर, ज्यांरि विगत कहे कहि बानी।
बनानाथ कहे अर्ज हमारी, सुँण सायब निर्वानी।।४।।

***

पद–३ (राग– सारंग)

पार न जात तूं प्राणीलाल,
देहि दिवानी ज्याकूं दोस न दीजै, पार न जा हो पार न जा।।टेर।।
खडी खडी में निजर निहारूं, दरद लग्यो दिन रैंण पूकारूं।
ब्रहन अन्दर लग रही बाव, पल पल प्यास लगी पीव तोरी।।१।।
खबर नहीं खलक मांहि तोरी, मैरम मुराद लगी दिल मोरी।
दरस बिना दासी दुःख पाय, रातदिनां में रहुं रुतवंती।।२।।
मेहर भई मोहन घर आयो, सो प्रीतम नैणा दरसायो।
रूं हृदे बीच रचियो आय, सदकै जाऊं सुरतपर सेणां।।३।।
सदा सुहागण श्याम सुहायो, रहत राम अमर वर पायो।
पांच सखी मिलि सारंग गाय, सुरता रहैं सदा सुखवासण।।४।।
यह विरहन के भेद बताये, जीयाराम गुरुके गुण गाये।
बनानाथ ओलख्यो सत भाव, संत अनेक बुहा इण सैने।।५।।

***

पद–४ (राग– सारंग)

साध होय घट सोजलो,
थारो आवा गिवण न होय, समझ हालो माजां भाइयों।।टेर।।
सप्त धातरो सूबटो, बोलत अमृत बोल।
भिन भिन कर समझा दिया, गुरु दीयो नाम अमोल।।१।।
केइक करणी कररया, केइकरया है अडोल।
केइक माई कारणे, भटक गुमावे तोल।।२।।

रत होय चालो रामसूं, तजो जगतरो नेह।
इण पन्थ परतक पावसो, आतम अचल अदेह ।।३।।
आज्ञाकारी आगला, रहै गुरुचरणाँ री ओट।
बनानाथ कहें भाइयां, तुम वांधो प्रेमहंदी पोट ।।४।।
***

पद–५ (राग– मंगल)

नींदड़ली नारि बुरी,
थेंतो लियो सकल जग खाय, नींदड़ली नारि बुरि ।।टेर।।
निन्दरा आई शहरमें घर घर बुझै जाय।
तीन लोकमें आई पाड़के, साधू देवोंनी बताय ।।१।।
साधू आया वारणें, क्युं कूके नार कुनार।
में अवधूता रहूं गगनमें, तोय देऊँ ए शब्द की मार ।।२।।
हमकूं तुम निबली करजाणी, मेरी जात कुजात।
तीन लोकमें मेरी साख पूछलो, मन जमरांणो मेरे साथ ।।३।।
सिमरण सेल शब्दका हाथे, बैठा आसन धार।
आगी मत आ नारी कुलखणी, आडी मेरे गुरुकी कार ।।४।।
बड़े बड़े ऋषि मुनी वनमें, जासूं खेली राड।
भजन तुम्हारा कोण चिकारीं, लेऊं ज्ञान कुंड़ खाड ।।५।।
महा करमण तूं कारन माने, निसडी बड़ी निराट।
बनानाथ कहे गोरख स्वामी, निश्चे दिवी तोंये डाट ।।६।।
***

पद–६ (राग– मंगल)

सतगुरु शरणे आय रामगुण गाय रे,
अवसर बीतो जाय पीछे पिछताय रे ।।१।।
झूल्यो नरक दुवार, मास नव बीच रे।
कीना कवल करार, बिसर गयो नीच रे ।।२।।
लागो लोभ अपार, माया मांय मद छक्यो।

बंध्यो बंधण अपार, नाम नहीं लें सक्यो ।।३।।
मायावन अंधार, मृगजल धूप रे।
भटकत फिरत गँवार, माया के रूप रे ।।४।।
मोह मुक्रके महल, श्वान ज्यूँ भुस मर्यौ।
यूं सुद्ध स्वरूप बिसारि, चौरासी लख फिर्यो ।।५।।
ओ जग मूढ़ अजांण, सार सुध ना करे।
बनानाथ बिन नाम, कारज कैसे सरे ।।६।।

***

पद–७

भवसागरमें धरी, मानव देह आय रे।
हर सिमरण विन, जूंण पशुकी पाय रे ।।१।।
लख चौरासी जूंण, जीव भटकत फिरें।
करम कमाई संजोग, मानव देह अवतरें ।।२।।
ओ जग झूठो जाण, सार सतसंग गिरो।
तब पावो गुरुज्ञान, तुरत भवसिंधु तिरो ।।३।।
छूटत सकल संताप, ताप त्रैगुण मिटे।
पावे मोक्ष मुकाम, रहो निरभय उठे ।।४।।
कोई बड़भागी संत, सत्य मिथ्या लखें।
बनानाथ कर सार, सत्य वाणी भखें ।।५।।

***

पद–८

समता सेज समाय, करम कांने करें।
भवसागर भरी भूल, ज्यामें हंसा तिरें।।१।।
ज्ञान ध्यान कर सार, भगत सांची गिरें।
गुरुमुखी आधीन, जाके कारज सरें।।२।।
ब्रह्म भर्यो दरिआव, चूण चेतन करें।
मोती चुगत विचार, मुक्ति अवदर भरें।।३।।

बनानाथ ब्रह्म जांण, दुःख दारिद्र हरें।
हंस चल्या भव जीत, नहीं फेरा फिरें ।।४।।

***

पद–९

प्यारी सजि सोले सिणगार, शील सुध सुन्दरी।
चली चेतन की चाल, वाणीमुख मुन्दरी ।।१।।
अजब झरोखे आय, अधर आसण किया।
धरणि गगन बिन धाम, परख परसी पिया ।।२।।
सदा पिव रहे संग, रहत रंग रचरई।
गरज रहीं गुरुज्ञान, मान मिल रहई ।।३।।
अमर पिया उण देश, अर्थ कर लीजिऐ।
बनानाथ इण बाण, ब्रह्म रस पीजिये ।।४।।

***

पद–१०

सुरत चली कर सार, सिमरण सांचा किया।
हिंरदे भया हुलास, भरम पाछा दिया ।।१।।
लिव लागी दिनरात, नाम नाभीसु लिया।
अरध उरध के बीच, प्रेम प्याला पिया ।।२।।
मेर इकीसुं छेद, निरत आगे चली।
इड़ा पिंगला सोध, सुखमणासू मिली ।।३।।
तख्त त्रिवेणी महल, चेतना चहूदिश भया।
जप्या अजपा जाप, अखंड गुरुकी मया ।।४।।
निरगुण निरख्यो नाथ, नाम निश्चै किया।
निरत रही लिवलाय, गगन डंका दिया ।।५।।
बाजा बाज्या छतीस, गगन गरजत रह्या।
झिलमिल जोत अपार, पवन परचें थया ।।६।।
सुंन बिच सहज समाय, ब्रह्म बेगम गाइया।

जीवपीव मिल एक, अमर अनुभव भया ।।७।।
बनानाथ धन्य भाग, ऐसी हर गुरुमया ।
अधर सिंहासण बैठ, मेहेरमें मंगल कया ।।८।।
***

पद–११

जड़ सोई असत कलेश, जासूं त्यागे परे ।
सत चेतन आनंद, ताकूं संग्रह करे ।।१।।
तूं तत असी असार, मायामें लेखिए ।
आतम अचल अथाय, माया नहीं पेखिये ।।२।।
ये नित अनित विवेक, किया निज छाणही ।
गीता वेद पुराण, कहे पर वांणही ।।३।।
प्रकृति परिवार सहित, खण्डण करी ।
बनानाथ सुध बोध, निरमला निसपरी ।।४।।
***

पद–१२

आज दिहाडो गरवा, देवरों गावां मँगलाचार ।।टेर।।
संतद्वारे चालो सखी, सज सोले सिणगार ।
लघुतारा लंगर पहिरलो, धिन आजुडो दिन वार ।।१।।
पांच सखी भेली हुई, मिलीं पंचीसूं आण ।
अरध उरध आसन किया, कर रहीं पवनपिछाण ।।२।।
तनकेरो दीपक करूं, बाती करूं मनसार ।
तेल सिंचाहूं प्रेमरो, जगियो ब्रह्म विचार ।।३।।
इडा पिंगला सोझके सुषमण कियो निहार ।
रमझम करती कांमणी, आई त्रिवेणी दवार ।।४।।
दशवें में दरसण भया, अनहद घुरिया निसाण ।
जोत झिलामिल होय रही, ये साचा सेंनाण ।।५।।
जुड़ी हथाई हर नामरी, कर रह्या संत विलास ।

बीच विराजे गुरु आपणा, क्रोड भानु परकास ।।६।।
जीयाराम गुरु भेटिया, भागा भरम अंधार।
बनानाथ चरणो रहया, नित प्रति करूं दिदार ।।७।।

***

पद–१३ (राग– सोरठ)

जागो जुगत विचारि, रहो कमलापति।
औसर आयो हाथ, हमें करलो गति ।।टेर।।
गरजत गगन मँझार, बिजलियां चमकती।
अमृत झरत अपार, पिये कोई नर जती ।।१।।
षट् चक्करकूं छेद, चेतन चाल्या संत सती।
उलट पुलट भर पीव, निकट गंगावती ।।२।।
अखण्ड ज्योत दिनरात, लागत है विनवती।
देख्या देहीमें दीदार, जदि हुआ तिरपती ।।३।।
रहुं चरण लिपटाय, उतारूं गुरुरी आरती।
बनानाथ कहे दास, सायब मोपर छत्रपती ।।४।।

***

पद–१४ (राग– ब्रुवास, चौपाई–पद)

तुझविन घडियन आवड़े, सतगुरु सायब सैंण।
सिम्रथ साचा सदगुरु, अमृत आछा वेण ।।टेर।।
ऊभी जोऊँ वाटड़ी, कर निगे झांकत नैंन।
मंदिर आवो मोहणां, दासिनूँ दरसन देंन ।।१।।
दरसन विना दुखीदासी, तूं सुखी राखण सेंण।
विरह कर कर विरहणी, दरदवंती कहे वेंण ।।२।।
वन वन पुकारै विरहणी, कर लगन दिया रैण।
आयो नहीं गुरु आपणो, अवगुण पर गुण देहण ।।३।।
वेगरज सत गुरु रहैं, बेहद भावें ऊगा भाण।
बनानाथ मिल्यो मोहन, पतिवरता जांण ।।४।।

पद–१५

आज मोहन आवियो, कर दया दासी जाण।
पिलंग ढालूं प्रेमरा, पल पल वारूं प्राण।।टेर।।
अरज करताँ आवियो, जिन विरद अपणो जाण।
इडा आवत ओ लख्यो, लियो पिंगला पिछाण।।१।।
दवादस दरश दिया, जिन सुखमणा घर आण।
आसगत कीनी आरती, व्रह बधायो बखाण।।२।।
बेहद बाजा बाजियां, चित रच्यो मंगला चाव।
सुरत गावे सोलवां, कर बास कर कर भाव।।३।।
अनंत लोचन आगली, जिन निरत निरमल जाण।
सदा सेवे सतगुरु, परतीत ले परवांण।।४।।
दया कर गुरु दान दिया, परमपद रीजाण।
बनानाथ सो सवा गण, वर पायो निरवाण।।५।।

***

पद–१६

परभाते उठ जाग प्राणि, नाम ले निरवाण।
रहो हाजर हरषसूं, गुरुज्ञान देशी जांण।।टेर।।
मैं सवालि नामका, निज प्रेम पीया जांण।
सदा सेवत सतगुरु, में सीस सूंप्या आण।।१।।
पीवतां निज पड़ी पारख, मिटी आवागीवांण।
आतम ओलख्यो आप में, दसु दिश ऊगा भाण।।२।।
प्रकाशरूपी पीवपरस्या, ज्ञान कर घमसाण।
सत चेतन आतमा, जां लगे नहीं जमडाण।।३।।
सेंन दी मेरे सतगुरु, चित मिटी च्यारू खाण।
बनानाथ भया निरभय, छोड़ि खैंचाताण।।४।।

***

पद–१७

सोई आतम देवजाको, नहीं आर न पार।
यहि है परवांण वायक, लखें संत विचार।।टेर।।
आतम एक कर अनेक, धरम नेम धार।
जप तप तीरथ जोगजिग, जो किया करतार।।१।।
आतम के आधार किरिया, होय सब प्रकार।
आप चेतन सबी परखे, अक्रिय निरधार।।२।।
सोई आतम सदा केवल, माया नहीं लिगार।
तोय में लाधे नहीं, जो बीज अरू विसतार।।३।।
सुरती अरु सिमृती दोऊ, यही वरणे सार।
बनानाथ ब्रह्म ऐसो, न कोई जीतनहार।।४।।

***

पद–१८

करणा हुवे सो करलो साधो, मानुष जन्म दुहेलो।
लख चौरासी भटकत भटकत, हमके मिल्यो महेलो।।टेर।।
जप तप नेम वरत अरु पूजा, ओ षट् दरसणको गेलो।
पार ब्रह्म कूं जाणत नाहीं, जुग जुग वाट वहेलो।।१।।
कोई कहे हर वसै वेकुण्ठां, कोई गउ लोकमें कहेलो।
कोई कहे शिव नगरीमें सायब, भोला भरम मरेलो।।२।।
अण समझ्या हर दूर बतावें, समझ्या साच कहेलो।
सत गुरु सेन दिवी किरपा कर, हरदम हर को गेलो।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, अजपा जाप जपूंलो।
कहैं बनानाथ सुनो भाई साधो, सतगुरुको हेलो।।४।।

पद–१९

इन पंथ संत अनेक उधरिया, सतगुरु साख कहेलो।
सिंवर्‌या सो संत पार पहुँचिया, विन सिंवर्‌या डूबेलो।।टेर।।

हरदम तार लगी घट भीतर, नाभिसुं निगेकरेलो ।
उलटा भानु पिछम जाय उगा, झिलमिल जोत जगेलो ।।१।।
त्रिवेणी जाय हंस विराजे, हीरा चूंण चुगेलो ।
मिट गई त्रास परम सुख पायो, जुग जुग राज्य करेलो ।।२।।
उपज्या आनंद गगन जाय गरज्या, अनहद नाद घुरेलो ।
पीवत प्रेम विसर गई काया, जीव पीव मिल रेलो ।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरुपूरा, सुन विच वास वसूंलो ।
कहैं बनानाथ सुणो भाई साधो, जगसूं रैत हूं अकेलो ।।४।।

***

पद–२०

सुन सायर में सनमुख रेणा, सतगुरु पार करेलो ।
जड़ चेतनसूं परे परम गुरु, पद पूरण परसेलो ।।टेर।।
नहीं कोई अजपा जाप सिमरण, किरिया करम थकेलो ।
दिष्ट न मुष्ट द्रिश मैं नाहीं, केवल गुरुगम गेलो ।।१।।
निरगुण नाम निगे विन नेडो, विननेणां निरखेलो ।
दीसतरूप अरूप अपरबल, अकिरिय होय रहेलो ।।२।।
सरबग श्याम सकल ब्रह्म व्यापक, नहीं कोई संग अकेलो ।
निरभै पदरो कियो निबेडो, अमरालोक वरेलो ।।३।।
जीयाराम गुरु अगम अगोचर, क्या करणी कर केलो ।
कहे बनानाथ सुणों भाई साधो, अगम निगम दे हेलो ।।४।।

***

पद–२१

यो सिद्धांत सभीके ऊपर, अपनी आप लखेलो ।
परापेर बैखरी बाणी, सब परकाश करेलो ।।टेर।।
सुंन न धुंन धरण नहीं गगना, नहीं गुरु नहीं चेलो ।
चवदे जलथल ब्रह्मंड नाहीं, आतम अचल अकेलो ।।१।।
आप अखैतां सबखै माया, ज्ञाता ज्ञान न गेलो ।

गुपतसूं गुपत प्रकटसूं प्रगट, नहीं न्यारो नहीं भेलो ।।२।।
नहीं कोई चिंत अचिंत न चेष्टा, नहीं कोई गेह तजैलो ।
धरमाधरम अधरम न वामें, कहण अकहण न हेलो ।।३।।
नहिं होणे मिटनेमैं आया, बोध स्वरूप रहेलो ।
बनानाथ सोई हे द्रष्टा, नहीं ऊलो नहीं पेलो ।।४।।

***

पद–२२ (राग)

ऐसा मेरे सतगुरु खेल रचाया ।

बबर करो खिलका मांहि ख्याली, आप अलोगत थाया ।।टेर।।
कर चौकस चेतनकी चौकी, अरध उरध सुलझाया ।
लटा पवन कँवलमांहि पलट्या, बंकनाल रस लाया ।।१।।
डा पिंगला होय कर भेली, सुखमण सहज मिलाया ।
लग रही तार त्रिवेणीरे छाजैं, अजब झरोखै आया ।।२।।
ोरंग राग हुई रंग महलां, गगनमंडल गिरणाया ।
सुरत निरत दोऊं अरधंग्या, मिलकर मंगल गाया ।।३।।
मिलरह्या जीव शीवके मांही, एकरूप निजथाया ।
कहे बनानाथ सुणो भाई साधो, लगेन जमका दाया ।।४।।

***

पद–२३

धिन गुरु अविगत भेद बताया ।

ार न तूटे कबहुं न छुटे, मेहर करी जब पाया ।।टेर।।
न मन तार लगी त्रिवेणी, इडा पिंगला धाया ।
ांचू उलट मिली आतमसूं, प्रेम पियाला पाया ।।१।।
सुरता नारी सनमुख प्यारी, ज्ञान घटा झुक आया ।
रस्या पीव प्रेम सुन वासी, अनहद राग सुणाया ।।२।।
णभे वांणी राग अगमकी, जांणी आदि अनादी पाया ।
ूरण भाग मिल्यो अविनाशी, भरम करम नहीं काया ।।३।।

जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, जम जालम समझाया।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, अमरपट्टा ले आया।।४।।

***

पद–२४

ऐसा मेरे सदगुरु देश दिखाया।
करी कृपा सतगुरु निज स्वामी, समरथ साच लखाया।।टेर।।
हरकूं हटक झटक जम जालम, गुण इंद्रिनकूं ढाया।
नव तत परै निरखिया निरगुण, आप स्वरूपी थाया।।१।।
दरस्या देव प्रेमसू प्रीतम, अवरण अजर अजाया।
समता सहज रमजमांही रहता, नहिं कोई गया न आया।।२।।
केसे कथूं अकथ भइ मालम, वचन परे थिरथाया।
दिष्ट न मुष्ट लघु दीरघ नाहीं, जहां कोई धूप न छाया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, अधर दलीचै आया।
कहे बनानाथ सुणो भाई साधो, अबके मुजरा पाया।।४।।

***

पद–२५

साधो भाई परमप्रकाश हमारा।
परतकही परवांण सिद्धांत, आपही जाणनहारा।।टेर।।
आप अपार वार नहीं पारा, सुतै दिखावत माया।
ता माया में भेद तिहुंगुण, चौथा रहै निरदाया।।१।।
वाणी चार विचार परख कै, अनुभव उकत बताऊं।
जाग्रत सुपन सुखोपति तुरिया, भिन भिन कहि दरसाऊं।।२।।
बिसवे जीव अवस्था जाग्रत, देहस्थूल अभिमाना।
इन्द्रियां विसे वैखरी वाणी, रहैं नैंण अस्थाना।।३।।
तेजस जीव अरु सुपन अवस्था, लिंग शरीर कवाया।
सँकलप भोग मध्यमा वाणी, कँठस्थान रवाया।।४।।
प्राज्ञ जीव अवस्था सुषुपति, कारण देह अनादी।

भोगसमान पश्यंती बाणी, हृदयस्थान समाधी ।।५।।
साखी स्वरूप अवस्था तुरिया, देह अदेह न कोई।
वांणी परा भोग परमानँद, स्थान मूरधनि सोई ।।६।।
सुद्ध स्वरूप अवस्था बारे, ज्यां च्यारांकी हाणी।
बनानाथ सोई निरबंधण, अपणी आप पीछाणी ।।७।।

***

पद–२६ (छुटकरवाणी राग)

होय हुसियार रहो गुरु आगे।

वैहोनी समझरे सागे, बीरा होय हुसियार रहो गुरु आगे ।।टेर।।
ओ संसार कांटां मांहिली वाड़ी, फल शुभाशुभ लीजै।
फूल देख फूला मत रहिजै, घांम पड्यां कुमलीजै ।।१।।
केइ नर हुवा केइ नर होसी, ज्यांरी जुगत करेनैं जोईजैं।
चूकां थका पड़ौ चोरासी, भवजलधार बहीजै ।।२।।
तुरत करो तीरणरी त्यारी, ओ जम ऊभो शरसारे।
आयो दाव मारे मनमाईं, पालपहुँचा नै पाड़ै ।।३।।
ससतर बांध शीलरा साचा, बुद्धि बगतर पहरीजै।
सिमरण सेल दिया गुरुसायब, जमसूं जुद्ध करीजै ।।४।।
साचा संत स्वरगमें मालें, पांच पचीसौ पालै।
आदर घणौ अलखजीरी दरगा, जमरो जोर न चाले ।।५।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, कर किरपा दी सोजी।
बनानाथ जमसूं जुध जीता, पाया पद निर भोजी ।।६।।

***

पद–२७

ओ जग भूल पड़्यो भवसागर, क्यूंकर दे गुरु ज्ञाना।
चेतत नांहि चौरासी मांहीं, मोह मायारस भीनां ।।टेर।।
कोई कहै मैं जप तप साजू, कोई कह मुख मूना।
कोई कहै तीरथ कर आऊं, ऐसे भटकत सूंना ।।१।।

कलस पूर कवली बरतावैं, मुखसू कहैं पंथ झीणा।
अगमपंथकी खबर न जाकूं, पंथवादी मतहीणा।।२।।
कहत ढूंढिया सबी पापिया, जीव दया नहीं पालें।
अपणी दया जैन मततांई, सरवग दया न भालें।।३।।
कहे दरवेश दीन घर दुर्लभ, सब कलमां मैं आवैं।
पांच निवाज तीस कर रोजा, ज्ञान बिना दुःख पावैं।।४।।
विप्र एक ब्रह्माकौं धारै, और धर्म कहैं ऊला।
गरज पड़्यां कर गौमुखीमें, होमकर कर भूला।।५।।
जंगम कहै जगत् सब मेरी, सब मेरै आधारा।
सगलोई भार सहै सिर ऊपर, इण अभिमाने हारा।।६।।
जोगी कहैं हम सब आदि जुगादि, हम बिन दूजा नांहीं।
आदि अंतकौं चीनत नाहीं, यूं भवसागर माहीं।।७।।
कहै संन्यासी हम सब ऊपर, हैं संन्यास करारा।
करमांरो नास करणौ नहीं जाणैं, फिर फिर करत व्यौहारा।।८।।
षटमत मांहि वाद है बहु विध, अपणी अपणी खाचैं।
बनानाथ आपकी निश्चै, ज्यां षटमत नहीं पांचैं।।९।।

***

पद–२८ (राग)

इण विध हालो गुरुमुखी सुण सुण करो विचार।
गुरु विन गैलो ना मिलै।।टेर।।

पाल पुराणी पगनवा, चल्यो वटाऊ वे वाट।
कोऊ वटाऊनै घेरकै, लावे समझरी वाट।।१।।
जावतो मारगियो जाणंदौ, बलतांरों करो निहाल।
वलतां साधूड़ांरी हाठड़ी, गुरुगम विणज सँभाल।।२।।
वे हर हीरारां पारखु, जासू समजने करो वोपार।
विन समज्यां नहीं आपड़ो, सारी पूंजी जावोला हार।।३।।
पोटां बांधी प्रेमरी, मायै वुसतां भरी अपार।

सुगरा सौदो कर चल्या, निगुरा फिरै असार ।।४।।
इडा पिंगला सुषमना, त्रिवेणीरे निज पार ।
वरसे फुवारां प्रेमरां, झिलमिल जोत दीदार ।।५।।
पारब्रह्म पद परसिया, दशमैं किया मुकाम ।
अनंत कोटी संत तां वसैं, सों निज निश्चिल धाम ।।६।।
षटमत वेद पुराणमैं, ये परगट निरधार ।
जियाराम गुरुकी दया, बनानाथ कही सार ।।७।।

***

पद–२९

सतमारग सतगुरुतणा, चाले संत सुजाण ।
निगुरा नर पाछा चलै ।।टेर।।
चालो रे गुरु हाटड़ी, लेसां वस्तु विचार ।
जग व्योपारी मैं जाणिया, ज्यारे बुसतां अनंत अपार ।।१।।
वेपारी निज प्रेमरा, ज्यांरे गिरंथां भर्‌या भंडार ।
सतसंगत सुगरा ग्रहैं, निगुरा गया विडार ।।२।।
गुरुमुख गरवा चालणा, समझ सुघड़रो काम ।
विन समझ्यां फल न मिलै, पच पच मरे रे अजाण ।।३।।
मूणां भरी गियाँन री, अधिक प्रेमरी खाण ।
मतवालो मन लादियो, नर चाल्यो बहु जाण ।।४।।
विषम घाट बंक नालरा, आगे मांगे दाणीड़ो दाम ।
पट्टा लिखाया गुरुज्ञानरा, दांणी ऊभो करै रे सिलाम ।।५।।
गंगा जमुना सरस्वती, ताँ मिल मिट्या संताप ।
हंस अमरफल चाखिया, जप्या अजपा जाप ।।६।।
गगनमंडल जाय गरजिया, अनहद सुणी अवाज ।
सुरत विलुंबी स्यामसूं, सर्‌या सभी बिध काज ।।७।।
सुन सायर सूभर भर्‌या, सो हंसाकी धाम ।
गुरुमुख मोती बीणिया, वां पाया बिसराम ।।८।।

जीयाराम गुरुभेटिया, परस्या पद निरवाण।
बनानाथ निरभै भया चित, मिट गई चारूं खाण।।९।।

***

पद–३० ( राग)

हरदम हम बोलंदा, निगे करे मैं निरख्यो जोगिया।
सोहूं साच कहंदा, सुंन सायर रे मांय हो निरगुणरहंदा।।टेर।।
प्रथम नाम निगैकर नाभी, रवि शशियर धवणाया।
सुरत शब्द एकण घरलाया, जूना पीव जगाया।।१।।
सैंस कला सारीसारंग यू, जोगी जोग जगाया।
तीन देव बाकी करत खवासी, अजपा रहत अचाया।।२।।
गिगन गुफामैं गैबी गरज्या, गुरुवचनां वहै आया।
मिलग्यो मैरम मयाकर मालक, महरण मुड़दा लाया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पुरा, मोय पूरण प्याला पाया।
बनानाथ योगेश्वर बोलै, मेरा सोवन सिखर मठ छाया।।४।।

***

पद–३१ ( राग– आसावरी)

साधोभाई जोगी जगसे न्यारा, ज्यांका निगे किया निसतारा।
साधो भाई जोगी जगसे न्यारा।।टेर।।
पांच पचीस तीन वस करके, किया कालका चारा।
आसण मार अडग होय बैठा, मिट गया भरम अँधारा।।१।।
दरस्या देव भेव नहीं वाके, सर्वज्ञ सकल पसारा।
वाका खेल खरा कुदरतमैं, रेता सबसूं न्यारा।।२।।
वाकी महिमा कही न जावे, नित निरगुण निराधारा।
इस पदवीकौं अरथ खोजे, सो पद पावै पियारा।।३।।
अविगत अखै अमर अविनासी, निरधुंधी निराकारा।
बनानाथ कह मैं वांही वसत हूं, जां नहीं कालका सारा।।४।

***

पद–३२ (राग)

समझों साधो सुरत करैं, सहजो सहज समावैं;
करण अकरणा वां नहीं, आप आपेई पावै ।।टेर।।
चल पंछी बिन पर उड्यां, सीधो सुंन जावैं।
बेगमपुर अस्थान है,आवागिवण न आवैं ।।१।।
अविनासी तांपर वसैं, रचना नहीं आवैं।
ज्या मैं सृष्टि उतपति करी, बाकौ किम कर पावै ।।२।।
दिष्ट परैं देवल सही, केवल होय जावैं।
झांई परैं सांई वसैं, वाको दरसण पावैं ।।३।।
विन पारख परलोककी, महिमा सब गावैं।
बनानाथ कह समझलो, एड़ो दाव न आवैं ।।४।।

***

पद–३३ (राग)

साधो रे ऐसे सेन समांई।
समज्या सोही गोतलो, गुरुसे गम आई ।।टेर।।
विन बाती दीपक जगैं, ज्यांरी जोत सवांई।
तीन लोककी तिमरता, तामैं नहीं काई ।।१।।
पर बिन पंछी घरूँ उड्या, वैहतां खोज बिलाई।
उलट चल्या असमान मैं, आप अधर रेवाई ।।२।।
गमकर गिगन विलुंबिया, विनकर कलपाई।
अनड़ वसै आकाशमैं, धर पावन लाई ।।३।।
सबकै परै वो पुरुष है, सो दीसंता मांही।
चंदा दीसै अंबु मधा, रहता गिगना यां नाहीं ।।४।।
समदृष्टि संत समझ लो, सब घट एक सांइ।
यूं जांण्यां विन भरमना, भागे नहीं काई ।।५।।
महरम मोल अमोल है, सब संतां गाई।
बनानाथ ब्रह्म प्रापति, निश्चै दरसाई ।।६।।

पद–३४

साधो रे ऐसे ब्रह्म बिचारो।

ब्रह्म पायां भ्रम ना रहै, सब घट इक सारो।।टेर।।
ज्यां घटमैं प्रगट भयो, सो घट दीसत न्यारो।
रैता पुरुष तां रचरया, ज्यां नहीं मायाको सारो।।१।।
द्वादश परिपूर्ण भर्‍यो, उरण नहीं आपो।
जाप अजपा वां थक्या, भरियो माप अमापो।।२।।
विना पालकी सिंधु हैं आ वेगमकी वाणी।
ज्या हंसा निरभै भया, तां नहीं काल निसांणी।।३।।
अधर सधरकी सहलमें, संताका वासा।
बनानाथ लवलीन ह्वै, मेटी सब आसा।।४।।

***

पद–३५ (राग)

मन वांणिया वीरा,

विणज न जाणैरे, विणज न जांणैरे मन वाणियाँ।।टेर।।
अरध शरीरी कुबद विराणी, ज्यासूं हंसकर बोले।
साय सरीसा सतगुरु मिलिया, कबहुँ न अँतर खोले।।१।।
बैठ दुकानां दालिद विणजैं, मोल सवाया चावैं।
चेतन ग्राहक मिलै तोये तबहीं, मार सिरा पर खावै।।२।।
लेखो चोखो करै पछाड़ी, ग्राहक उठ घर जावै।
दियो दाम आयो नहीं करसी, अधकी पांण चढावै।।३।।
एक दिन तोमें आण वणैला, जब साहब न्याय चुकावे।
मार पडै पापांरी पूरी, जबाब कछू नहीं आवे।।४।।
सतगुरु जहसा सैंण तुम्हारे, ज्यासूं सनमुख होय ले।
बनानाथ कहें भवसागरमैं, आयो दाव क्यूंनी जोयले।।५।।

***

पद–३६ (राग)

साधो भाई ओ झगड़ो कद तूटे।

कै कोय मीलसी संत सायबका, के सतगुरु गमले उठें।।टेर।।
सांच झूठ मिल करी लड़ाई, लंक लगाया सांसें।
सुमता कुमता फिरे बिचाले, इम करले इम खेचें।।१।।
भारत रच्यो भरम मांहिं भारी, हूं तूं भिड्यो अभागी।
चेतन चोकी न्याय चुकायौ, मार दोयां सिर लागी।।२।।
दोनु पकड़ के किया कबजमें, बारै जांण नहीं पावें।
जनम कैद कीनी कीमत कर, चून चौतरे पावैं।।३।।
आयो संदेसो कह्यो सबनकूं, कोई लड़न नहीं पावों।
वेतो वँध्या आपरे हाथे, मार सिरा थेई खावो।।४।।
इण झगड़ेरो सतगुरु साखी, कै कोई संत सुझाणा।
कहे बनानाथ सुणो भाई साधो, झगड़ा रा किया बखाणा।।५।।

***

पद–३७

साधो भाई हर भज पार उतरणा।
निरख निरख पग धरणा।।टेर।।

डोरी अधर लागी आकासां, गमकर गिगन चढाणा।
नटवो निरत निगे कर निरखे, अगम देश इम लेणा।।१।।
धीरज धाम धारणा गाढी, चहुं दिश चेतन रेणा।
सधर पुरुष जां संसैं नाहीं, माया देख तज देणा।।२।।
सुंन समान सरोवर सांई, ज्यां हूँ तूं नहीं कैणा।
समदृष्टि होय जोवो सकलमें, ठोड़ थिरप नहीं थाणा।।३।।
दृष्टि न पडै मुष्टि न आवै, ऐसा अगम पीयाणा।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, सो पद है निरवाणा।।४।।

***

पद–३८

साधो मेरी सुरत सायबजीसूं लागी,
मो मन भया बैरागी ।।टेर।।
खोज चल्यो खिलकामैं आगे, पंथ चल्यो गुरु पागी।
राय बिना एक रसता चलाई, लार लियो बैरागी ।।१।।
निगै नहीं ज्यां निरखण लागो, कलह कलपना त्यागी।
कर कीमत ओलखिया अन्दर, सबद रूप अणरागी ।।२।।
सुनमैं सनमुख मिल्यो सूरवां, बोलत बोल सवागी।
मिलग्यो माल महोलेमांहीं, कीवी दुरमति आगी ।।३।।
सतगुरु सरणें सहज समाया, सोहं शब्द सरबंगी।
कहैं बनानाथ सुणो भाई साधो, सैन गुरूरी गम जागी ।।४।।

***

पद–३९

साधो समजै संत पियारा।
समज्या संत सरब सुख पावै, मिट गया भरम अंधारा ।।टेर।।
आप अदेख देख सब माया, इमकर रच्या पसारा।
समज्या सो सत सबदां लागा, भ्रम बंध्या जग सारा ।।१।।
शब्दस्वरूपी सबघट व्यापक, किया चेतन उजियाला।
दरस्या देव दसूं दिशपूरण, खुल्या भरमनारा ताला ।।२।।
ब्रह्म भरया भवसागर नाहीं, ज्या नहीं मायाका चाला।
दीसै सोई दरसती नाहीं, आप अदेख उजाला ।।३।।
गुरुपरताप गम कहूं समझ कर, हूं तू मिट्या विकारा।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, अब मेरे आनन्द अपारा ।।४।।

***

पद–४०

ऐसी सैन समझ मन मेरा, समज्यासूं घर पावै रे।
अनंत संत हुआ अरु होसी, सारा समझ सरावै रे।।टेर।।
निगै बिना निंदता औरांकूं, बिन पारख पचहारै रे।
जागे नहीं भूलमैं सूता, भोले जनम गमावै रे।।१।।
जाग्यां विना जुगत नहीं दरसे, विनमैरम मुरडावै रे।
अपने दिलकूं नहीं परमोदे, गैला ज्ञान गुडावै रे।।२।।
जाग्या जिके जुगोजुग जीता, पर सण होय पिव पावै रे।
जैसा होता वैसा भरपाया, बहुरि जनम नहीं आवै रे।।३।।
हर गुरु संत एक कर जाणै, दुतिया दूर गमावै रे।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, वे अमरापुर जावैं रे।।४।।

***

पद–४१

ऐसी अजरजरो मन मेरा, अजर जरयां गम आवै रे।
गम कर ज्ञान अगम घर जावै, अगम अगोचर थावै रे।।टेर।।
उठ परभात सिम्मर सायबकूं परगल प्रेम पिलावै रे।
अपणा उलट आप घर लावै, सिधा सरग सिधावै रे।।१।।
आप मिट्या आपदा छूटी, हरदम हेत लगावै रे।
हिरदे धार सार नाभी सूं, सिधो सुखमण आवै रे।।२।।
सुरत निरत मिल चली महोलैं, मिलकर मंगल गावै रे।
सनमुख सांम रींझायो सईयां, गेरा गिगन घुरावै रे।।३।।
मैं नहीं ज्यां मैं निज थाया, कोई दुतिया न थाया रे।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, सहजोई स्वरग समाया रे।।४।।

***

पद–४२ (राग)

एक हंसा अगमसूं आया, ज्यांरा दरसण बिरलां पाया।।टेर।।
दिल दरियाव भर्‌या भरपूरण, गम कर हंसा आया।

पाव बिना वो बैठा पंछी, महरम मोती पाया ।।१।
मानसरोवर हंसा छाजैं, नहीं बुगलांका दाया ।
वे हंसा सुन सायरवासी, वांरा समता सहज सुखछाया ।।२।
हंसा हरष मिल्या हरमाहीं, भाग भला सर आया ।
पूरण पास आस नहीं वाकै, सहजै सगम समाया ।।३।
पूरण पाय फेर नहीं आया, आदि अस्थल थाया ।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, बेगम वाणी गाया ।।४।
***

पद–४३

मेरा हंसा सहज समाया । सो तो आवागिवण न आया ।।टेर।।
मानसरोवर हंसा जांणै, हंस हंस वह आया ।
वे हंसा महरमका गोती, नहीं बुगलांकूं ठाया ।।१।।
नीर विना जां सरवर भरिया, घाट विना वह न्हाया ।
स्वायंत बूंद निपज्या मोती, वे चुग हंसा खाया ।।२।।
बहुत दिनांका प्यासा हंसा, सुन सायर सुख पाया ।
जुग जुग राज करैं सरवर पर, ज्यां हंसा थिरथाया ।।३।।
हंस हमारा सबद विवेकी, हंसो हंस मिलाया ।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, निरभै नगर वसाया ।।४।।
***

पद–४४

वा घरकी साधो कहूं निसाणी, जाघर मैं हंसा रहता ।
काया छोड़ चलै जब हंसा, जा हंसा हरमैं समाता ।।टेर।।
जब तेरा स्याम रैता सुन व्यापक, बोल वचन कासुं लाता ।
जैसे धृत मही मांहि मिल रह्या, मथियां विना नहीं पाता ।।१।।
पांच तत्त्वका इंड उपाया, ज्यामें भवँर गुंजाता ।
अपनी संका जोवणरे कारण, दूजा रूप धराता ।।२।।

गमकर ज्ञान अगम घर रहता, गम कर वेगम पाता।
धरता विन करता नहिं पावै, पारख विना पिछताता।।३।।
जैसे दरपन लेमुख आगै, निगै करी जद निंदाता।
ऐसी बात कही क्यूंनी पहला, जद हंसा भरमाता।।४।।
जीयाराम मिल्या गुरुपूरा, कर सैन समझाता
बनानाथ निरणै कर निरख्या, सत्य वचन दरसाता।।५।।

***

पद–४५ (राग)

सिंमरो संत सुजाण समझ, कायासिंध मिली।
तेरा अवसर बीता जाय, जागेनी जोगी जुगत वणी।।टेर।।
निरख निरख मेलो पाव, वाट वाकी विषम घणी।
नहीं कायरका काम, सूरा वैहैं सेलअणी।।१।।
सदा ही रहत निरवाण, सहज सुखधाम घणी।
नर जासी निराधार, पूगै सोइ पुरुष धणी।।२।।
नहीं कहणका काम, इचरज बात वणी।
संत समज लो वौ साम, जांण जैसे चंद्रमणी।।३।।
बनानाथ कहैं जाण, शब्दकी एक साख भणी।
मेरे जिया राम गुरु पास, आस नहीं मुगत तणी।।४।।

***

पद–४६

या विध खोजिया निरवाणी। जासूं जनम मरण मिटाणी।।टेर।।
आपा मेट आपमें दरसें, कर प्रेम प्रीति परखाणी।
घट घट रोम रोम मैं व्यापक, सतगुरु सैन लखाणी।।१।।
सुरत शबद सुखमण घर लाया, तारों तार मिलाणी।
नाभी जाय नामकूं निरख्या, अरध उरध सुलजाणी।।२।।
उलटा प्राण पिछम दिश फिरिया, बंकनाल बरसाणी।
मेर इकीसुं छेदगई सुरता, गगनमंडल गरजाणी।।३।।

राग छतीसुं बाजा बाजै, वा निरगुणकी रहाणी।
गुरुपरताप चढ़्या गढ़ बंके, अनहद नाद घुराणी।।४।।
जियाराम मिल्या गुरु पूरा, निगम भोम दरसाणी।
कहै बनानाथ सुनो भाई साधो, अनभौ जोत जगाणी।।५।।

***

पद–४७ (राग)

देखोनी देख देखनमैं, इण रणूकारकी धुनमें।।टेर।।
नाभकँवलसूं नाम चलत है, बंकनाल बहनमें।
सुरत शबदकै ताली लागी, अकल कला आपनमें।।१।।
सुरत निरत मिली चढ़ी सिखर गढ़, निगम भोम निरखनमैं।
अनहद नाद बंसरी बाजैं, झीणी टेर सुननमैं।।२।।
सोवन सिखरमें आप विराजैं, नहीं बो जनम मरणमैं।
झिलमिल झिलमिल जोत जगत है, सोहँ बचन सबनमैं।।३।।
तिरगुण ताप तिमिर नहीं भासैं, रहता लगन मगनमैं।
बनानाथ सोइ पद परस्या, गुरुमुख ज्ञान लखनमैं।।४।।

***

पद–४८ (राग)

साधो भाई देऊ ऊचों चढ़ हेलो।
जोगी जती सती सब सुणज्यौ, कहूं मुक्तिको गेलो।।टेर।।
धर विन अधर माग बिन मारग, विन पग पंथ दुहेलो।
करविन करण काया विन आसण, उनमुन रहत अकेलो।।१।।
जैसे पंछी उड़त आकासां, दीसत है जब उलो।
दृष्टि परे दीसे नहीं पंछी, यूं निरभै पद गहेलो।।२।।
धरणि न गिगन बिना घर आदू, साधू तां समझेलो।
आवा गिवण आवे नहीं कबहूं, पावै मुक्ति महैलो।।३।।
देह विना देव विदेह ब्रह्म व्यापक, ज्यां हर गुरु संतको मेलो।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, मैं ऐसे हुवो ब्रह्म भेलो।।४।।

## पद-४९

साधो भाई अजब संदेसो लाया।
जीव दुखी देख्या संसारा, ता कारण चल आया।।टेर।।
कर विन बाजा बज्या ब्रह्मंडमैं, विन सरवण सुण पाया।
विन पग निरत करै ज्यां निरता, विन जिह्वा गुण गाया।।१।।
रचियो रास वास ब्रह्मंडमैं, संत समज्या चल आया।
आप आपके समज्यां परवाणै, दरशण सदा सवाया।।२।।
बेहद ब्रह्म वसै हद माया, जड़ चेतन की काया।
ताकै परै बसै अविनाशी, सोहम परचै थाया।।३।।
अगम अपारा है निरधारा, निस्पृह रहे निरदाया।
रंग न रूपा सदाई अरूपा, सो सायब सुन छाया।।४।।
मेहर विना मालिक नहीं मिलसी, जो मिले तो संत सरणाया।
कहै बनानाथ वसूं वा घरमें, ज्यां भरम करम नहीं काया।।५।।

***

## पद-५० ( राग)

ऐसी सैन समझ कर भाखी, सुणो संत जिन सोई।
जल डुबै न जलै पावकमें, ऐसा समरथ वोई।।टेर।।
ऐसी मौज भई मन मेरे, सदा परम पद मांई।
रहता पुरुष भऱ्या भरपूरा, विधि निषेध नहीं वांई।।१।।
देवल देव पुजारी नाहीं, ज्यां एकमेकता सांई।
अफुर देस आसण है वाका, निजकूटस्थ गुसांई।।२।।
महिमा अगम अपार ब्रह्मकी, कहाँ लग वरणी जाई।
जो समज्यो सो सैन समाया, अगम निगम कहैं तांई।।३।।
बोल्या बोल अबोल समझकर, धन्य गुरुकी गम आई।
तोल अतोल अमाप अपर बल, बनानाथ दरसाई।।४।।

पद–५१

ऐसी सैन समझ मन मेरा, अवर धरो नहीं काया।
है तेरे पास अमर अविनासी, ज्याकूं काल न खाया।।टेर।।
धर अबंर विन रहे निरधारा, अधर दीप निरदाया।
वसता वास किया विन वसती, विन वसती ले वसाया।।१।।
रहता पुरुष परापर पैला, जांका था ज्यां थाया।
निरभै हंस बसै उण वसती, ज्यां कोई धूप न छाया।।२।।
वाकी महिमा कहां लग वरणूं, ज्यां तिरगुण नहीं माया।
स्वरग नरक सुख दुख नहीं तामे, अवरण आप अजाया।।३।।
आप अथाग थाग नहीं कोई, सतगुरु भेद बताया।
रंग न रूप रेख नहीं खंचै, बनानाथ लख गाया।।४।।

***

पद–५२ (राग–सोरठ)

जगमें करता काल कसाई, जैरी विगत करे दरसाई।।टेर।।
करता करम करै काया मैं, है स्वतंत्र रह जाई।
भिन्न भिन्न कर इंद्रियां रस भोगें, भरम रह्या या मांई।।१।।
जमराणों जोरावर जुड़ियों, फिर फिर करत लड़ाई।
नव द्वार निश्चै कर रोक्या, दसवैं मैं डर नाहीं।।२।।
दसवैं द्वार दरसिया देवा, शोभा वरणि न जाई।
भलहल भाण ऊगो ब्रह्मंडमैं, समरथ कला सदाई।।३।।
भागा भरम भरोसा आया, सतगुरु सैन बताई।
बनानाथ कहैं अलख अकरता, सब घट रहै एक सांई।।४।।

***

पद–५३ ( राग–सोरठ )

साधो भाई करता बड़ो अथिर रे।
सतगुरु सैन समझ कर सारो, रहो अकरता थिर रे।।टेर।।

जमराणै कर जग सब रोक्या, भिन्न भिन्न तार सभर रे।
अपने स्वाद सकल जग डूबा, निस्वादी कोई नर रे।।१।।
साध सोई सत् सिमरण सारैं, रहै सतगुरुको डर रे।
माया रसकूं कबहुँ न मानैं, गम कर पूगा घर रे।।२।।
सहज भौम सतगुरुका वासा, ज्यां फुरता नहीं अफुर रे।
पूरण भाग परमपद पाया, तोड्या काल खुपर रे।।३।।
गुरु जियाराम सरबगत पूरा, समझ स्वरूपी सर रे।
बनानाथ ले भेद वैरागी, जीवन मुकत बिचर रे।।४।।

***

पद–५४

मन तूं बेगमकी गम कर रे।
अगम पंथ ज्यांरा अधर पियांणा, निराधार पग धर रे।।टेर।।
बेगम गम कर किया पसारा, रचिया धरण अंबर रे।
चवदेड़ तबक मायाका चाला, जां लग उपजै मर रे।।१।।
द्वादश जोजन फिरत दुहाई, चेतन खबर कर रे।
शबद दिवाण चढ्यो सिमरण कर, पूगो पुरुष पर रे।।२।।
सहज स्वरूपी सुंन समाया, अमरा भर्‌या सभर रे।
निरख्यो थको निजर नहीं आवै, बून्द रली सरवर रे।।३।।
गैब हुआ जब गम होय चुकी, बेगम सदा सदर रे।
डिगता नहीं अडग रहै आसण, कोई जन लहै कदर रे।।४।।
जीयाराम धिन धिन या जगमें, गुपता प्रगट अक्षर रे।
बनानाथ है ब्रह्म वैरागी, बोल्या बोल निडर रे।।५।।

***

पद–५५ (राग– बसन्त)

होरी खेलूंगी घर आयकै, साधोजी ओ ज्यांमें,
हरष हरष गुण गायकै। होरी खेलूंगी घर आयकै।।टेर।।

पांच सखी मिल कियो महोलो, सज्यो शील सिणगार।
महरम कर मैलातकी, हुई है चलणकूं त्यार ।।१।।
इला पिंगला मिलकर दोनूं, सुखमण कियो निहार।
हरष हरष गुणगायके, वे आई त्रिवेणी द्वार ।।२।।
बाजा बज्या ब्रह्मांडमें सुण सुनको झणकार।
रंग राच्या रमत भई, निरख रह्या संत सार ।।३।।
निरगुण नाथ रिझायो सुरता, निरत कियो निरधार।
रीझ करी राजी भया, दियो मुकतिको द्वार ।।४।।
परम वास वासो भयो, रही सांमकी लार।
बनानाथ खेलै संत सूरा, मेरे ऐसो उपज्यो विचार ।।५।।

***

पद-५६

होरी खेलूंगी पिया पायकै, साधोजी ओ ज्यांमें,
सदा सवागण थायकै। होरी खेलूंगी पिया पायकै ।।टेर।।
पीतम फाग रमें चेतन सूं, मेरी भई जड़ चाल।
होय सनमुख समजी संगपिया कै, नित नित भई मैं निहाल ।।१।।
खेलत फाग पियाकै परसंग, दरसण दिया है दयाल।
भेट दुहाग कीवी मानेतण, अमर पायो वर लाल ।।२।।
मेरे सांमकी शोभा ले वरणू, बहुगुण बोध विशाल।
सुन सायर मैं सहज रमत हैं, पतिवरता भई खुसाल ।।३।।
सरब सुहाग भई मेरी सजनी, रही महोलै माल।
बनानाथ कहे मैं होरी खेलत हौं, ज्यूं संत खेल्या सुध चाल ।।४।।

***

पद-५७

होरी खेलत भया निहाल, साधोजी ओ मोपर,
किरपा करी गुरुदयाल।। होरी खेलत भया निहाल ।।टेर।।

झूठे ख्याल खेल जग भूलो, साच कह्या नहिं जाय।
निरगुण फाग गुणांसूं न्यारो, साधो बेहद खेल खेलाय ।।१।।
च्यारूं दिश निरत करैं वां निरता, पांच पचीसूं पाल।
निराधार आधार खेलमें, चली अधरकी चाल ।।२।।
वेगम वास बस्यो है बेहद, ज्यां परम जोत परकास।
तिरगुण तिमिर मिट्यो मैरमसूं, होय रही निरत निरास ।।३।।
ऐसो फाग रमैं जिन जगमैं, हर गुरु संतके साथ।
बनानाथ कहे मैं होरी खेलत हौं, ज्यां चंद सूर नहीं रात ।।४।।

***

पद–५८

होरी होय रही नगर मंझार, साधोजी ओ ज्यामें,
खेल रच्यो एकसार, होरी होय रही नगर मंझार ।।टेर।।
सुंनमें संत समझकर खेलत, होरी रमत रंगदार।
अनुभौ फाग अगमको खेलत, ओलगो निराधार ।।१।।
सूक्ष्म नगर निगे विन निरख्या, वरसत अमी फुंवार।
पीवत हंस परम सुख पाया, छूटा सबी विकार ।।२।।
अधर अथाय थाय नहीं बाको, वा खेलणकी वार।
भाखत संत परापर पेला, वो तो अगम अपार ।।३।।
ऐसो फाग रमैं बडभागी, जिन सतगुरु दी सार।
बनानाथ कहैं मैं होरी खेलत हौं, जियाराम गुरु धार ।।४।।

***

पद–५९

होरी खेलत संत सिरदार, साधोजी ओ ज्याके,
है हरिको आधार। होरी खेलत संत सिरदार ।।टेर।।
होरी हरख रमें रंग रेलत, संत खेलत इकसार।
खेलत पांच पचीसूं पीछा, जब दरसे करतार ।।१।।

सनमुख संग रमु सायबकै, लगी प्रेम पिचकार।
होय हुसियार हरख कर झेली, भींज्या ब्रहकी धार।।२।।
ज्ञान गुलाल उडै गुरुगमकी, होय रही मतवार।
बारूंई मास रमैं बडभागी, ओ गुरुको उपकार।।३।।
छक रह्या संत अचिंत आनन्दमें, अनुभौ चढी खुमार।
बनानाथ कैहे मैं होरी खेलत हौं, ज्यां अमर लोगकी बार।।४।

***

पद–६० (धमाल)

मेरी सुरत सुहागन खेले ख्याल, सुण सुण मंगल भई निहाल।।टेर।
पांच पचीसूं भई हैं साथ, सब सखिये मिल मंगल गात।
मन मरदंग तन बजत यों ताल, काया नगरमैं रचियो ख्याल।।१।
चित्त चेतनकूं लाग्यो चाव, अखंड जोतको भयो भाव।
निरखत निरता रंग अपार, जनम मरनको मिटियो विकार।।२।
अधर महल जाकी अजब बात, परसत हरि जन सोई अजात।
सुण सुण अनहद वसत वास, सरबणां न सांभली अवर तास।।३।
अधर पुरुष आवै नहिं जाय, कोई बिरला हरिजन लखैं ताय।
अवघट घांटा विषम वाट, बनानाथ ज्यां करत थाट।।४।

***

पद–६१

मेरी सुरत सुहागण पीया पास, पिंड ब्रह्मंड परे वसत वास।।टेर।
अधर पुरुषको अगम राय, विरला हरिजन पंथां जाय।
चंद सूर ज्यां नहीं रजनी प्रकाश, अखंड जोत ज्यांको अधिक उजास।।१।
वेगम वसती ज्यां गमकी हाट, हरहीरनको लाग्यो ठाट।
विन कमज्या नहीं आवत हाथ, सिर साटैं मरजीवा पात।।२।
पीवत मिट गई और भ्रांत, जीव शिवकी एक जात।
ओतपोत है नहीं थाप उथाप, मनमोहन मिल भयो आप।।३।

योई है जोग जुगतकी सार, अनुभौ उकती गैब विचार।
बनानाथ सत कही पिछाण, गुरुमुख ज्ञानी लेसी जाण ।।४।।

***

पद–६२

मोय सतगुरु पायो बड़ो वीर, सुखसागर की पाई सीर ।।टेर।।
सुन सायरको समता नीर, मुकत मोती निपजै हीर।
चेतन हंसा चाल्या चीन, तोल अतोला लेवत बीन ।।१।।
विनमुख हंसा पीवत नीर, परी ब्रह्मसूं भई सीर।
अमोल्या वो चुगत हीर, सतगुरु वचनां पाई धीर ।।२।।
निरभै नगरी हंस अजीत, निरमल अंगा सत परतीत।
जत सत शरधा सहज धीर, अमरलोक की पाई जागीर ।।३।।
हरीराम हर सायब कबीर, जीया राम गुरुमत गंभीर।
बनानाथको चरणमें सीस, सतगुरु तार्‌यो मोहि बिसवाबीस ।।४।।

***

पद–६३

गुण गाइये रे अब गुरुको आज। सतगुरु वचनां सरत काज ।।टेर।।
अमरदेशकी अजरबात, बिना भोम जागीरी पात।
राव रंकको एकी घाट, वां हंसा मेरा करता ठाट ।।१।।
चेतन हंसा करत राज, अनहद नौबत घुरत आवाज।
विन सरवण वां सुणतां वाज, ब्रह्म मिलणको करत काज ।।२।।
निरभै नगरी निगमपाल, नहीं कोई झीवर जमको जाल।
उपज न विणसैं खावत नहीं काल, गिंगन धूंवा ज्यूं मिली झाल ।।३।।
अगमसैंन ये झीणी निराट, संत मरजी वा उण चढिया बाट।
बनानाथ गुरु पकड़्यो हात, मोहन मिलियो सरणै आत ।।४।।

***

पद–६४ (राग– कैरो)

तरवर एक दोय फल लागा, कर महरम चढ़ आगा हो।
सीस विना लेसी संत सूरा, कायर सुण सुण भागा हो।।१।।
कायर जीव काम नहीं आवैं, सो सतवाजी हारा हो।
सिवरण साख नीपजी नाहीं, डूबा भव जल धारा हो।।२।।
सिंवस्यां संत सरब सुख पावै, भरिया मुकत भंडारा हो।
आपतिरै अवराकूं तारै, वे धिन आया संसारा हो।।३।।
तन मन मार तुरत फल लीना कर निर्गुण निरधारा हो।
कहै बनानाथ शब्दको कैरो, ऐसा भेद हमारा हो।।४।।

***

पद–६५

पेड पात बिन तरवर ठाढा, ज्यां मन लागा मेरा हो।
ले गुरुसैंन चढ़्या कीमत कर, ज्यां भव नहीं लीगारा हो।।१।।
भूला जीव जुगत नहीं जाणैं, विन मैरम चढ जावै हो।
अंतसमै पीछा भव माहीं, निरफल जन्म गमावै हो।।२।।
आपा छोड़ चेतन होय चाल्या, गुरु मैरमदरसाया हो।
फूल्या बिरछ बहुत फल लागा, आंब गिगन चढ मोस्या हो।।३।।
वृच्छ विवेक बैठा संत सूरा, शुभफल लेत घणेरा हो।
कहै बनानाथ सुनो भाई साधो, ऐसा कया इक केरा हो।।४।।

***

पद–६६

बिरछा एक पेड़ नहीं वाके, नहीं जड़ी नही डाला हो।
चवदैं लोक छाय रह्या ऊपर, लखसी गुरुका बाला हो।।१।।
सबसुं परैं द्रिष्ट नहीं आवैं, ऐसा वृच्छ अपारा हो।
ज्याकैं मांयँ मुकत फल लागा, सिरसाटैं लो सारा हो।।२।।
सधर पुरुषकुं सतकर जाणो, आपा तजो असारा हो।
पारब्रह्मकूं परस्या चाहो, रहो जगतसूं न्यारा हो।।३।।

भेदी जिके भरम गढ जीता, मिल निरगुण इकसारा हो।
कहैं बनानाथ वृच्छ चढ वाणी, केरा कह्या करारा हो ।।४।।

***

पद–६७

अधर वृच्छ ज्यांकी अटल ओपमा, ज्यां चढसी संत सूरा हो।
पाव पपील टिकै नहीं कबहूँ, देख दूर घर मेरा हो ।।१।।
सिवँरण साज चढ्या शरधासुं, मेर सिखर घर आया हो।
नानाविधका मेवा पाया, अटल वृच्छकी छाया हो ।।२।।
सहज भौम सिमरथका मेला, रहत पुरुषकूं पाया हो।
आवागिवण आवै नहीं कवहुँ, अवर धरै नहीं काया हो ।।३।।
आसण अडग डिगै नहीं कबहुँ, ज्यां निरभैं निज थाया हो।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, वाँ चढ केरा गाया हो ।।४।।

***

पद–६८ ( राग हेली )

हेली सुन सायर मैं झूलिये, ले सतगुरु की सार।।टेर।।
चाल सखी उण देश मैं, ज्यां हंसा बसै अपार।
बोलत बोल सुहावणा, वे मोती चुगत विचार।।१।।
खूंट खूंट हंसा वसै, सुन सायर विसराम।
छीलर जल बैठे नहीं, पाई है वेगम धाम।।२ ।।
हंस हंसोंने सुहावणा, बुग संग बैठे नांय।
बुग छीलर चेजा करै, हंस रहै समदां मांयँ।।३।।
हंस बुगला इक सारसा, गुण कर दीसै दोय
बनानाथ मन ऊजला, हंस कहावै सोय।।४।।

***

पद–६९

हेली मन ममताकूं मारियै, कर कर ब्रह्म विचार।।टेर।।
ब्रह्मभेद विरला लहै, तज भवसागर भाव।

चितकर चाहत चांनणो, तिरै नाम चढ नाव ।।१।।
कैइक चाहत धरमकूं, केइ किरिया खटकरम।
साधू चाहत शबदकूं, जासूं मिटै भरम ।।२।।
शब्द ग्रह्या सोइ पारहै, भ्रम रह्या सो आर।
आतम तत ओलख्यां विना, गया जमारो हार ।।३।।
सतगुरुसूं सनमुख सदा, मेट रहे कुलकाण।
बनानाथ उण संतकूं, कबहुं न आवै हाण ।।४।।

***

पद–७० (राग)

सनमुख सदा सहेलड़ी पीया प्रेम परवाण ।।टेर।।
पांच सखी धुर पंथमें, मिली पचींसूं आण।
अरध उधर आसण किया, कर रही पवन पिछाण ।।१।।
इला गिवण आगे करै, करत पिंगला वैण।
सनमुख सुखमण सांमकूं, निरख रही निज नैण ।।२।।
द्वादश दरश्या देवता, बेहद ऊगा भाण।
उनमुन मुदरा आगली, परसी पद निरवाण ।।३।।
अनहद बाजा बाजिया, सुंन विच घुरया निसाण।
बनानाथ उण ब्रह्मका, कैसा करू बखाण ।।४।।

***

पद–७१

चल सतगुरुजी रे देसमें, कर सनमुख दीदार ।।टेर।।
समज सखी मुख बोलिया, अधर सधर एकसांम।
पाव विना पंथ चालणा, समज्यां सहेली धाम ।।१।।
मैं नहीं ज्यां मैं गया, विनपग वेगमगाम।
नैण विहूंणा निरखिया सुंनसम चेतन साम ।।२।।
नहीं कोई आर न पार है, बेगम ब्रह्म अपार।
गुरुकृपा वा घर वसूं, पाई मुकतरी सार ।।३।।

हर गुरुसूं सनमुख रहो, करो कुबद को नास।
बनानाथ पद परसिया, जीयाराम गुरु पास ।।४।।

***

पद–७२

समज चलो सतलोक मैं, है सायब इकसार ।।टेर।।
स्वरग नरक पातालमें, तीन लोक पर वास।
साचा साधूजन तां वसै, चौथे पद परकास ।।१।।
सोई था सोई भया, अवर न दीसै पास।
आप समाणा आपमैं, भई दुरमती नास ।।२।।
वे संत दीन दयाल हैं, देता वस्तु विचार।
भाग परापत पाईये, मैरम अगम अपार ।।३।।
सात द्वीप नव खंडमें, रहता पुरुष निरास।
बनानाथ पद परसिया, जीयारामगुरु पास ।।४।।

***

पद–७३

समझो सुरत सहेलड़ी, कर चलणेकी चाव ।।टेर।।
चाल सखी उण बाटड़ी, सुन सतगुरु का बैण।
पाँवन टीकै पपील तणा, वां संतनकी रैंण ।।१।।
विषम सी वाटी ब्रह्मकी, पिण्ड ब्रह्मण्ड विन धाम।
सत गुरु विन सूजै नहीं, ऐसा है वेगम गाम ।।२।।
विना नींवका देवरा, विना देहका देव।
विना नैणसूं निरखणा, विन कर करिए सेव ।।३।।
विन बाती दीपक जगै, रवि चंद विन परकास।
बनानाथ निरभै रह्या, अणमूरतकै पास ।।४।।

***

पद–७४

परमानंद परकाशका, आनंद कह्या न जाय ।।टेर।।
विसवै भासै ब्रह्मतैं, ज्यूं वृच्छ तोयतैं होय।
उलटा देख्या तोयमें, ज्यां वृच्छा नहीं कोय ।।१।।
तरवर ज्यूं माया सवै, यामैं तिरगुण जाण।
पाणि ज्यूं चेतन सदा, निरविकार निरवाण ।।२।।
सोहं शुद्ध स्वरूप हैं, जां मायाकी हाण।
वां सपंद निसपंद कहां, यूं कहैं वेद पुराण ।।३।।
चेतन में हूँ तू नहीं, ज्ञेय ज्ञाता नहीं ज्ञान।
बनानाथ निरभेद है, सरवातीत विज्ञान ।।४।।

***

पद–७५

सतगुरु सत समझाविया, सत चित आनंद अपार ।।टेर।।
आसत गही तजी ना सती, लिया सतोगुण सार।
रज तम दोऊ सम किया, प्रगट्या ज्ञान विचार ।।१।।
सत गुणतैं निरगुण लख्या, सो निरगुण सब पार।
वाईतै सब जग चलै, शुभ अशुभ व्यवहार ।।२।।
सबमैं साखी एकसा, ज्यूं नीर बिरछके साथ।
पानीमें लाधे नहीं, बीज वृच्छ अरु पात ।।३।।
शुभ अशुभ गुण तां नहीं, नहीं कोई जीतनहार।
बनानाथ निश्चै लख्या, टूटा विष हँकार ।।४।।

***

पद–७६

नित पूरण अद्वैत मैं, द्वैत न दीसै कोय ।।टेर।।
परमानन्द परमात्मा, सो कैणीमें नाय।
वाकी सत्ता शुध रूपतैं, रची त्रिगुण मनमायँ ।।१।।
उतपति चेतन आसरे, आप निरंतर धाम।

लोह ज्यूं माया चल रही, अचल चुँबक ज्यूं साम ।।२।।
नित केवल न्हारै थकां, घटमैं कला बिचार।
रविकिरण नहीं बीच है, बोध बोधक इकसार ।।३।।
है है कहै सो है नहीं, नहिं नहिं कहैं सो नाय।
बनानाथ वेसूंन हैं, बोल अबोल न तांयँ ।।४।।

***

पद–७७ ( राग– आसावरी )

साधो भाई मैं मेरा मन समझाई। जैसे वृच्छ मूल समाई ।।टेर।।
मन पँछी मायापर पसरयो, उड़कर गिवण कराई।
छल कर जाय पड्यो करमां मैं, जीवबुधी ग्रह लाई ।।१।।
झाल्यो न झलैं रुकै नहीं रमतो, नानाविध समझाई।
निगें करुं जब दीसत न्यारो, ओ मन हाथ न आई ।।२।।
पल में खण्ड परखण्ड फिर आवै, मतों करै जां जाई।
केई केई संत निरमल होय निकल्या, इण मनकी गत आई ।।३।।
जीयाराम मिल्यागुरु पूरा, मन मैरम समझाई।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, अब कछु धोखा नांई ।।४।।

***

पद–७८

अब हम बेगमकी गम जाणी, अगम निगम वाकी कैणी ।।टेर।।
वेगम ख्याल रच्यो एक नटवे, निरता करी हैं निसाणी।
लिवरीवरत लैरसूं चढ़ियो, धर धीरज धुन आणी ।।१।।
लघुता लार सार सिर ऊपर, अकल अखाडे वैणी।
कर ललकार चढ्यो लिव ऊपर, यह सतगुरुकी कैणी ।।२।।
चढ आकाश अडग करि आसण, गहरी गिगनकी वाणी।
अनहद नाद घुरै नित आगै, जोवत सुरता राणी ।।३।।
खेल खेलाय चल्यो घर अपणें, सबकूं कहूं सैनाणी।
कहै बनानाथ सुणौ भाई साधो, अमर जागीरी माणी ।।४।।

पद–७९

साधो भाई ऐसा देश दिवाना।
भेला है पण भिलता नाहीं, गुरुमुख ज्ञानी जाना।।टेर।।
तीरथ करूं न जप तप साजूं, नहीं कोई धरूं ध्याना।
ऐसा होय खलकमांहि खेलूं, नहीं मूरख नहीं स्याना।।१।।
पगविन पथ नैण विन निरखू, विन शरवण सुन वैणां।
घ्राण विना सब लेत सुगंध्यां, विन रसना रस पीणां।।२।।
सहज सरोवर सिमरथ हंसा, पर विना किया पियाणां।
मान सरोवर मोती मुगता, निरमल नीर निवाणा।।३।।
यूं जाण्यां जगदीश जुगतकर, पिंडं विन पुरुष पुराणा।
बनानाथ कहें ब्रह्म सकलमें, घट बध कहो क्यूं कैणा।।४।।

***

पद–८०

साधो भाई ज्ञान घटा झुक आया।
भरम करम व्यापै नहीं कबहुं, गुरुसे गुरु गम लाया।।टेर।।
बादल बीज विना नित बरसै, स्वाति बूंद झड़ लाया।
धरण गिगन विन अमृत भरिया, सो रस गूंगे पाया।।१।।
पींवत प्राण परम सुख पाया, जरा मरण नहीं आया।
अमर देशमें आसण कीया अटल वृच्छ की छाया।।२।।
अटल अभंगी सबका संगी, नहीं सरबंगकूं जाया।
अविगत अलख खलख मांहि दरसै, गुरुमुख ज्ञानीं पाया।।३।।
झिगमिग दीप जुगतमें दरसैं, सतगुरु मोय समझाया।
कहैं बनानाथ ब्रह्मकी वातां, भेद विना भय खाया।।४।।

***

पद–८१

साधो भाई अविगत भेद हमारा।
सबसूं सांम निरंतर निरख्या, नित निरगुण निराकरा।।टेर।।

तीन लोक जम जाल पसारां, चवदै लोक सूं न्यारा।
हंसा चोंच पांख विना देख्या, जाणै जाणनहारा।।१।।
होय चेतन चल्या बेहदकुं, पिंड ब्रह्मंडकै पारा।
सुरत निरतकी लगी चिरागां, दरस्या देव अपारा।।२।।
सायब एक सकलमैं व्यापक, जड चेतन एकसारा।
करसोजी परस्यावो प्रीतम, धोखा नहीं लिगारा।।३।।
गुरु किरपासूं आगम सूंझै, गुरुमुख लेइ बिचारा।
बनानाथ अनुभौ कही वाणी, प्रेममगन मतवारा।।४।।

***

पद–८२

साधो भाई बेहद ब्रह्म विचारा।
रहता आप सकलमैं सांई, परसै हरिजन प्यारा।।टेर।।
शब्द स्पर्श रूपरस गंधा, चित मन बुध हंकारा।
यामैं भर्मे सो जीव कहावैं, अगम अखंडी न्यारा।।१।।
बेहद आप ताप नहि तिरगुण, निरगुण ब्रह्म अपारा।
हिलै चलै झिलकै छीजै नाहीं, सोई पुरुष इकसारा।।२।।
वाका भेद कहणमे नाहीं, सो कहेणीकैं बारा।
सदा अकरता कबहुँ न करता, ऐसा आतम प्यारा।।३।।
जीयाराम गुरु सैन बताई, सो सोजी सब पारा।
बनानाथ निश्चैकर जांणी, भागा भरम अंधारा।।४।।

***

पद–८३

साधो अविगत लख्यो न जाई।
जे लखसी कोई संत सूरमा, नूरमैं नूर समाई।।टेर।।
जैसे चंद उदक मांई दरसैं, यूं सायब सब मांई।
दे चश्मा घट भीतर देख्या, नूर निरन्तर वांइ।।१।।
दूरतैं दूर उरैं तैं उरेरा हर ह्रिदारे मांई।

सुपने नार गमायो बालक, जाग पडी जब वांई ।।२।।
जागत जोत जगी घट भीतर, जां देखूं जां सांई ।
ऊगत भाण बीत गई रजनी, हर हम अंतर नांई ।।३।।
ममता मेटि मिल्यो मोहनसुं, गुरुसैं गुरुगम पाई ।
कहे बनानाथ सुणो भाई साधो, अब कछु धोका नांई ।।४।।

***

पद–८४

साधो अकथ कथी नहीं जाई ।
जे कोई बाद वदैं सोई भोंदू, ज्यां गुरुगम नहीं पाई ।।टेर।।
जैसे विहंग वहैं गिगना मैं, धर पर ग्रह्योन जाई ।
छाया देख करो छल बहुता, आप आकाश रवाई ।।१।।
जैसे चंद उदकमें दरसै, सों ग्रहणीमें नांई ।
डावाडोल करौं मन बहुता, चंद निरंतर बांई ।।२।।
शुभ अशुभ वस्तु घट भरिया, है नभ सबकै मांई ।
उत्तम अधम छोत नहीं लागै, नभ निरलेप सदाई ।।३।।
ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप ब्रह्म है, क्या जाणै जगताई ।
भेदाभेद रहित निरंतर, बनानाथ मत गाई ।।४।।

***

पद–८५

साधो भाई सतगुरु सैन बताई ।
पिंड ब्रह्मंडमें खेल खेलके, अमर जागीरी पाई ।।टेर
धरता कूं करता कर पकड्या, आप बँध्या उणमांई ।
निरबंधण निरगुण निरधारा, संत समझिया वांई ।।१
समज्या संत सरब बिध जांणां, परगट भेद बताई ।
अकल कला ओलख्यो अविनासी, आवागिवण न आई ।।२
आवागिवण मिटी मिल अविगत, सोहै सबर सदाई ।
समता सहज मिल्यो सरबंगी, हंस रह्या थिर थाई ।।३

जीयाराम मिल्यागुरु पूरा, निरभै धाम बताई।
बनानाथ अधर किया आसण, कबहूं काल न खाई।।४।।

***

पद-८६

साधो भाई धरता अधरमें लाया।
सतगुरुजीरी सैन समझ कर, आदि धाम बसाया।।टेर।।
सात सुंन सिम्रतकी चौकी, सत सुन सुख छाया।
ज्यां आपो आप दूसरा नाहीं, गमकर बेगम पाया।।१।।
सेतु सुंन फुली सबीयन मैं, आर पार एकराया।
चेतन पुरुष चलै नहीं कबहुं, निरभै रहत अचाया।।२।।
निरगुण नाम साम सुखदाई, अविगत अमर अजाया।
ज्यां देखूं ज्यां समर भरिया, समज्या संत समाया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, सूक्ष्म भेद बताया।
बनानाथ समझ सतवायक, ब्रह्म लख्या निरदाया।।४।।

***

पद-८७

साधो भाई दोयाका उनमाना
कोण देशको सिमरथ कहिये, ताहि समुझ करो ज्ञाना।।टेर।।
चेतन चरित करे चहुं दिशमें, धर मायाका बाना।
वा घरकी कहें पारख बतावो, ज्यां नहीं शबद नहीं सैना।।१।।
धोके ध्यान धरे सब साधू, कर दूजा दुःख माना।
पारख विना पड़्या परपंचमें, वा घर नहीं आऐना।।२।।
चेतन होतां अचेतन क्यूं रहें, मैं ता कारण धरूं ध्याना।
कहे सब एक दूजा क्यूं दरसै, मोय कहा लगावत ताना।।३।।
सांसा मेट स्वतंतर समझो, सो आदि असथाना।
अभरा नहीं सभर सत सायब, बनानाथ कहै ज्ञाना।।४।।

***

पद–८८

साधो भाई अगम सनेसो लाया।
वा घरमें नित अमी झरत है, संत उहां सुख पाया।।टेर।।
मेर इकीस मंडप नहीं माया, नहीं कोई जाप जपाया।
किरिया करम कलेस न लागें, वो रवैं अधर अजाया।।१।।
मौजी मौज करे मैरममें, मगन रहत हद आया।
जैसे अनड़ आकाश वसत हैं, धरण पाव नहीं लाया।।२।।
गैबी गरज रह्या गिगनामें, सुंनमें रहत समाया।
आर अरु पार अपार आनन्दमैं, मुकत महोलो पाया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, कर मैरम समझाया।
कहें बनानाथ विगत करलीजो, पद निरबाणी गाया।।४।।

***

पद–८९

साधो भाई इच्छा जीव बताया।
इच्छा विना आप निज नामी, यो प्रश्न उत्तर गाया।।टेर।।
कहांसैं जीव–उत्पना कहियैं, कहां करत हैं कामा।
कौण तरेसूं तिरकर निकसैं, कहां जाय लहैं विसरामा।।१।
इच्छा जीव ब्रह्म सूं उतपति, किया काया कमठाणा।
सतगुरु मिल्यां सूजी वा घरकी, उलटा किया पियाणा।।२।
अवघट घाटां लांगिया सबहीं, ज्यांका था ज्यां आया।
आदि घर अस्थान अमरपुर, संत समझ थिर थाया।।३।
जीयाराम मिल्या गुरुपूरा, दिया ज्ञान निरवाणी।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, सो जाणी सोई जाणी।।४।

***

पद–९०

साधो भाई सिमरण करो सवाया।
समझ्यां बिना सायब नहीं मिलसी, यूंई भवजल दुखपाया।।टेर

का कारण तुम चलकर आया, का कारण धरी काया।
का कारण तुम ध्यान धरत हो, कहां तुम रहो समाया।।१।।
इच्छा कारण चलकर आया, उतपति कारण काया।
सिमरण करूं समजरे कारण, सुंनमें रहूं समाया।।२।।
कौन सुंन तेरी उतपति कहिये, कौण सुंन वहै आया।
कौण सुन तेरा सहज समाया, कौण सुंन घर पाया।।३।।
जड़ सुंनमें उतपति कहिये, सुंन चेतन वहै आया।
बेगम सुंनमें सहज समाया, अफुर सुंन रहूं भाया।।४।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, कर निरणें दरसाया।
कहे बनानाथ सुणो भाई साधो, प्रश्न उत्तर गाया।।५।।

***

पद-९१

साधो भाई एक अचम्भो लाया,
जोवो जुगत करे कर जोगी, मडै कालकूं खाया।।टेर।।
तीन लोक कालकी रैणी, चित चौथे घर लाया।
फुरता अफुर भया बेहद पर, ज्यां नहीं मनका दाया।।१।।
पाँच पचीस नहीं ज्यां माया, गुण इंद्री नहीं काया।
कलह कलपनासु रहित निरंतर, तां तुरिये तत थाया।।२।।
ज्यां जोऊं चेतनकी चौकी, नहीं अचेतन माया।
निरमल नूर दसूं दिश दरसें, ज्यां घर हंस रवाया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, सो निकलंक दरसाया।
कहैं बनानाथ सुणो भाई साधो, ज्यां नहीं कालकी छाया।।४।।

***

पद-९२ ( पद वेदांत। राग- आसावरी )

साधो भाई केणी परे रवाई।
कैण अकैण दोऊं दिखलावैं आप रहै निरदाई।।टेर।।
वेद कतेब पुराण अरु गीता, खोज खोज थक जाई।

वोतो नूर निरंतर कहियै, लिखण भखण मैं नाई ।।१।।
आप अपार पार नहीं वाको, इच्छा अनंत दिखाई।
भाव अभाव अशुभ शुभ दोनूं, मायामें बरताई ।।२।।
माया आदि अनादी कलपत, ज्यूं मृग तृष्णा झांई।
आप सदा माया विन थाया, नहीं कलपना काई ।।३।।
अगम निगम वाणीको द्रष्टा, शुधस्वरूप सुखदाई।
बनानाथ चेतन ब्रह्म सोहैं, आप अवाण अचाई ।।४।।

***

पद–९३

साधो भाई आतम ज्ञान सोइ ज्ञाना।
चेतनकूं चेतनकी सूझै, चेतनकी जाणे म्याना ।।टेर।।
दिष्ट रु मुष्ट दृश्य में नाहीं, आतम अचल अभेवा।
दृष्ट अदृश्य वाहूंते भासै, भाव अभाव नगेवा ।।१।।
दृश्यादृश्य अदृश्य तिहूंगुण, वणै अरु मिट जाई।
आतम वामैं वणे न विखरे, लय विक्षेप नहीं काई ।।२।।
माया दृश्य अनित्यअसारा, नित चेतन सत थाई।
यह निश्चा निरबंधण कहिये, कर निरणै दरसाई ।।३।।
रज्जुमैं सरप दरार तरू जड़, भेद दृष्टि कर थाई।
बनानाथ भाण उदे अनुभौ, जब रज्जुकी रज्जु पाई ।।४।।

***

पद–९४

साधो भाई आतम ज्ञान बताया।
आतम ज्ञानी लखै आतमा, स्वपरकासी थाया ।।टेर।।
नहीं कोई अजपाजाप सिमरणा, नहीं तिरगुण मन माया।
अपणा आप उलटकर देख्या, ज्यूंका त्यूं दरसाया ।।१।।
जैसे रवि सकल परकासी, किरिया अनंत देखाया।
सबी देखाय आप रहे न्यारा, यह चेतन निरदाया ।।२।।

आतम अगम अगोचर सांई, वहीं आपोई आप रवाया।
देश काल वस्तु नहीं ज्यामैं, कोई गया न आया।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, आतमज्ञान दिखाया।
बनानाथ अनुभौ परकास्या, भेदाभाव मिटाया।।४।।

***

पद–९५

साधो भाई सत विवेक दरसाया।
यह निश्चा निरबंधन कहिये, संत शासतर गाया।।टेर।।
तीन लोक चेतनका चिलका, ज्यूं रवि जल दरसाया।
अपना स्वरूप रहे आकाशां, भूला जल भरमाया।।१।।
तुरिये आप तिमिर नहीं भासै, रजनी है सो माया।
ऐसी महर करी मोपै गुरु, दे दरपण दिखलाया।।२।।
पर ब्रह्म भरिया भर पूरण, ऊरण कबहुं न भाया।
खंडत नहीं अखंड अविनाशी ज्यां तिहुँ काल बिलाया।।३।।
काल अकाल भाव नहीं जामें, शुभ स्वरूप सुखदाया।
कहे बनानाथ अलोगत सोजी, गुरुमुख ज्ञानी पाया।।४।।

***

पद–९६

साधो भाई धरूं ध्यान अब कैसा।
किसकूं भजूं तजूं अब किसकूं, मँड्या अचम्भा ऐसा।।टेर।।
सुंन सायर की आशा छूटी, चित मन भया उदासा।
सुरत निरत हेरकर हारी, थकत भया घर पासा।।१।।
आपा उलट अरु पड्या आपमैं, ज्यूं काष्ठ अगन प्रवेशा।
काष्ठ जली अगन भई परगट, फेर बड़ै सोई वैसा।।२।।
निरगुण माय थकत भया सर्गुण, नहीं कोई सेस असेसा।
ज्यां दुई थकत अकथ अविनाशी, नित जैसाका तैसा।।३।।

एको एक रह्या भरपूरा, अनुभौ भया हुलासा।
कहें बनानाथ सुणो भाई साधो, कृत अकृत न लेसा।।४।।

***

पद–९७

साधो भाई आतम अचल अनासी।
मायामांय लिपे नहीं नभ ज्यूं, चेतन स्वतै प्रकासी।।टेर।।
इचरज खेल कहूं वा घरकी, गुरु मिलियां गमपासी।
धरता नहीं अधर वो आतम, आपोई आप रवासी।।१।।
अगम अगोचर निरभे कहिये, सो पद है अविनासी।
हरख रु शोक वियोग न जोगी, नहीं आवे नहीं जासी।।२।।
अगम निगम वाको पार न पावे, कर परपंच थक जासी।
सूक्ष्म रूप सदा भर पूरण, वोघर बिरला पासी।।३।।
वो तो दिष्ठ मुष्ठ नहीं आवे, ज्यूं गूंगो सेंन चलासी।
बनानाथ गुरुगम कहे साखी, जाण हमारी ऐसी।।४।।

***

पद–९८

साधो भाई सत निश्चै कर हेरा।
ब्रह्म मिल्यां विन भरम न भागे, समझावत गुरु मेरा।।टेर।।
तीन लोक रोक्या जमद्वारा, सकल कामना घेस्या।
चित मन बुध हंकार अलूज्या, उलट हंस नहीं फेस्या।।१।।
पांच विसैकूं त्याग परेरा, रहो अंते करणसूं दूरा।
आर पार चेतन जब दरसै, ज्यां कोऊ पहुँचे सूरा।।२।।
आसण अधर सधर वो मूरत, अनिरवाच्य निरभैरा।
सोभा कहूं समझ नहीं पूगे, थकत भया मन मेरा।।३।।
आवागिवण आवे नहीं कबहूं, किया रहत घर डेरा।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, अबके मुझरा मेरा।।४।।

***

पद-९९

साधो भाई आतम अचल अभेसा ।
जिन जाण्या जिन या विध भाख्या, फेर कहे को कैसा ।।टेर।।
वां तो चन्द सूर नहीं भासें, नहीं रजनी परकाशा ।
वाकी महिमा कही न जावैं, असंख भाण नहीं ऐसा ।।१।।
परम पुरुष पारख कर परख्या, प्रगट कहूं हे जैसा ।
स्वयं प्रकाश सदा एक सारा, वां कोई भरम न रैसा ।।२।।
परब्रह्म भरीया भर पूरा, नहीं सिखर नहीं नीचा ।
अपोई आप दूसरा नाहीं, नहीं आगा नहीं पीछा ।।३।।
जैसा था जैसा दरसाया, अनिरवाच्य निरलेसा ।
कहे बनानाथ सुणौ भाई साधो, अगम निगम कहै ऐसा ।।४।।

***

पद-१००

साधो भाई मेरा ज्ञान अथाया ।
सुरतीं अरु सिमरती दोनूं, योई सिद्धांत बताया ।।टेर।।
धर नहीं गिगन अज्ञान न ज्ञाना, नहीं कोई सैन समाया ।
किरिया करम लगै नहीं कैणी, वो ज्यूं का त्यूं थाया ।।१।।
निराकार निरगुण निरआसै, सगुण सुतै देखाया ।
ता सगुणमें भाव तिहूंविध, उतपत्ति थिती लय भाया ।।२।।
चेतन द्रष्टा सब मायाकौ, सबमें रहत अचाया ।
सब दिखलाय लिपें नहीं किसमें, नित चेतन निरदाया ।।३।।
आतम सत असत अन आतम, यहै दोऊ भाव बताया ।
माया आदि अंत मध कलपत, आतम सत रैवाया ।।४।।
अपणी जाण आपही जांणै, बिधि निषेध नहिं पाया ।
बनानाथ सत चेतन आनंद, निरविशेष निरमाया ।।५।।

***

पद–१०१

साधो भाई यहै निज ज्ञान हमारा।
ध्याता ध्येय ध्यानमें नाहीं, जांणै जाणनहारा।।टेर।।
अगम निगम वाणी नहीं खाणी, नही आकार निराकारा।
आपोई आप अनादी केवल, हुआ न कोउ होवणहारा।।१।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाहीं, नहीं तिरगुण विसतारा।
चवदै लोक वहां कछु नाहीं, ना कोई विषे हंकारा।।२।।
वो तो लय विक्षेपता नाहीं, नहीं कोई सार असारा।
नहीं कोई भूला नहीं समजणा, नित चेतन निरधारा।।३।।
निरालंब निरभे निरवाणी, हूँ तूँ नहीं विकारा।
बनानाथ सनातन आतम, सुध अद्वैत अपारा।।४।।

***

पद–१०२ ( राग– आसावरी )

साधो भाई कहां लग कहैं बनाई।
चेतन शुद्ध स्वरूप सदाई, जामें भूल न कोई।।टेर।।
जाग्रत मिट्यां सुपन जब दरसै, सुपन सुखोपत माँहीं।
तीनों परे तुरीया तत कहिये, ज्यांकोई दूजा नाहीं।।१।।
जाग्रतमें सब जीव बराबर, सुपन मनोरथ पाई।
जाग्रत सुपन दोउ लीन सुखोपति, तूरीये जांणत ताई।।२।।
सो है आदि अंत मध पेला, तीनूं भाव दिखाई।
सबमें सांमसरोवर दरसें, वे बराबर तिनमांई।।३।।
जो कहिये सोई भाव आपणा, विना भाव कछु नाहीं।
बनानाथ सोई परम प्रकाशी, मेरा भाव मुजमाहीं।।४।।

***

पद–१०३

साधो भाई ऐसीअदल हलाई।
नीर खीर ज्यूं किया निबेडा, यो हंस विवेक बताई।।टेर।।

जाग्रत जीव पचे सब जगमें, इन्द्रयां करत कमाई।
सब रस चाख करे मन मुतलब, आखिर भवदुख पाई।।१।।
सुपन सुभाव वरते जाग्रतयो, संकलप डोर हलाई।
जाग्रत आन खडी सुपना मैं, बरतत सुख दुख माहीं।।२।।
जाग्रत सुपन कलपना थाकी, सुखोपतिके मांहिं।
हरष शोक दुख सुख तां नाई, अप्रकाश रेवांई।।३।।
तुरिये तेज भयो तिहुँ इनमैं, स्वप्रकाश सदाई।
आर पार दीदार वोई है, नहीं आवै नहीं जाई।।४।।
चारूं अवस्था चीनकर जावै, जद हंसा फल पाई।
बनानाथ हैं अवस्था उलंघत, द्रष्टा आप रहवाई।।५।।

***

पद–१०४

साधो भाई है कौई हरीजन शूरा।
जाग्रत सुपन सुखोपति तुरिया, भेद लहैं जन पूरा।।टेर।।
जाग्रत झबका जो ये जगतको, रजोगुण हंकारा।
दृगस्थान वैखरी वाणी, विस्वै जीव विचारा।।१।।
सुपन अवस्था सुख दुख वरतैं, रहत सतोगुण आसा।
कंठस्थान मध्यमा वाणी, तेजस जीव विलासा।।२।।
अप्रमाण सुखोपति कहिये, गुण तमोगुण धारा।
हिरदै स्थान पश्यंती वाणी, प्राज्ञ जीव अधारा।।३।।
वाणी परा स्थान मुरधनी तुरिये ब्रह्म अपारा।
तिहूँ अवस्था भेद न तामें, शिवस्वरूप इकसारा।।४।।
अवस्था चार बताई हैं ज्यूं, योई है केवल ज्ञाना।
अवस्था परे बनानाथ चेतन, जाणे सबका म्याना।।५।।

***

पद–१०५

साधो भाई मेरी जाण अथाई।
वायक अवायक दोइतें न्यारा, कहणी लगे न काई।।टेर।।
पनरे तत जाग्रत अस्थूला, नवतत सुपन कहाई।
सुखोपति समान अविद्या, ज्यां जाग्रत सुपन बिलाई।।१।।
जाग्रतमें जागे नहीं चेतन, सुपने नहीं भरमाणा।
सुखोपतिमें कबहूं न भूला, नित चेतन निरवाणा।।२।।
जाग्रत सुपन सुखोपति मांई, रहै चेतन इकराया।
वरते सो वैसा सम जाणै, सो तुरीये निरदाया।।३।।
है ज्यूंका त्यूं योही निबेडा, यामें भेद न काई।
बनानाथ सारांको द्रष्टा, अवस्था अतीत रवाई।।४।।

***

पद–१०६

साधो भाई धोके मुकती मानी।
पिंड ब्रह्मंडके अंतर बाहर, सो हमतैं नहीं छानी।।टेर।।
कोई कहै मुकती विष्णु धर्मते, सगुण भगती बखानी।
जीव बँध्या शुभ अशुभ करममैं, यह सब कही भुलानी।।१।।
कोई कहै मुकती नाभिकमलमें, अरध ऊरध ठहरानी।
आठ पोहोर स्वासामें पचणा, ऐसी क्या दुखदैनी।।२।।
कोई कहे मुकती गिगन मंडल मैं, अनहद घुरत निशानी।
पिंजर छूटा हंस बिछूटा, जब कहा करो रहानी।।३।।
सब माहिं व्यापक सदा निरंतर, ज्यां नाम रूप नहिं बानी।
बनानाथ चेतनके माहीं, बंध मुकतकी हानी।।४।।

***

पद–१०७ (राग– कानड़ा)

चेतन सब परकाश करें री, घटमायँ नभ ज्यू नायँ कलेरी।।टे
पिंड ब्रह्मंड परे पुरस भारी, सो चेतन बिखरे न बणैरी।

उण चेतनसूं कुदरत सारी, सब घटमांही कला पसारी ।।१।।
ज्यूं शशि दीसै जलके मंझारी, सबमें आप न लिपै लिगारी।
सतगुरु सैन समझकर सारी, सब घटमांयँ ब्रह्म लिया विचारी ।।२।।
पूरण ब्रह्म उरे न परे री, कारण लिंग स्थुल नहीं हैं री।
नहीं वो बिछड्या नायँ मिलै री, अगम निगम कहणी न लगै री ।।३।।
जीयाराम गुरु निज निरभै री, सचिदानंद आनन्द अखै री।
सोई बनानाथ हैं द्रंष्टा री, पलट्या न पलटे सदा इकसारी ।।४।।

***

पद–१०८ (राग– कानड़ा)

कारण सूक्ष्म स्थूल परे सोजी। यह निज ज्ञान आतम अनुभोजी ।।टेर।।
सूक्ष्म स्थूल कारण कर दोई, रसतैं खांड खिलूणा ज्यूं होई।
मिठास आरपार एकसारा, यूं चेतन परकाशणहारा ।।१।।
खांड खिलूणा रस हो जावैं, मीठामें तीनूं नहीं पावैं।
यूं चेतनमैं उतपति नहीं लैता, आप सदा निरबंधण रैता ।।२।।
सदा एकसा सिमरथ वोई, ज्यां कछु वायक लगै न कोई।
तुरीये अतीत अनादि अकरता, जांको भेद अभेद न करता ।।३।।
लख अलख भाव तां नाहीं, नहीं कोई बाहर नहीं कोई माहीं।
बनानाथ अनंत अविनाशी, अपोई आप स्वतः परकाशी ।।४।।

***

पद–१०९

सत चेतन आनंद गुसांई, असत रू जड़ कलेश ज्यां नांई ।।टेर।।
पावक रहे पाहनकै माहीं, विन चकमक परकासै नाहीं।
अन आतम मांई आतम देवा, विना ज्ञान पावो नहीं भेवा ।।१।।
अनुभौ ज्ञान उदै भया वोई, शम दम लिया साधना सोई।
मेरा स्वरूप सोहं निरआसै निजानंद निरमल परकासै ।।२।।
सब घटमाहिं वो चेतन प्यारा, रहै सब मायँ सबीतैं न्यारा।
आप अघटता घटे नहीं कोई, निरालेप निरबंधण सोई ।।३।।

नहीं वो उरै परै अरु नीचा, नहीं कोई नैण खुला अरु मीचा ।
वचन उचार कहैं अब कांई, गूंगेकी गम गूंगे मांई ।।४।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं लागैं, नहीं कछु संगरे नहीं कछु त्यागै ।
बनानाथ निर्भय निज थाया, आपोई आप और नहीं पाया ।।५।।

***

पद–११०

अगम अगोचर अकथ कहांणी ।
वेद वचन अनुभौ तैं जांणी ।।टेर।।
कारण सूक्ष्म स्थूल तुरीयांतैं, वृच्छा बीजपात ज्यूं तोयतैं ।
तुरीये ब्रह्म तिहूंतैं न्यारा, सारा खेल देखावणहारा ।।१।।
बिछडे मिले बणैं मिट जावै, यह मायाका भाव कहावे ।
द्वैताद्वैत अद्वैत विलासा, भिन भिन कर मायामैं भासा ।।२।।
माया असत मृगजल झांई, नित चेतन ज्यूंका त्यूं सांई ।
वृच्छ अरु बीज नहीं तोयमाहीं, यूं माया चेतन में नाहीं ।।३।।
आप अखै अगाध अजाया, भेद अभेद लगे नहीं दाया ।
बनानाथ चेतन निर्वाणी, आपोई आप अवरकी हाणी ।।४।।

***

पद–१११

चेतन जाण भूल दिखलावै । जाण भूलमें कबहु न आवे ।।टेर।।
आप अकलते सकल पसारा, धर अम्बर वणियाँ आकारा ।
रची भूल सोई भूल दिखावे, आप भूल माहिं भूल न जावे ।।१।।
चेतन आप सकल परकासै, चेतन माहिं और नहीं भासै ।
मोरमुराद तां नहीं पावै, रहता सोई सकल दिखलावै ।।२।।
रज्जुमायँ सरप भय आनी, यूंमाया भूल अनहोती मानी ।
रज्जुदृष्टमैं भूल न कोई, दृष्टा केवल रज्जु शुध सोई ।।३।।
ऐसी सेन लखे संत कोई, और आपमें हुआ न होई ।
बनानाथ आतम है सोई, अगम निगम साखा कहै दोई ।।४।।

पद–११२

शुद्ध स्वरूपका निश्चय योई। आतम ज्ञान उदै जिन जोई ।।टेर।।
सुखोपति कारण है सबका, जाग्रत सुपन ताहीते झबका।
च्यार खांण चौरासी जाती, ज्यामैं भूल रची बहुभांती ।।१।।
कारणमें वण वण मिट जावै, ख्याली खेलमें गया न आवैं।
हाण विरघमैं करै न प्रीती, तुरीये चेतन सदा सुचेती ।।२।।
है है में वो हाथ न आवै, नहीं नहीं सु रहैं निरदावैं।
हैं नाहींकैं मध अनुभोई, निरमल चेतन दृष्टा सोई ।।३।।
कारण कारज नाश भई माया, अज आतम अविनाशी राया।
बनानाथ ये जांण प्रमाणी, शुद्धस्वरूप आप निरवाणी ।।४।।

***

पद–११३

यह केवल निसचा है हमारा, हमही निरालंब निरधारा ।।टेर।।
मेरी सता कारण उपजाया, जाग्रत सुपन पसारा थाया।
सृष्टि अनंत अनंत अवतारा, एक पलक मांहीं रचिया सारा ।।१।।
सबी खेल ख्याली तैं हुवा, आप रहत पड़दामें जूवा।
उण ख्यालीतें सब विसतारा, कर बाजी बाजीगर न्यारा ।।२।।
सुक्षम स्थूल सृष्टि यह दोई, कारण मैं लाधै नहीं कोई।
ये तिहूँ हैं नहीं मृगजल सारा, आतम चेतन परखण हारा ।।३।।
विधि निषेध दोउ भरम बताया, मोमें विधि निषेध नहिं पाया।
बनानाथ सोई अलख अपारा, हम अरु जाण सदा इकसारा ।।४।।

***

पद–११४

मेरी जाण सदा निरदावै, आदि अन्त मध तिहूं देखावै ।।टेर।।
मेरी सताकर सकल पसारा, नानाविध शुभ अशुभ व्यौहारा।
सबमाहिं सता परकासै ऐसें, सरवांमें रवि भासे जैसे ।।१।।

सरवा अनंत रवि एक सोई, अनन्त एकमैं है नहीं कोई।
मैं चेतन मो मैं नहीं माया, बोध बोधक सोई एक रवाया ।।२।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय परहरीया, मेरेकूं कोऊ लगै न किरीया।
नित निरमल निरलेप स्वरूपा, अगम निगम थकि कहत अनूपा ।।३।।
जाणी जाण देखाई ऐसी, ज्यांमैं बंध मुकती कहो कैसी।
बनानाथ योई अनुभौ हमारा, हाण लाभ कोउ नाहिं विकारा ।।४।।

***

पद–११५

ख्याली खेल दिखावणहारा, रहता आप अकरता न्यारा ।।टेर।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, पांच तत्त्वकर खेल रचाया।
यामैं सृष्टि अनंत दिखलावैं, सबते ख्याली रहै निरदावै ।।१।।
त्यागी आश्रम वरण व्यौहारा, यहतिहूं खिलका माही आकारा।
प्रवृत्ती और निवृत्ती मानी, सबी भाव खिलकैमैं जानी ।।२।।
बाजी झूठ बाजीगर सांचा, सबही देखावै आगा पाछा।
ख्यालीमैं खिलका नहीं कोई, आप रहत ज्यूंका त्यूं सोई ।।३।।
पुतली पिंपि तार विचारा, बाजी नाम रूप जड़ सारा।
चेतनकूं जड़ कहा पिछाणै, बनानाथ बाजीगर जाणै ।।४।।

***

पद–११६ ( राग– आसावरी )

साधो भाई इच्छा च्यार बताई।
है ज्यूं का त्यूं किया निवेड़ा, रती बांक नहीं काई ।।टेर।।
इच्छा जीव दोड़ आसा लग, आरतमें अलुझाई।
नली नाल ज्यूं भटकत रीता, मिथ्या जन्म गमाई ।।१।।
शुभ इच्छा सो वैहं सुध मारग, अपणा खोज विचारैं।
निरगुण गहैं गुण तीनूं त्यागै, सो सब काज सुधारैं ।।२।।
पर इच्छा परमारथ मानें, आप सवारथ मेंटैं।
पोखै जीव ज्ञान दे पूरा, से सत साहब भेटैं ।।३।।

अनइच्छा सोई ब्रह्मस्वरूपी, सरवज्ञ सकल पसारा।
पाप पुन्य दुख सुख नहीं दर्शे, नहीं कोई जीतन हारा।।४।।
द्वैत अद्वैत अकरता करता, इच्छा मायँ विलासा।
बनानाथ इच्छा परै चेतन, आपोई आप निरासा।।५।।

***

पद–११७

साधो भाई गुणा अतीत अविनासी।
आवै नहीं जावै वणै नहीं बिखरै, निरमल स्वत: प्रकाशी।।टेर।।
ब्रह्म सदा निरबंधन कहिये, नहीं कोई इष्ट उपासी।
धरम करमका करता नाहीं, है अक्रिय अविनाशी।।१।।
अक्रिय सोई आप स्वरूपी, क्रिया मायापासी।
मायाकर दुरमतमें देखैं, जां लग आसी जासी।।२।।
तीनगुणांका सकल पसारा, उतपति थिति विणासी।
तिरगुणमैं निरगुण निरबंधण, रहता आप अनासी।।३।।
आप अखण्ड खण्ड सब माया, कर निरणै कहै दाखी।
बनानाथ ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म है, अगम निगम यूं भाखी।।४।।

***

पद–११८ ( राग )

दोख परै ख्याली दोख परै, दोख दिखाय नहीं दोख गिरै।।टेर।।
करता होय करी जग बाजी, सो मिसरतमैं आण मिलै।
तम प्रकाश दोख आव्रणतैं, प्राज्ञ नामां जीव जलै।।१।।
सँकलप पांच बिसैं होतांई, चित मन बुद्धि अहंतामैं करै।
तेजस जीव विछेप दोखते, सबी फोरणा होय उरै।।२।।
इन्द्र्यामैं सब रच्या मनोरथ, शुभ अशुभ दोऊ करम गहै।
बिसवै जीव दोख मल रैता, आप विसर आपो होय रहै।।३।।
ख्याली दोख देखाय खबरकी, सो सत असत विचार करै।
सत सोई आप असत जड माया, तिउं पडदोऊं परकाश परैं।।४।।

आदि अरु अंत मध्य नहीं वाको, लगे नहीं ज्ञाता ज्ञान गहैं।
सब मिट जाय सेस रहै वोई, बनानाथ सोई जांण रहैं।।५।।

***

पद–११९ ( राग– गूजरी )

लख चेतनता रहो जी, मनवा लख चेतनता रहो जी।
आपणा रूप ओर होय भूला, कर रया हूंजी हूंजी।।टेर।।
आप सुतैं इच्छा कर दूजी, रची भूलता बाजी।
जाग्रत सुपन सुखोपति तिहुं गुण, एक एक मांई राजी।।१।।
विसवे तैजस प्राज्ञ पखैतां, कर तुरीयातैं सोजी।
आदि अंत मध्य एक आतमा, मेट दीनां हूं तूं जी।।२।।
आतम अखै अमर अविनासी, ज्यां नहीं एक नहीं दो जी।
येही ज्ञान निर्भेद जाणकर, कहै दाखी निरभोजी।।३।।
जीयाराम गुरु मेहर करी सई, खोज बताया खोजी।
बनानाथ स्वरूप पिछाण्यां, नहीं कल्पना कोजी।।४।।

***

पद–१२०

चेतन सब इच्छामैं खेल देखाया।
आप रहैं इच्छासूं न्यारा, इच्छामैं नहींआया।।टेर।।
मेरी सता कर फोरी फोरणा, इच्छाई इंड उपाया।
इंडा फोड़ रच्या धर अंबर,चवदेई लोक थपाया।।१।।
सातुई तबक इलाकै आस, सातुई गिगन ठहराया।
या माहीं जीवजात बहुभांती, नानाविध भरमाया।।२।।
ख्याली खेल देखाय पलकमैं, मेट दीबी सब माया।
फूटा कुंभ नभ रहत अचल यूं, बोधस्वरूप निरदाया।।३।।
पांच तत्त्वकी नहीं मेरी काया, नहीं कोई जननी जाया।
आदि अरु अंत मध्य नहीं मेरे, सतचित आनंद अजाया।।४।।

फुरण अफुरण भाव नहीं मोमें, विधि निषेध न पाया।
बनानाथ नित है ज्यूंका त्यूं, जाणी जाण रवाया ।।५।।

***

पद-१२१

साधो भाई ज्ञान अज्ञान बताई।
बाहर मुख फुरणा अज्ञाना, ज्ञान अंतरमुख आई ।।टेर।।
अपणा रूप आपही भूला, मायाकर भरमाई।
मुकुरमायँ दूजा मुख दरसै, तज्या असल गही झांई ।।१।।
जीव नाम मायाकर मान्या, भेद अनन्तां थाई।
नानारूप भावना नाना, कलप रह्या या मांई ।।२।।
अपणी माया आप बंधाणा, जाण रही नहीं काई।
अपणा आप उलटकर देखै, तबी भूल मिट जाई ।।३।।
अनुभौ ज्ञान जग्या उर अंदर, सत विवेक ठहराई।
अपणा स्वरूप सदा शुध केवल, माया अनित्य जताई ।।४।।
भूलमाँय घटिया नहीं चेतन, जाण्यां बध्या न राई।
बनानाथ जांच चेतनकी, भूल अरु जाण बताई ।।५।।

***

पद-१२२

साधो भाई आतमज्ञानी जोई।
यही ज्ञान निरभे निरअंतर, केणी लगे न कोई ।।टेर।।
नभमें अभ्र उपाधि पवनकी, बणै मिटैं फिर होई।
चित कलपी आतममांई, रचनाअन होती है योई ।।१।।
अनहोतै अनहोती मानी, ज्यूं सुपनी सुपनां जोई।
जाग्या पीछैं सुपन कहां सुपनी, यूं बोधरूप निरभोई ।।२।।
बोधरूप आतम नित चेतन, अज अद्वैत अलोई।
कारज कारण नहीं आतममें, होत अनहोत न दोई ।।३।।
करण अकरण दोऊ तैं न्यारा, नहीं कोई संग बिछोई।

बनानाथ अनामी आतम, निरमल द्रष्टा सोई ।।४।।

***

पद–१२३

साधो भाई यह निरणा सुख दाई।

चिदजड़ ग्रन्थी कटी कलपना, शुद्ध आतम दरसाई ।।टेर।।
तम प्रकाश आसरै नभकै, नित आवै नित जाई।
नभ निरलेप सदा इकसारा, श्याम श्वेत नहीं काई ।।१।।
रवि ज्यूं सूक्ष्म परकासा, थूल रात समथाई।
चेतन नभज्यूं रहत निरन्तर, नहीं आवै नहीं जाई ।।२।।
दरपणके बाहिर मुख थूला, अन्तर सूक्ष्म देखाई।
दरपण ज्यूं चेतनके मांई, सूक्ष्म थूल न पाई ।।३।।
सूक्ष्म स्थूल जड़ चेतनमाया, ज्ञान अज्ञान या मांई।
बनानाथ अप्रमेय सोई आतम, ज्यां नहीं माया झांई ।।४।।

***

पद–१२४

साधो भाई नहीं अन्दर नहीं बारा।

अन्दर बार दोऊंको जाणै, ऐसा चेतन प्यारा ।।टेर।।
बीज वृच्छ पात फल फैला, नीर बृछसूं न्यारा।
यूं आतम निरबंधण कहिये, नित निरमल निराकारा ।।१।।
आदि पुरुषकी इच्छा शकती, बहुविध किया पसारा।
नाना भांति भावना मांडी, जुदा जुदा आकारा ।।२।।
चेतन साखी सकल सृष्टिमैं, व्यापक निरहंकारा।
पाप पुण्य सुख दुखसूं न्यारा, सबकूं जाणनहारा ।।३।।
इच्छा आदि पसारा सबही, इन्द्रजाल विसतारा।
इच्छा झूंठ सत आतम तत, यह विवेक ततसारा ।।४।।
विधि निषेध भाव इच्छाका, इच्छा अलप असारा।
बनानाथ सत चेतन आनंद, सोई स्वरूप हमारा ।।५।।

पद–१२५

साधो भाई आतम अखै अनासी ।
अपणी जाण आपही जाणैं, अनुभौ स्वतै प्रकासी ।।टेर।।
सिमरथ सदा काल है चेतन, ज्यामैं इच्छा नांई ।
खंडत नहीं रूप राई भर, द्वैत अद्वैत न तांई ।।१।।
तिरगुण जाण देखई रचना, सब इच्छाके मांई ।
जड़में नाम रूप बहु भांती, आप निरंतर सांई ।।२।।
रवितैं सकल जगतका कामा, वरतत भाव अनेका ।
यूं चेतन सारांको द्रष्टा, नितन्यारा निरभैका ।।३।।
माया अनित्य असार अनादी, ज्यूंतरु जर सरप दरारा ।
रज्जु ज्यूं सत आतम सांई, नहीं मायागुण लिगारा ।।४।।
है हैं यों कहणी नहीं लागैं, नहीं नहीं कांहां पावैं ।
बनानाथ सतचेतन आनंद, अपोई आप रहावैं ।।५।।

***

पद–१२६

साधो भाई सतगुरु खेल रचाया ।
दावाकर दुनिया दिखलावै, आप रहे निरदाया ।।टेर।।
धरम करम करता होय कीया, पलमें जग दरसाया ।
चुंबक आकर्षण तैं लोहा, हिलता रहे यूंई माया ।।१।।
अनंत खेल एकण ख्याली तैं, भांत भांत करवाया ।
रविप्रकाश जगतका कामा, करमां जोग हलाया ।।२।।
सुख दुख मांहि रहे एकसारा, सिमरथ सदा अचाया ।
पापपुण्य मैं लिपैं न कबहूं, सो गीतामें गाया ।।३।।
पटपुतरीमें तार अलोगत, यूं मोहि गुरु दरसाया ।
बनानाथ कहैं जीयाराम गुरु, रहैं सबमैं निरदाया ।।४।।

***

पद–१२७

साधो भाई प्रगट वचन पुकारूं।

असली जीव आरत कर आवे, तुरत उनीकूं तारूं।।टेर।।
नेम धर्म संसार भावना, नहीं जप तप धुन धारूं।
अकल कलामें अहनिश आसण, सहजेई समरण सारूं।।१।।
हदमें माया जाल पसारा, बेहद ब्रह्म विचारूं।
दोई मेट दीदार दिखाऊं, या विधि हंस उबारूं।।२।।
बेहद ब्रह्म सदा निर बंधन, माया हद विसारूं।
सोई स्वरूप हमारा कहिये, छेद्या भरम विकारूं।।३।।
अंतर मेट मिले कोई हमसूं तुरंत करूं भव पारूं।
बनानाथ परमारथ कारण, लिया संत अवतारूं।।४।।

***

पद–१२८ (राग–रेखता)

समझ गुरुज्ञानकी बातां, मिटी तिहु तिमरदी रातां।।टेर।।
इसकदी दूर है घाटी, बहे विना पाव विषम बाटी।
दया गुरुदेवदी भारी, खुली सतधामदी बारी।।१।।
धरण जल पावक पवन नभ कायँ, रवि चंद ब्रह्मंडा ज्यां नांय।
शबद एक गैबमें घुरंदा, महोलै सांमदे मिलंदा।।२।।
मिल्या निरवाण बांण नाहीं, सदा सतरूप एक सांई।
अगम अरु निगम कहत बांणी, सोई हम निश्चै कर जांणी।।३।।
समझ संत सैनकूं पावे, अगम असथानकूं जावै।
फेर भवसिंधु नहीं आवै, विगत बनानाथ यूं गावै।।४।।

***

पद–१२९

ऐसी विधि जगत बाग फूला, ज्यांमैं जाय वनमाली भूला।।टेर।।
रच्या जिन जगत बाग भारी, न्यारा वो चेतन वनमाली।
वृच्छके फल सुख दुख लागैं, जैसा वो बीज होता आगैं।।१।।

सूक्ष्म अरु थूल बाग सोभा, हुआ यहै कारण मैं ऊभा।
सूकै अरु फेर होय हरिया, यही वनमालीकी किरिया।।२।।
कारण जैसी होवैकिरिया, कारज जैसा ज्यांका सरिया।
लियाफल शुभ अशुभ इंच्छया, जैसी वन मालीकी बंछया।।३।।
माली वन जोय रूप अपना, बाग जग होय मिट्या सुपना।
भ्रमना रही नहीं कोई, कहै बनानाथ जाण आई।।४।।

***

पद–१३०

ऐसी गुरु सैन दीवी हमकूं, देख्या जब ब्रह्मरूप सबकूं।।टेर।।
सुणो एकसैन कहूं आगी, असत सत खोज लिया पागी।
माया अरु ब्रह्म दोऊं देखा, ताका सब संत सुणो लेखा।।१।।
आवरण बादल ज्यूं माया, रवि ज्यूं चेतन छिपाया।
माया घन विचार वायु मेट्या, रवि ज्यूं शुध चेतन भेट्या।।२।।
रवि ज्यूं चेतन नित थाया, माया घन निजरे नहीं आया।
देवल अरु देव नहीं पूजा, आप निज पूरण नहीं दूजा।।३।।
दिवी गुरु जियाराम लखता, निरखिया निरगुण निरपखता।
अकथ कथणीमें नहीं आता, सोई बनानाथ जांण रैता।।४।।

***

पद–१३१

तत्त्वमसि अरथको ज्ञाता, वेद ता सिमरथकूं गाता।।टेर।।
अकरता आतम अविनासी, अखै अद्वैत एक रासी।
दिखावै इच्छामें सृष्टि, आदि अरु अंत मध्य त्रिपुटी।।१।।
जीव अरु ईश ब्रह्म सोई, माया मांई भेद तिहूं होई।
नून विशेष समाना, अज्ञान अरु ज्ञान विज्ञाना।।२।।
रैण ज्यूं इच्छा है माया, रवि ज्यूं सच्चिदानन्द थाया।
रविमैं रजनी कहां पावै, आतम यूं नित रहैं निरदावैं।।३।।

आतम चेतन प्रकासी, बोध शिवरूप सुख रासी।
सोई बनानाथ निरवाणी, आन सब मायाकी हाणी।।४।।

***

पद–१३२ ( राग– सोरठा )

फकीरी महा सूरनकी सूर।
विसै भाव तज्या हंकारा, करी कलपना दूर।।टेर।।
तज हंकारा सबी मोह ममता, हुआ जगतसूं दूर।
फिकर फकीर तज्या तन मनका, ले वैंराग्य करूर।।१।।
राजभोग इन्द्रादि लेकै, सबकूं जांण्यां कूर।
कण वस्तु इनमैं नहीं कोई, तज्या फकरलख डूर।।२।।
नव निधि सिद्धि चौवीस फकरके, हाजिर खड़ी हजूर।
फकर तजी झूठीकर इनकूं, परस्यासत चित नूर।।३।।
जीयाराम मिल्यागुरु पूरा, दिया ज्ञान निज मूर।
बनानाथ निरख्या निज नैणां, जाल्या विषै अंकूर।।४।।

***

पद–१३३

फकीरी रहत निचिंत सुदेश।
देखण सुनन कहणसूं न्यारा, चेतन फकर हमेस।।टेर।।
सतगुरु मेहर करी मुझ सेती, दिया ज्ञान उपदेश।
सोई ज्ञान श्रद्धा कर लिया, तजिया देश विदेश।।१।।
जो जो रूप बंधैं सोई थूला, उरै अरु परै मधेस।
चौदै लोक इकीसूं ब्रह्मंड, यह सब सगुण देस।।२।।
रंग रूप नहीं आकारा, पकड छोड़ नहीं धेस।
अप्रमाण अरु सुंन समाना, निरगुण कहिये विदेस।।३।।
देस विदेस भावयह दोनूं, मान्या मन हमेस।
तीक्षण खड्ग ज्ञानका ग्येही कर, मास्या मन नरेस।।४।।

द्वैत भाव होता मन करके, सो मन रह्या न लेस।
जीयाराम गुरु केवल चेतन,बनानाथ सोई सेस।।५।।

***

पद–१३४

फकीरी निश्चल पद अग्याद।
सोई लख्या ज्याकूं लगै न वाणी, निगम कैतयूं अनाद।।टेर।।
निस दिन फकर निरत कर निरख्या, निज आतम लिया सार।
आतम सोई रहत परिपूरण, आपोई आप अपार।।१।।
सूक्षम रूप परम परकासी, ज्यां नहीं थाप उथाप।
रेता अगम अगोचर अविगत, नहीं तिरगुण त्रय ताप।।२।।
उण सिमरथकै एक रोमतै, ब्रह्मंड रच्या अनेक।
ता ब्रह्मंडमैं भाव किया नाना, सबी दैखावै देख।।३।।
बाहर भीतर सधर पुरुष हैं, ज्यूं घटमठ आकास।
माया घट मठ भेद न ज्यामैं, नभ ज्यूं ब्रह्म थिरवास।।४।।
बुद्धि न जान सकै आतमको, मनको थकत उचार।
कथ कथ गिरा थकत भइ बाणी, कोऊ ले सकै न पार।।५।।
भाव अभाव नहीं आतममैं, नहीं उनमेष निमेष।
बनानाथ आतम ज्यूंका त्यूं, नहीं कोई भेख अभेख।।६।।

***

पद–१३५

फकीरी यह निज परमविवेक।
कोऊ केसकै न आपकामैरम, जांणत आप अलेख।।टेर।।
अनुभौ सदर फकर का आशय,ज्यां नहीं आन उपाद।
सो निज आप आतम अविनाशी, रहता पुरुष अनाद।।१।।
ज्याकूं लगै न भाव अकरता, तां करताकां पात।
अकरण करण भेद नहीं ज्यामैं, को कोऊ लखैं लखात।।२।।

एक अनेक बचन क्या वरणै, येवे बंधे न ज्ञात।
सो अज्ञात वेद कहे नेती, वचनां अतीत रहात।।३।।
निकट न दूर गुपत नहीं प्रकट, नहीं को वांण अवांण।
बनानाथ है सो है सोई, येई सनातन जांण।।४।।

***

पद–१३६

फकीरी ब्रह्मज्ञान सोई ज्ञान।
और ज्ञान माया मांई नाना, जिनकूं मिथ्या जान।।टेर।।
नहीं कोई सांच झूठ वां नांही, वो आदी पुरुष अदेश।
इच्छा कर बहु भारव देखावे, आप निरंतर वेश।।१।।
माया सब चेतन के आसै, उपजै मिटै हमेस।
चुम्बक अचल चलै सोई लोहा, युं जड़ चेतन देस।।२।।
चेतन अखै सबी खै माया, यह निज कहिए विवेक।
आप सदा है ज्यूंका त्यूं ही, ज्यां नहीं माया रेख।।३।।
प्रमाण अप्रमाण नहीं ज्यां माया, नहीं कोई एक अनेक।
बनानाथ सोई है निज चेतन, नहीं कोई भेख अभेख।।४।।

***

पद–१३७

फकीरी केवल ब्रह्म विचार।
सत असतका किया निबेड़ा, तजी असत सतधार।।टेर।।
जाग्रत सुपन सुखो पति कहिये, यह तीनूं गुण देख।
उतपति स्थिति लय तिरगुणमैं, तुरीये जाण अदेख।।१।।
नहीं उतपति परलामें आवै, तुरीये ब्रह्म सुदेस।
सब दिखलाय आप रहै न्यारा, नित निकलंक निरलेस।।२।।
जाग्रत सुपन सुखोपति माया, ये जड़ असत कलेस।
तुरीये सत चित आनंद अखण्डी, तां नहीं तिरगुण लेस।।३।।

तुरीये अतीत सोई है तुरीये, साखी प्रेरक एक।
बनानाथ सोई शुद्ध चेतन, नहीं कोई लेख अलेख ।।४।।

***

पद-१३८

बंगला सोवन सिखरकै बीच, जामैं बाजा बाजैं छतीस ।।टेर।।
इस बंगलेकी सधर नीव है, थिन सतगुरु दीनी सीख।
जाग्रत सुपन सुखोपति समजो, पोलां तीन तैकीक ।।१।।
इस बंगलामैं अखंड जोत है, नहीं ऊष्ण नहीं शीत।
क्रोड भानु रोमकी शोभा, वा तुरीये तत्त्व अजीत ।।२।।
इस बंगलामैं आप विराज्या, अधर दलीचा बीच।
समरथ सांम सबीका मालिक, महा भीचनका भीच ।।३।।
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, जद भेट्या जगदीश।
बनानाथ विगत कर भाखी, लख्या संत सोई ईस ।।४।।

***

पद-१३९

जागने मैं जोयो रै सिमरथ सत सबली।
जाणै नहीं देउँला रे, ज्यांसूं आवागिवण टली ।।टेर।।
प्रेम पियाला सतगुरु पाया, पीवत पारख पड़ी।
अजब झरोखै आप विराजै, निरखै निरत खड़ी।
तांती म्हारी लागी रे, तनड़ामें ताररली ।।१।।
अणी अगर पर अधर दलीचा, ज्यूं झलकत चंद्रमणी।
दवादस ऊपर दरस्यो दिवाना, सोहं मांझो सांम धणी।
बालो मोय लागै रे, ज्यासूं म्हारी सुरत मिली ।।२।।
गिगना गाजै अनहद बाजे, छत्तीसूं साज सुरी।
वेगम वाणी बिरलां जाणी, जीत निसाण घुरी।
धोका नाहीं रे, लाधी मोय मोक्ष गली ।।३।।

पूरण पाया सुंन समाया, एकोई एक हरी।
बनानाथ गम जांणी जुगत कर, भरमांरी भींत गिरी।
दरसण पाया रे, झिलमिल जोत जली।।४।।

***

पद–१४०

अज अविनासीरे, सचिदानंद अखरे।
नितही प्रापत रे, नहीं वो जन्मै मरे।।टेर।।
अरथ धरम अरु काम मुकतफल, स्वरग नरक विस्तार।
आतम सबी भावतैं न्यारा, खेल खेलावण हार।
आप निरबंधण रै, नहीं कछु त्यागै न संगरे।।१।।
जैसे नभ व्यापक घट मठमें, निरालेप एकसार।
यूं चेतन सारांको द्रष्टा, निकलंक थया अपार।
सिमरथ ऐसा रे, सुतै प्रकाश करै।।२।।
आतमको परमाण न आवै, अप्रमेय निराकार।
वां न प्रमाण प्रमाता न प्रमेय, नहीं हलका नहीं भार।
कह्या नहीं जावै रे, अगम निगम करे।।३।।
ज्यां कोई ज्ञान ज्ञेय नहीं ज्ञाता, नहीं ज्यां साधन लिगार।
निज स्वरूप अगाध अनादी, अद्वय चेतनसार।
बनानाथ सोई रे, निरभै नित अगिरे।।४।।

***

पद–१४१

निज तत्त्व ऐसा रे, परतक जाण्यां सई।
लागै नहीं क्रिया रे, नित निरवाण रई।।टेर।।
आतम ज्ञान खुल्या निज चसमा, हैं ज्यूं किया निरधार।
करता करम नहीं आतममैं, अक्रिय इकसार।
पार नहीं वाको रे, ज्ञानीजन सार लई।।१।।

देखण कहण सुणन सब माया, है मनको विस्तार।
भावाभाव अभाव तिहूं विध, येमैं कलपणहार।
आतम द्रष्टा रे, यामैं कछू लिपत नहीं ।।२।।
मन माया आतममांहिं झूठी, ज्यूं नभमैं नील असार।
मिथ्या तजी सत किया संगरै, वैदा नहीं लिगार।
आतम परचै रे, दुरमत दूर भई ।।३।।
येही ज्ञान कहिये तत सारा, जाणैं संत विचार।
बनानाथ अनुभौकी सोजी, परगट कही पुकार।
जाण आसाची रे, अगम अरु निगम कई ।।४।।

***

पद–१४२

आप सत जाण्यां रे, निकलंक निरभोई।
निरगुण सोजी रे अनुभौ ज्ञान योई ।।टेर।।
आप अनामी नाम सूं न्यारा, उनसैं भया सब नाम।
पुरुष प्रकृति तिरगुण पंचतत, ठाया यह ठामो ठाम।
इनमैं रचना रे, विधि बहु भांत होई ।।१।।
कारण माया कारज विसवै, है वाकै आधार।
कारण कारज जड़ है दोनूं, वोई चेतावणहार।
सबको द्रष्टा रे, अकरता अलख सोई ।।२।।
सब घटमैं चेतन परकाशी, ज्यूं सरवां माई सूर।
रहै सबमांयँ लिपै नहीं किसमें, सो नित केवल नूर।
निरंतर थाया रे, शुभाशुभ नहीं ज्यां दोई ।।३।।
गुणा अतीत त्याग नहीं संग रे, नहीं हलका नहीं भार।
बनानाथ आतम हैं सोई, नहीं कारण कारज लिगार।
आप निरवाणी रे, लगै नहीं वाण कोई ।।४।।

***

पद–१४३

सिमरथ सोई रे, ज्यामैं कछु दूजा नांई।
दूजा कहां पावैं रे, बंझ्या पुत्र देख्या कांई।।टेर।।
आतम ख्याली ख्याल देखाया, इंद्रजाल आकार।
जो दीसै सो है सब माया, आप देखावणहार।
निरंतर थाया रे, द्रष्टा आप सई।।१।।
आगैई हुतो अब है सोई, रेसी तिहूं कालामैं एक सार।
भूत भविष्यत वरतमानमैं, चेतन लिपता नहीं लिगार।
अनादि आतम रे, ज्यां तिहूं काल नई।।२।।
आतम चेतन स्वतै प्रकासी, नित निरगुण निराकार।
ज्यांमैं ध्यान ध्येय नहीं ध्याता, अव्यय आप अपार।
पार नहीं आवैं रे, अगम निगम कथके रई।।३।।
हेती नेती भाव न ज्यामें, नहीं कोई जीतनहार।
बनानाथ सोई स्वरूप हमारा, नहीं कोई दिरस विकार।
सूज आ म्हारी रे, नित निरभेद सई।।४।।

***

पद–१४४

रवी ज्यूं चेतन रे, स्वतै परकाश कीया।
रजनी माया रे, नहीं कोई तिमिर तीयां।।टेर।।
अधिष्ठान चेतनकै मांई, मन कलपत विसतार।
चवदै लोक इकीसूं ब्रह्मंड, इनमें भेद अपार।
शुभाशुभ वरतै रे, सुख अरु दुख ईयां।।१।।
नित चेतन निरवांण अचाइ, बो सबमैं निरभेद।
जल डूबै न जलै पावकमैं, ससतर सकै न छेद।
भेदै नहीं कोई रे, उतपति परलै हूयां।।२।।
चेतनमैं मनमाया नाहीं, नहीं विधि निषेध उपाद।
अनिर्वाच आप निज चेतन, नहीं वाको अन्त न आद।

मध्य नहीं कोई रे, रहैं सही जाण लीया ।।३।।
नहीं कोई करता नहीं कोई अकरता, ज्ञान अज्ञान न कोय।
बनानाथ शुद्ध स्वरूप हमारा, नहीं एक नहीं दोय।
अनुभौ योंई रे, लख्या सब सन्त ईंयां ।।४।।

***

पद–१४५

भूमिका सातूं रे, है ज्यूं निरणैं किया।
ज्ञान निज योई रे, वेद सन्त साख दीया ।।टेर।।
शुभ इच्छा अरु शुभ विचारणा, तनुमानसा तीन।
स्थूल शरीर अवस्था जाग्रत, लखै संत परवीन।
शुद्ध स्वरूप परसै रे, मनको प्रतिहार कीयां ।।१।।
सत्त्वापती भूमिका चौथी, सुपन अवस्था जान।
आतम जग दोऊँ दरस्या भलीविध, अनुभौ उदै भयां।
ज्ञान लहर जग जाण्या रे, आतम नीर थयां ।।२।।
सुखोपती अवस्था कहिये, ज्यां छूटा तन अभिमान।
असंग संगति भूमिका पंचमी, शुद्ध स्वरूपी जान।
संगकर रहित रे, निरभै पद लीया ।।३।।
नाम रूप पदारथ सबकी, बुद्धि मायैं पिछाण।
छठी भूमिकी तुरिये चेतन, ज्यां बुध पदांरथ हाण।
भाण ज्यूं चेतन रे, तिमिर नहीं लेस तीयां ।।४।।
तुरिये अतीत भूमिका सप्तमी, चेतन शुद्ध स्वरूप।
भाव अभाव नहीं ज्यां मांई, सोई बनानाथ अनूप।
भूमिका कैसी रे, द्रष्टा आप जीयां ।।५।।

***

पद–१४६

जथारथ जाण्यां रे, खोजी खोज कीयां।
है ज्यूं भाखी रे, कही सब संत ईयां ।।टेर।।

श्रवण सबै संतनकी शाखा, सुण कर किया विचार।
निरगुण सगुण भाव अनादी, यह श्रवणकी सार।
प्रेमकूं परसै रे, हरी रस हेत लीयां ।।१।।
मनण जथारथ मान वचनकूं, सत मिथ्या ली सार।
निरगुण अखैं सबी सगुणखै, सो मन लीना धार।
सार सतगुरुकी रे, जोई जुगत ईयां ।।२।।
निदिध्यासन काष्ठ ज्यूं माया, मथणी किया अभ्यास।
काष्ठ जली अगन भई परगट, यूं चेतन परकास।
रवी ज्यूं थाया रे, नहीं कोई तिमिर तीयां ।।३।।
साक्षात्कार सदा शुध केवल, ज्यूं कंचन परकार।
भूषण नाम नहीं तां मांही, विनमाया ब्रह्म अपार।
पार वाको रे, है ज्यूं जांण रीयां ।।४।।
श्रवण मनन निदिध्यासन करकै, साक्षात् किया है विचार।
बनानाथ द्रष्टा है सबको, सबकूं जाणनहार।
भेद नहीं कोई रे, अपणा आप जीया ।।५।।

***

पद–१४७ ( राग )

वचन सत सांभलो सई रे, साधो नित निरगुण निराकार ।।टेर।।
स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक ये, रह्या भूलकूं धार।
असत जडमैं कलपत सबही, कर रया संत पुकार ।।१।।
वेदसंतकी साख समझ कर, निज आतम लिया सार।
ता आतमके सबी आसरै, सबकूं प्रेरणहार ।।२।।
सकल सृष्टिमें आप अचाई, लोचन अनंत विचार।
सत चित्त आनंद आप एकसा, ज्यामैं नहीं संसार ।।३।।
आगम निगम वाणी नहीं लागै, ज्यां सब थकत उचार।
बनानाथ मैरम कैं मांई, लख रया अलख अपार ।।४।।

***

पद-१४८ ( पद सिद्धान्त का -राग )

वाक्य ये सिद्धान्तका सई रे, साधो सुरती करत पुकार ।।टेर।।
आर पार वाको नहीं आवै, सो है अगम अपार।
आदि अन्त मध्य तीनूं वामैं, पावै नहीं लिगार ।।१।।
सो आतमकी पलमैं सृष्टि, हुए मिटै केई वार।
आप अचल सबहीको द्रष्टा, साखी जाणनहार ।।२।।
कारण मिट्यां कारज कहां पावै, यह वह सबी असार।
है ज्या मैं वायक नहीं लागै, यही जाण निराधार ।।३।।
एकरु दोय अनेक न वामैं, नहीं हलका नहीं भार।
बनानाथ कोऊ ज्ञात न बंधै, येही हमारी सार ।।४।।

***

पद-१४९ ( राग )

साधो भाई सबको द्रष्टा सांईं।
चारूं भाव सत्ता दिखलावै, आप सत्ता हुई नांईं।।टेर।।
निरालेप निरगुण आदि तां, उतपति बिसवै नांई।
कंचन मैं आभूषण इच्छा, प्रागभाव ओलखाई।।१।।
वस्तु एक अनंत घट वातैं, गुण किरिया जुई जुई।
लोह एक अनंत भया ससतर, भाव अन्यो अन्य हुई।।२।।
सूक्षम स्थूल लीन कारणमें, जो ज्यातैं हुआ जांई।
बुदबुदा फेन तरंग जलमई, यूं भाव प्रध्वंसा मांई।।३।।
उतपति थिती लय नहीं तामैं, सो तुरीये दरसाई।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं लागै, भाव अत्यन्त कहाई।।४।।
भाव अभाव सदाकलपत यूंई, ज्यूं मृगतृसना झांई।
आप सदा है ज्यूंका त्यूंई, भाव अभाव न कांई।।५।।
कहिबो चेतन सुनबो चेतन, दर्से चेतन सोई।
बनानाथ जाणै सोई चेतन, चेतन विनां न कोई।।६।।

***

पद–१५०

साधो भाई शुद्धस्वरूप अपारा,
मन बुद्धी बाणी नहीं पहुँचै, आपही जाणनहारा ।।टेर।।
जाग्रत सुपन सुखोपति तुरिया, धरी अवस्था चारूं ।
सबमैं सहज निरंतर वासा, रवि ज्यूं कला पसारूं ।।१।।
जाग्रत सुपन सुषोपति तीनू, तुरीये करके थाया ।
ज्यूं अवनीकै मध्य सुमेरू, रजनी वाकी छाया ।।२।।
रजनी माय भेद दोय हूआ, न्यून विशेष ही ठाना ।
तारा न्यून विशेष चन्द्रमा, रजनी मांय समाना ।।३।।
जाग्रत जाण न्यून तारां सम, चन्द ज्यूं सुपन विशेषा ।
सुषोपति रजनी ज्यूं कहिये, अपरकाश हमेसा ।।४।।
न्यून विशेष समान तिहूं विध, यह चित मानी सारी ।
तुरीये चित्त सुमेरू ज्यूंई, तिरगुणका हंकारी ।।५।।
चित्त हंकार सुमेरू जाणिये, जिन तिहुं भेद दिखाया ।
नित चेतन परकाश रवी ज्यूं, चित सुमेरू नहीं माया ।।६।।
अवस्था अतीत सदा निरबंधण, नहीं अवस्थाकाई ।
बनानाथ आपकी निश्चै, कर निरणै दरसाई ।।७।।

***

पद–१५१ (राग)

यह केवल सिद्धांत हमारा, कहै वेदान्त संत जन सारा ।।टेर।।
मैं हूं अगम अगोचर राया, आदि अंत मध्य नहीं मेरे काया ।
पाहनतैं पुतरी कहा न्यारी, मेरी सत्ताकर सृष्टि सारी ।।१।।
पुतरी नाम कहणका होई, पाहनमें पुतरी नहीं कोई ।
यूं आतममें जग नहीं पावै, आतम अचल गया नहीं आवै ।।२।।
हुई मिटी सोई माया निसाणी, जैसे मृगतृष्णाका पाणी ।
कलपत भाव अभाव कहाया, हम द्रष्टा कोउ गया न आया ।।३।।

मेरी जाणका आर न पारा, हम अरू जाण सदा एक सारा।
बनानाथ सोई निरवाणी, द्वैताद्वैत लगै नहीं वाणी ।।४।।

***

पद-१५२ ( राग )

साधो भाई आतम सदा अफुरता।
करता अरु अकरता दोनूं, यह तो स्वतै वरतता ।।टेर।।
होणहार हुआ जिन कारण, जाग्रत सुपन निमंता।
सबमैं सत्ता एकसी कहिये, निरमल रहै न चिंता ।।१।।
कारण देश काल अरु करता, कारज वस्तु सहेता।
शुद्धस्वरूप सकल परकासी, नहीं कोई गया न आता ।।२।।
अगम निगम वाणी नहीं लागै, नहीं ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता।
आतम अरु परमातम एकौ, गूंगो गिरा न गाता ।।३।।
भेदाभेद अभेद न ज्यामें, नहीं ध्यान ध्येय ध्याता।
बनानाथ है ज्यूंका त्यूंई, सोभाखी निरभेता ।।४।।

***

पद-१५३

साधो भाई यह निश्चा मोमांई।
हम तैं स्वतै अकरता करता, मैं द्रष्टा यह नाहीं ।।टेर।।
हमही अखै अद्वैत अप्रबल, इच्छा सुतैउपाई।
ता इच्छामैं किया पसारा, भाव अनंता थाई ।।१।।
ज्ञाताज्ञात अज्ञात तिहू विध, यह इच्छाके माई।
हम इच्छा कूं प्रेरणहारा, सत चित आनँद गुसाई ।।२।।
मेरा स्वरूप सदा नभ ज्यूं थिर, बणै मिटै कबुनांई।
इच्छा भाव अभाव न मोमैं, मैं हूं आदि सदाई ।।३।।
ज्ञान अज्ञान विज्ञान न मोमैं, नहीं एक नहीं दोई।
बनानाथ है नहीं बीचमें, नित चेतन निरभोई ।।४।।

***

पद–१५४

साधो भाई तुरीया अतीत रवाई।
उरै परे आगा नहीं पीछा, नहीं परगट गुपताई।।टेर।।
कारण सूक्ष्म स्थूल तिहूं देहा, मेरी सत्ताकर थाई।
तिरगुण मांय भाव बहु भांती, जुदा जुदा दिखलाई।।१।।
जाग्रत सुपन सुषोपति माया, सबमें सत्ता अचाई।
सारा खेल सता दिखलावै, सबतैं रहै निरदाई।।२।।
देखण कहण सुणन यह माया, सो मिथ्या दरसाई।
आप सदा माया विन थाया, कारण लेश नहीं काई।।३।।
मेरी सत्ता अमर अविनाशी, विधि निषेध नहीं पाई।
बनानाथ बोध सोई बोधक, जाण हमारी आई।।४।।

***

पद–१५५

साधो भाई शुद्धस्वरूप सुखदाई।
परतकही परवाण ज्ञान यह, जाणी जाण सदाई।।टेर।।
ब्रह्म रवी ज्यूं रहत अकरता, ज्यां किरिया नहीं काई।
सत्ता घाम आद्रसज्यूं माया, अगनी ज्यूं जीव उपाई।।१।।
ब्रह्म जीव मायातैं भूला, फेर पीछा समझाई।
रुपिया गोल आंकतै कहियै, रूपा नाम सदाई।।२।।
साखी नाम रूपको आतम, लिपै नहीं कोउ मांई।
नभ घटमैं व्यापक फेर न्यारा, यूं आतम है सांई।।३।।
अपणी सत्ता आपकै मांई, भिन्न भाव नहीं काई।
बनानाथ बोध सोई बोधक, अपणी जाण जणाई।।४।।

***

पद–१५६

साधो भाई अज्ञेय स्वरूप हमारा।
सुरती अरु सिमरति दोनूं, परगट करैं पुकारा।।टेर।।

धर अम्बर अगन पवन पाणी नाहीं, नहीं कोई करम न काया।
शेष सोई आतम अविनाशी, निरबंधन निरदाया।।१।।
जाग्रत सुपन सुखोपति तुरीये, भाव बंधै सोई माया।
निरमाया निरवाण निरंतर, अवस्था अतीत रहवाया।।२।।
वहां तो कृत अकृत न कोई, बुद्धि बोध न पाया।
नहीं कोई गोचर नहीं अगोचर, नहीं प्रकट गुपताया।।३।।
गुपतको साखी प्रगट द्रष्टा, चेतन ब्रह्म अजाया।
बनानाथ है अनंत प्रकाशी, अमल अछेद अथाया।।४।।

***

पद–१५७

साधो भाई निजस्वरूप निरवाणी।
अगम निगम कोई पार न पावै, आतम ज्ञानी जाणी।।टेर।।
आतम अनंत अखै सुध चेतन, नहीं वार नहीं पारा।
धरमाधरम अधरम न वामें, आपोई आप अपारा।।१।।
आदि अरु अन्त मध्य नहीं वाको, नहीं कोई भूल सयांणा।
उरै परै ऊंचा नहीं नीचा, नित चेतन निरवाणा।।२।।
वां नहीं करम उपासन ज्ञानां, नहीं कोई जाप अजापा।
देश काल वस्तु गुण नाहीं, नहीं कोई थाप उथापा।।३।।
सगुण निरगुण भाव न ज्यामैं, नहीं अकार निराकारा।
ज्यां नहीं प्रोक्ष नहीं अपरोक्ष नहीं कोई मिल्या न न्यारा।।४।।
हेती अरु नेती नहीं ज्यामैं, दोऊं वचनकी हाणी।
बनानाथ आपकी सोजी, चेतन आप पिछाणी।।५।।

***

पद–१५८

साधो भाई आतम अचल अनइच्छया।
शुद्धस्वरूप अरूप आप तां, बंध मोक्ष नहीं वंच्छया।।टेर।।
जलमें जोय उपाधि पवनकी, तरंग बुदबुदा फेना।

यूं आतममैं इच्छाइ;तें, भाव तिरगुणका माना ।।१।।
तमोगुण ब्रह्म सतोगुण ईश्वर, रजोगुण जीव कहाई।
ये तिहूं उतपति खपतिमैं सैमल, यामैं आई जाई ।।२।।
जीव ईश ब्रह्म असत अनातम, सत आतम निरदाया।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तां नहीं, सत चित आनँद अथाया ।।३।।
आतम स्वतै देखाई इच्छा, ज्यूं मृगतृष्णा झांई।
इच्छा भाव अभाव तिहूं विध, सो आतममैं नांई ।।४।।
है है कहता नहीं आकारा, नहीं नहीं का निराकारा।
बनानाथ है अचल अपरोक्ष, स्वतै प्रकाशित सारा ।।५।।

***

पद–१५९

साधो भाई चेतन द्रष्टा सोई।
चर्म सम दिव्यदृष्टि तां नांई, एक दोय नहीं कोई ।।टेर।।
तरुजर सरप दरार रज्जुतैं, रजनीमैं भरमाणा।
यूं आतम अज्ञान दृष्टितैं, तिरगुण थाप बंधाणा ।।१।।
तीनूं भेद भया मायामैं, न्यून विशेष समाना।
जाग्रत न्यूंन सुपन विशेषा, अरु सुषोपति समाना ।।२।।
विसवै जीव अज्ञान आवरण, सो जाग्रत ही लेखा।
तरुजर भरम ज्यूं जीव जान्या, चमदृष्टिकर देखा ।।३।।
तेजस जीव अरु ज्ञान अहारा, सोई सुपन कहाई।
अही भरम ज्यूं जीव बखाना, दिव्यदृष्टि ये थाई ।।४।।
प्राज्ञ समान भोग विज्ञाना, सुखोपति कहिये योई।
भूमि दरार भरम ज्यूं जीव है, समदृष्टि हैं सोई ।।५।।
रज्जुदृष्टि ज्यूं आतम चेतन, अनुभौ भाण प्रकासा।
विश्वै तैजस प्राज्ञ विलाना, सत आतम निरआसा ।।६।।
द्वैताद्वैत नहीं आतममैं, शुद्ध अद्वैत अपारा।
बनानाथ सोई अनिरवाच्य है, आपही जाणनहारा ।।७।।

पद–१६०

ज्ञान गुरुदेवका सही रे साधो, लख्या सोई भवपार ।।टेर।।
सतगुरु मोरी सुनो विनती, अरज करूं करतार ।
भवसिंधूंसूं करो कनारै, निराधारां आधारा ।।१।।
लखचौरासी जीवाजूनमैं, फेरा फिरया अपार ।
मैं शिष्य शरण तुम्हारी आया, अब मोय लेवो उबार ।।२।।
अनंत उपाधि लगी गुरु मेरे, एक एक अधिकार ।
ज्ञान खड़्ग मोय देवो दया कर, काट होऊं भवपार ।।३।।
तुम विन सकल सृष्टिमें नाहीं, ऐसो कोउ दातार ।
वेद संत सतगुरूकूं वरणै, सोई निश्चा लिया धार ।।४।।
गुरु किरपाहुवै ज्ञान परापत, छूटै सवी विकार ।
बन्धन कटै होवे निरबंधन, पावै मोक्ष दुवार ।।५।।
केवल ज्ञान दिया गुरु हमकूं, जाण्या सार असार ।
आतम सत असत अनातम, परख किया निरधार ।।६।।
सतमैं स्थिति असतकी हाणी, निश्चय योई विचार ।
सतगुरुं मिल्यां ऐसी विधी सूंझै, परगट कही पुकार ।।७।।
जीयाराम गुरु पर उपकारी, दातारां दातार ।
सो सीधा सो सतगुरु करकै, बनानाथ कहीं सार ।।८।।

***

पद–१६१ (राग)

साधो भाई अपणा आप अथाया ।
मायागुण किरियाको द्रष्टा, सो कहूं गया न आया ।।टेर।।
सत चित आनंद आप अखंडी, तातै अंस फंटाया ।
एकतै जीव अनेक बनायके, माया किया मन भाया ।।१।।
सोई माया मूल अविद्या, तामैं तिरगुण थाया ।
सतगुण ज्ञान अज्ञान रजोतम, निज ज्ञान निरदाया ।।२।।

जबलग निज ज्ञान नहीं प्रापत, तब लग बहु दुख पाया।
न्यून विशेष समान गुणमई, धरी अनंता काया।।३।।
उलटा अंश पलट मायातैं, अपणा ज्ञान जगाया।
मायाजाल छेद भया न्यारा, दूजा भेद मिटाया।।४।।
आतम अंश सोई परमातम, शुद्ध अद्वैत अजाया।
अपणा स्वरूप सदा ज्यूंका त्यूं, ज्ञान अज्ञान नमाया।।५।।
निज पद शुद्ध सनातन दृष्टा, आपोइ आप रैवाया।
बनानाथ निरवाणी बाणी, परतक कहैं दरसाया।।६।।

***

पद–१६२ (राग)

साधो भाई मायामें द्वैत विलासा।
अनहोनी होती भई माया, ज्ञान भयां हुवै नासा।।टेर।।
ब्रह्मा विष्णु महेश ईश्वरी, या मिल जाल पसारा।
सब जीवनपै जाल डारकै, गिरिया जीव अपारा।।१।।
तीन गुणां मांई जीव अलुज्या, उतपति स्थिति है हाणी।
माया भूल इनीका कारण, सब जीवनकी खाणी।।२।।
पांव पाताल सीस आकांसा, उदर दसूं दिश छाई।
मायाजीव किया अपणै वस, बार जाणदै नांई।।३।।
एक उपाय माया छूटणकी, गुरु सरणे चल आवे।
गुरु दृढ ज्ञान देवै निजपदका, माया जाल मिटावै।।४।।
गुरु वचन गुरु जुगती करके, सरवण सबद सुणाया।
मन मनन निदिध्यासन करके, सुध साक्षात् लखाया।।५।।
एक अनेक जीव मायातैं, ज्यूं रवि बिंब अनेका।
माया घट जल भेद विलाया, ब्रह्म जीव सोई एका।।६।।
शिव विष्णु ब्रह्मादिक वंछै, निश्चलपद निरदाया।
जियाराम गुरुसूं ले, जुगती, बनानाथ पद पाया।।७।।

***

पद–१६३

समज्यां संत परमपद परस्या, जां लग पहुंचत सूरा।
आदि पुरुष ओलख्या अन्दर, हरदम सदा हजूरा।।टेर।।
परथम आदि पुरुष अविनासी, जां तिरगुण नहीं माया।
रचना विना ब्रह्मनिजनामी, आपोड़ आप रवाया।।१।।
सो निरभेद भेद नहीं तामैं, नही कोई वाद विवादि।
उण समरथका ज्ञान अपारा, पुरुष पुरातन आदि।।२।।
आदि पुरुष इच्छा शक्तिसूँ, रचिया जगत पसारा।
समज्यां सो सत शबदा लागा, भरम बंध्या जग सारा।।३।।
आरम्भ आद अमावस रचिया, सुरत सबद घर लाया।
अपणा नूर निरंतर निरखो, निरमल निरगुण राया।।४।।
पडवा पवन पिछाण्या पागी, अरध उरध लिव लागी।
उलटी कला अखण्ड उजाला, जोत दसूं दिस जागी।।५।।
बीजो बीज ऊगीया चन्दा, निवण करै नव खण्डा।
दिन दिन कला सवाई दरसै, आप वहै ब्रह्मण्डा।।६।।
तीजमैं तार लगी त्रिवेणी, शबद चढ्या टंकसाला।
हीरा चोट सहे सिरघणकी, युं दृढ मत गुरुकावाला।।७।।
चौथें चहूँ दिस भँवर गुंजाया, गिगनमण्डल गरणाया।
बारोई मेघ मलार उलटकर, बिरह बादल बरसया।।८।।
पांचम पुरुष पीजरै पूरा, सुन घरपूगा सूरा।
सैंस कली घर करत किलोला, बाजत अनहद तूरा।।९।।
छठम् अटल बिरछकी छाया,गरज्यो गिगन सवाया।
मोर्‌या आंब मुकत फल लागा, सुघड सूवे चढ़ खाया।।१०।।
सातम छोड़ खलककी आशा, आशा भई निरासा।
अदर दलिचै आप विराजैं, जां नहीं काल तिरासा।।११।।
आठम अचल ब्रह्म अविनासी, वार पार नहीं कोई।
नित निरलेप लेप नहिं लागैं, ज्ञानी की स्थित सोई।।१२।।

नवमो नाथ निरंजन राया, अंजण दरसै माया।
आप सदा माया विन थाया, लखै सन्त निरदाया।।१३।।
दशम दसूं दिशा पर देवा, सुर नर करै वाकी सेवा।
सकल निरंतर व्यापक सांई, ऐसा अलख अभेवा।।१४।।
एक इग्यारस एकुंकारा, जीव ब्रह्म एकसारा।
दुई विना दूजा नहीं दरसे, सब घट सिरजणहारा।।१५।।
बारस बावन अक्षर बाहिर, पारब्रह्म थिरथाया।
सो ब्रह्म लख्या बक्या निज अनुभौ, परगट भाख सुणाया।।१६।।
तेरस तोल मोल नहीं आवै, कैणी लगै न काई।
जाणी जाण रहा एकसारा, शुद्ध स्वरूप सुखदाई।।१७।।
चवदस चार वेद षट् सास्तर, गीतामैं यूं गावै।
एकौ ब्रह्म नासती दुतियें, साख सुण्या पत आवैं।।१८।।
पूनम पारब्रह्म पदपूरा, सतगुरु सही लखाया।
सोलै कला समझकर भाषी, संत सुघड़ नर गाया।।१९।।
चार सांगमैं चेतन सामल, गिरे आश्रम त्यागी।
परम हंस लग ब्रह्म एक सारा, लखै सोह्वै बड़भागी।।२०।।
सोलै कला कही निरणै कर, सो गुरुमुख जिन जाणी।
हठ जोग सांख्य वेदान्त समझ कर, कही निरवाणी वाणी।।२१।।
जीयाराम मिल्यागुरु पूरा, पारब्रह्म परसाया।
बनानाथ निज जुगती कर जाण्या, अवर धरूं नहीं काया।।२२।।

***

पद–१६४

साधो भाई नित आतम निरदाया।
ज्ञान विना जीव मायामैं भासैं, मिटै ज्ञानतैं माया।।टेर।।
इच्छा आदी ईश्वरी माया, तातैं तिरगुण थाया।
रजगुण उतपति तिथि सतगुंणतैं, लीन तमोगुण माया।।१।।

उतपति तिथि लयभेद तिहूं मैं, जीव अनंत देखाया ।
आप अजीव अनादि केवल, सभर भर्या निरदाया ।।२।।
माया अस्त अनादि कलपत, सत आतम सुखदाया ।
रविमें लेश निशा नहीं पावैं, यूं चेतन ब्रह्मराया ।।३।।
अनुभौ ज्ञान कहा आतमका, लख्या सो निरभैं थाया ।
कहै बनानाथ सुणो भाई साधो, कर निरणैं दरसाया ।।४।।

***

पद–१६५ (राग– परभाती )

मैं रैता परमातमा, ज्यांकी कहूं रे निसाणी ।
मेरा स्वरूप अनादिका, तूं क्या लखत अजाणी ।।टेर।।
मेरी सत्तानिज आतमा, तातैं चउं खाणी ।
मैं प्रेरक सब जीवका, मेरी कबुव न होवे हाणी ।।१।।
उपजै मिटै फेर होत है, त्रिविध ताप लगाणी ।
त्यूं तैं जाण चौथी जुदी, जाका है हम जाणी ।।२।।
आदि अन्त मध्यकूं लखैं, साखी जाण कहाणी ।
मन आतम परलें गया, आ साखा परवाणी ।।३।।
हम परलाके बार हैं, जाणी जाण रेहाणी ।
असंख जुगांके आगली, कैई ये सिंध पुराणी ।।४।।
सरव सलूणा श्याम है, नूरी नित निरवाणी ।
बनानाथ शुद्धबोध है, बोधक सही परवाणी ।।५।।

***

पद–१६६

ये निश्चा निरवाण है, निरवाणी वाणी ।
निरवाणी निर्वाण है, निरवाणी जाणी ।।टेर।।
शुद्ध स्वरूप परमात्मा, सो है सदा विज्ञाना ।
जाग्रत सुपन सुखोपती, तुरीया दै म्यांना ।।१।।

जाग्रत झबका जगतका, सो है आदि पसारा।
सब इंद्रियनका भोगता, विषवै जीव विचारा।।२।।
नव तत्वनका सुपन है, सोई मध्य कहाई।
संकलप विकलप भोगता, तेजस जीव रैहाई।।३।।
सुंन सुखोपति अन्तमैं, जाग्रत सुपन विलाना।
सो भोगी सामानका, प्राज्ञ जीव बखाना।।४।।
साखी अवस्था तीनका, तुरीया तदरूपा।
आदि अन्त मध्यतैं परे, सो है अमल अनूपा।।५।।
तुरीये तुरीये अतीत है, रवि कला ज्यूं एका।
भेद अवस्था तां नहीं, जां दूजा नहीं लेखा।।६।।
मम महरम अद्वैत है, नहीं निकट नहीं दूरा।
बनानाथ अद्भुत गती, लखसी सन्त सूरा।।७।।

***

पद–१६७

साधो भाई नित निरगुण निरभोई।
अपणी जाण आपही जाणैं, विधी निषेध न दोई।।टेर।।
गुण निरगुणकी कहूं हकीकत, सुणो संत जन सारा।
निरगुण निरालेप निराकारा, है तिरगुण आकारा।।१।।
निरगुण ब्रह्म चेतावै तिरगुण, योई है तिरिविध भेदा।
मल विछेप दोष आवरणकी, जुई जुई दैं वेदा।।२।।
विसवै जीव स्थूल देह जाग्रत, पनरै तत्त्वका मापा।
इंद्रियां विषै भोग भुगता वैं, बंधा दोष मल आपा।।३।।
तैजस जीव देह पुनि सूक्षम, नवं तत्त्वनकी थाई।
संकलप विकलप भोग सुपनमैं, दोष विछेपता थाई।।४।।
प्राज्ञ जीव देह है कारण, सुखोपति मांहे भूला।
भोग सैमान दोष पुनि आवरण, सो सब लेखा ऊला।।५।।

निरगुण ब्रह्मअभेद अनादी, निजानंद निजरूपा।
तिरगुण असत सत सचिदानंद, अपणा आप अनूपा ।।६।।
ये निरगुण तिरगुणका निश्चा, अगम निगम कहे ताही।
बनानाथ निरगुण निरबंधण, तां निरगुण नहीं काही ।।७।।

***

पद-१६८

या सतगुरुजी री सोजीरे, साधो अगम निगम कहै दोजी।
सतवादी सिष लहे पारखा, सकल भरम दै खोजी ।।टेर।।
माया ब्रह्म भया दोऊ मिश्रित, रची तिरगुण ताबाजी।
ता संयोग जीव होय भरम्या, अपणा रूप भूलाजी ।।१।।
सकल सृष्टिका सतगुरु मालिक, ज्यां कै पूंजी सोजी।
सत असतका करत निवेड़ा, माया ब्रह्मका खोजी ।।२।।
गुरुका शबद सुण्या शिष्य सरवण, ताते मन लागा जी।
बहुत जुगनका जीव अचेतन, गुरुगम सुण जाग्या जी ।।३।।
सारासार विचाऱ्या गुरुमुख, सतगुण बोध गया जी।
माया अंश तज्या रज तम गुण, निश्चै ब्रह्म लख्याजी ।।४।।
व्यापक ब्रह्म अचर चर मांई, सदा निरंतर रहै जी।
माया भेद नहीं ता भीतर, सोई सनातन मांजी ।।५।।
सतकी सैन कही हम सबकूं, जाणो पंडित काजी।
बनानाथ गुरुमुख जिन पूगा, वैमुख डूबा पाजी ।।६।।

***

पद-१६९

इच्छा तीन बताई रे साधो, येईं जाण रहा जाणी।
अपणी ठोड ठोड कई इच्छा, आप रहत निरवाणी ।।टेर।।
इच्छा अरु परमारथ इच्छा, अनइच्छा तिहूं ठानी।
इन तीनांकी जाण जुई जुई, कर निरणै कहूं वाणी ।।१।।
इच्छा अरथ विचारै आदि, बेहद ब्रह्म स्वरूपा।

कर अहंकार पुरुषकी प्रकृती, धरया अनंता रूपा ।।२।।
परमारथ इच्छा है पूरी, ज्यां स्वारथकी हाणी ।
एको ब्रह्म नासती दुतीये, इच्छा परमारथ जाणी ।।३।।
अनइच्छा आतम नित चेतन, ज्यां नहीं व्याप अव्यापा ।
आदि अनादि सनातन सोहं, जाणै अन इच्छा मापा ।।४।।
अपणा आप अमर अविनासी, निजानंद निज सांई ।
ज्यां इच्छा वे इच्छा नाहीं, सरबा अतित गुसांई ।।५।।
इच्छा तीन भेद गुण भाखै, रती फरक नहीं कोई ।
भेदाभेद रहित आतमा, बनानाथ है सोई ।।६।।

***

पद–१७०

सो साधू निज जगतमैं, गंगोदक पाणी ।
जो जावै ज्यां का मल हरै, ताकूं वेद बखाणी ।।टेर।।
नाम लेत विसवासका, अवास एक नहीं पालैं ।
धके पडे सोई आचरैं, नीची दृष्टि निहालैं ।।१।।
बड़ा वचन कहै जगतमें, अपणी मति छोटी ।
श्वान भोग किम कर सकैं, हथणी भई मोटी ।।२।।
हथणीका महातम बड़ा, ताके गज जोडै ।
गति मति वाकी एक है, नीची बुद्धि न मोड़ै ।।३।।
ऊंचा पद बंछै सबै, जो गुर गम बतावैं ।
तब पावै ऊंची गति, सो निज संत कहावैं ।।४।।
मान बड़ाई सब तजैं, सो संत रहैं निसकामी ।
बनानाथ उण संतकूं, कीजैं कोटि सलामी ।।५।।

***

पद–१७१

सुरत सुण बावरी तेरो, बीतो जाय बेवार ।
सुरत सुण बावरी तेरो, बीतो जाय बेवार ।।टेर।।

ओ संसार ओसको पाणी, याकी तजो सब आस।
घाम पड़ै जब सूके सबेरे, ओ जग निगम निवास ।।१।।
केई वार जीवा जूंणभोगी, अब नर तन पायोरे गिवार।
होय सनमुख सायबसूं अभागी, तनै सतगुरु कहत पुकार ।।२।।
गुरु संतनको संग सत जाणो, तजो जग असत असार।
सेंध दैवैं साची सतगुरुजी, पलमैं करैं भवपार ।।३।।
सास उस्वास समर शारंगधर, यै दै गुरु निजसार।
वास वसै ब्रह्मंडमैं तेरा, ज्यां भय नहीं लिगार ।।४।।
सतगुरु मिल्या टल्या भव सिंधुसूं, गाया गुण गोपाल।
प्रेरक सब पृथ्वीको पालक, बनानाथ रैंया न्याल ।।५।।

***

पद–१७२

पीयाजीके दरसणकी, लगरई अजब उमेद ।।टेर।।
पीया पीया कर सबी पुकारैं, कर सवांगी ह्वाल।
प्यारी नाम उनीका कहिये, लगी कलेजे भाल ।।१।।
व्रहन नारी सबसूं न्यारी, किया जोगणियां भेस।
अवघट घाट बाट विन वैंणा, चली पियाजी के देस ।।२।।
हमकूं मोही पिया निरमोही, बड़ो कठण दिलदार।
बेदरदीकूं दया न आवैं, कबहुं न बूजी मेरी सार ।।३।।
पिया दरश विन चैन न आवै, होय रही हवाल बेह्वाल।
दरश दिखाय दया करी मोकूं, व्रहनीके रिछपाल ।।४।।
पिया वदन पर जाऊँ बलिहारी, मुख देखत दुख जाय।
कृपा करी किरपाल कंठ बिच, विरहनि लीवी लगाय ।।५।।
अब मेरे चित्तमें चैन भया, मैं होरही लाल गुलाल।
बनानाथ ये भाव विरहको, मिट्या जगतका ख्याल ।।६।।

***

पद–१७३

साधो रे चित चेतन करीया,
विन पारख पावो नहीं, निश्चै रहसो अलिया ।।टेर।।
तीन देह उतपति करी, आप गुण होये भिलिया ।
घट घट माया मन बंध्यो, भवसागर कलिया ।।१।।
वेहद वृक्ष अनूप है, छाया हद नीचा ।
प्रतिबिंबतैं फल नामिलैं, फल तो रह गया ऊँचा ।।२।।
सरवां ज्यूं घट जांणियैं, चेतन ज्यूं चन्दा ।
भांडा फूटा भरमका, दूजा मिट गया फन्दा ।।३।।
द्रिस मीटी जब दरसिया, पूरण पद पाया ।
बनानाथ गम गुह्य है, निश्चै दरसाया ।।४।।

इति श्रीबनानाथजी महाराजरी वाणी संपूर्ण

***

ॐ

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

# श्रीबनानाथजी महाराज का परवांणा प्रारंभ

***

## चौपाई

ब्रह्म गुरु संतनकी दया, आतम ज्ञान उदय निज भया।
परवाणा प्रगट कहे दाखूं, भिन्न भिन्न कर निश्चा भाखूं।।१।।
नमो नमो गुरुदेव मनाऊँ, दे परिक्रमा सीस नवाऊं।
ऐसी दया करो गुरु मेरा, कायागढका करो निबेड़ा।।२।।
प्रथम पांच पचीसो जाणूं, तीन गुण तुरत पिछाणूं।
रजगुण तमोगुण सत्वगुण माया, ज्यामें भँवरा भरम भुलाया।।३।।
भटकत भँवर फिरे बहु फेरा, भांत भांत कर माया घेरा।
एक पलक भर ठहर न पावै, काया गढ़में किमकर जावै।।४।।
काया गढ़ करड़ो है भाई, जाकी संत करैं ओलखाई।
कहै बनानाथ माया सब त्यागी, गुरुसरणे आयो बड़भागी।।५।।
सतगुरु सुणो विनती हमारी, तुम समरथ मैं सरण तुम्हारी।
कायागढ़का भेद बतावो, संशय शोक भ्रमकूं ढावो।।६।।
सतगुरु दीनदयालू ऐसा, भेख विवेक दिया है जंसा।
जाकी बिगत कहूं समुझाई, यामैं रती फरक नहीं काई।।७।।
स्वास उस्वास सिमरणा सारी, दृढ आसन कर ममता मारी।
भेद विभूत विचार चढ़ाई, अनुभव बात अगमकी पाई।।८।।

उनमुन मुद्रा सरवण सारी, ऐसे जोगी जरणा जारी।
मैर मेखला तत्तकी टोपी, दया करी गुरु सिरपर ओपी ।।९।।
सिंगी सबद श्रुतकी सेली, गुरुप्रताप सिरपर मेली।
करणी कूतकसबरकी झोली, शम दम साधन लिया बिरोलीं ।।१०।।
सोहं भेद दिया गुरु भारी, भेख लिया मैं ब्रह्म विचारी।
चित्त चाकड़ी चेतन रैणा, कायानगरमैं फेरी दैना ।।११।।
सबद गुरुका सेल संभाया, होय सूरा रण भीतर आया।
मनकूं पकड़ घेर घर लाया, बनानाथ ये जोग जगाया ।।१२।।
कठिन जोग है पंथ करारा, बहणा महा खड़गकी धारा।
सब दल छेद हटै कबु नाहीं, सूर वीर छाजै दलमाहीं ।।१३।।
प्रथम जाय नाभकूं हेरी, सतगुरु सबद लगाई फेरी।
जासूं फुरे कामना सारी, अती अपरबल नागन नारी ।।१४।।
नाभी नगर नागणी जागी, जाकूं देख सकल जग भागी।
उण नागनने सब जग खाया, जां सतगुरु पूरा नहीं पाया ।।१५।।
उसनागणकूं मारे कोई, जाके धड़पर शीस न होई।
नागण मार नगर सब हेरा, उलटा प्राण पश्चिमकूं फेरा ।।१६।।
नाभी कमल चेतनकी चौकी, उठती लहर उपजती रोकी।
ऐसे चल्या पश्चिमकी घाटी, गांठ ईकीसुमेर की फाटी ।।१७।।
बंकनाल भँवरा बहै आया, उलटा कमल अमी बरसाया।
झिलमिल जोत जुगतसै जागी, चेतन चल्या शिखर घर पागी ।।१८।।
इला पिंगला सुखमण भेला, उलटा किया त्रिकुटी में मेला।
त्रिकुटी महल मैं झिलकत झांई, द्वादश नेजा फुरकत वांई ।।१९।।
मन पवन मिलि धीरज पाई, सहजै चल्या गिगन पर जाई।
सुरत सबदके मिट गया शंका, ऐसे लिया गिगन घर बंका ।।२०।।
अनहद नाद वहां नित वाजे, झूठ कहूं तो सतगुरु लाजे।
विना बादली बरखा होती, स्वाती बूंद नित बरसे मोती ।।२१।।
ऐसा खेल गिगन घर खेली, अधर बुंद अमृतकी झेली।

अमृत पीवैसो बड़भागी, जाकी सुरत गिगनमें लागी ।।२२।।
खरतर खेल रचा बहु भारी, विना पांव जां नाचत नारी।
टूंटा ताल बजावण लागा, गूंगा करै मुँदरीमें रागा ।।२३।।
बहेरा सून्या पांगला भागा, अन्धा निरत निरखणे लागा।
उलटा पंथ खोज नहीं दरसै, सो साधू घर ऐसा परसै ।।२४।।
नटणी पांव वरतपर मेलै,लोक हँसे मुख आप न बोलै।
सबकी सुनी मैं कान न दिया, निश्चै हेर अमर घर लिया ।।२५।।
ऐसी गती पिछाणै जोगी, सदा समान ब्रह्मरस भोगी।
बनानाथ निश्चै कही वाणी, सो गुरुमुख जन लेहिं पिछाणी ।।२६।।
जोग तणा महरम लख गाया, अगम निगम यूं कह दरसाया।
या विधि जोग जुगत कर जोवें, सो योगेश्वर निर्भय होवें ।।२७।।
अब सुण कहूं सुन्नकी साखा, सदा समान परमाण न जाका।
अपरमाण अलोगत सोई, आदी अन्त जां मध्य नहिं कोई ।।२८।।
हंस जाय सुंन घर जोया, जैसे हीर हीरकूं पोया।
रवि अरु बिंब सदा हैं भेला, ऐसे हुआ ब्रह्मसूं मेला ।।२९।।
जीव ब्रह्म जां दूजा नाहीं, सहजे मिला सिमरथके मांई।
सिमरथ सांई हैं सब मांही, रहता पुरुष दीसता नाहीं ।।३०।।
जड़ चेतनमें है एक सारा, भर्‍या ब्रह्म नहीं कछु न्यारा।
पुष्प वासना दीसत नाहीं, ऐसे ब्रह्म भर्‍या सब माहीं ।।३१।।
मैं नहीं जां मैं चल आया, ऐसा खेल अधरमें पाया।
नहीं जहां पिंड पवन भी नाहीं, सकल खेल दीसत मो मांहीं ।।३२।।
जो दीसै सो कहिये माया, आप अरूप अथाग रहवाया।
काया करम नहीं जां कर्ता, भोक्ता भोग्य नहीं जां भर्ता ।।३३।।
वादी जाके भरमगढ जीता, अनुभव बात अगमकी कहता।
महरम विना कथो सब कोई, आप मुंवां विना मुगत न होई ।।३४।।
जीवत मुंवां मुगतमें माले, जाका वचन जुगो जुग चाले।
बनानाथ कही अनुभव वाणी, आसोजी कोई संत पिछाणी ।।३५।।

ब्रह्म ज्ञानका निश्चा योई,यामें रती फरक नहीं कोई।
पुरुषोत्तम अरु पुरुष प्रकृति, लहै मुमुक्षू याकी युक्ति।।३६।।
अब आतमका भाव बताऊं, तुरीये अतीत ज्ञान दरसाऊं।
जाकी जाण अपार अलागी, निज अनुभव उक्ती उर जागी।।३७।।
आतम अज कूटस्थ अनंता, वाको आदि मध्य नहिं अन्ता।
सदा सनातन शुद्ध स्वरूपा, अनावर्त अलेप अनूपा।।३८।।
परब्रह्म है परम प्रकाशी, जाकी सता सत्त अविनाशी।
सत्ततें फुरी फोरना माया, तिण सत्त रज तम गुण उपजाया।।३९।।
ब्रह्मा रजगुण किया पसारा, विष्णु सतोगुण पोखणहारा।
शिव तमोगुण किया संहारा, ये तिहुं गुणका भाव विचारा।।४०।।
मायातणी आदि नहीं कोई, अपरमाण कहीजें सोई।
ब्रह्मंड अनंत ज्ञान है नाना, क्रिया न्यून विशेष समाना।।४१।।
माया सब चेतन आधारा, आतम साक्षी जाणनहारा।
जो जो भाव बंधे जां संगी, आतम निरालेप अनअंगी।।४२।।
उतपति स्थिति लय मायामांहीं, आतम उत्पति थिति लय नाही।
सदा एक रस निश्चल थाया, हाणि वृद्धिमें कबहुँ न आया।।४३।।
आतममें मायाकी हाणी, ज्यों भाणूमें रात बिलाणी।
नित आतम निरमाया सोई, जहां मायाका लेश न कोई।।४४।।
पुरुष अरु पुरुषोत्तम एका, लय विक्षेप नहीं देख अदेखा।
निरांतक निरवाण अथाई, आपोई आप और नहीं कोई।।४५।।
कहा अनातम परमातम तुरीये, तुरीये अतीत प्रीय निश प्रीये।
निरांतक कहा सत असतता, बनानाथ हमतें सब सिधता।।४६।।
ये निश्चा भाख्या निज ज्ञानी, वेदान्त सिद्धांत सत्य बखानी।
आदि अन्त मध्य प्रापत सोजी, निश्चै जाण योई निरभोजी।।४७।।
प्रथम गुरु उपासना गाई, दुतीये जोग रीत दर्शाई।
तृतीये जोग अनन्त निरधारा, चतुरथ आतम ज्ञान विचारा।।४८।।

***

( छन्द सोरठा )

यह चारोंकी जाण, ज्यूंही भाण ब्रह्मंडमें।
कही परतक परमाण, सब ग्रन्थनको योहि मतो ।।४९।।

***

( छप्पै छन्द )

गीतामें श्रीकृष्ण कही अर्जुनकूं शिख्या,
राज परीक्षित जोय ज्ञान शुकदेवसुं लख्या।
जनकराय मतिधीर मिल्या गुरु अष्टा वक्रा,
यदुरायकूं जुक्ति दिवी दत्तात्रय फक्रा,
जीयाराम गुरु सत्त हैं, दिया सत्त उपदेश।
बनानाथ परवाणा भाख्या, रती न राखी रेश ।।५०।।

***

( दोहा छन्द )

साध सती अरु सूरमा, जो जन लेसी जाण।
अभिमानी उण जीवका कबहुं न होय कल्याण ।।५१।।
परवाणा परतीत ले, समझे सुरत लगाय।
बनानाथ वे प्राणियां, सहज मुकत ह्वै जाय ।।५२।।

***

( कुण्डलिया छन्द )

सम्मत उगणीसै अठारवैं, सतगुरु पड़ी पिछान।
तिथ तेरस थिरवार में, मुख भाख्या परवाण।
मुख भाख्यां परवाण, ज्ञान रविजूं दरस्या।
भरम निशा भई नाश, सत आतम पद परस्या।
सत सतगुरु सब शिष्य हैं, येही गुरु शिष्यकी मत।
बनानाथ निश्चय भई, उगणीस्सै सम्मत ।।५३।।

इति श्रीबनानाथजी महाराजका परवाणा समाप्त

***

ॐ

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

# श्रीनवलनाथजी महाराजकृत वाणी प्रारम्भ

***

पद–१ ( राग– सोरठ )

फकीरी दिल बिच देव दीवाण,

सबका संगी लिपै न किसमैं, उनमुन आतम जाण ।।टेर।।

आसन पास उदास जगतसैं, छाजत चौथे पद निरवाण।

रवि जिम राजत भाजत अघ तम, सो जोगी जुगत सुजाण ।।१।।

साखी सरब जगतसैं न्यारा, सबकूं करत प्रमाण।

चित मन बुद्धि प्राणका प्रेरक, इनकी करत पिछाण ।।२।।

दृश्य प्रकासैं उनहि देवकर, अलख अखण्डत भाण।

अपणी भूल दुजा होय दरसैं, आपई उलट समाण ।।३।।

नवल नाथ निज अदल फकीरी, दिल बिच मैं दरसांण।

बनानाथ सतगुरु जब परसे, तो पलमैं किया कल्याण ।।४।।

***

पद–२

फकीरी कोई जन करत करूर।

ब्रह्म अगनी प्रजाल प्रगटै, प्रतक आप हजूर ।।टेर।।

ध्यान धमण संजम सिलगाइ, कर छार वासना सूर।

पांच विषय गुण तीन प्रकृति भये अघ उरमीसे दूर ।।१।।

सीपमां ज्यूं रूपा विलाणा, यूंकीविचिदमैं उपाधि चूर।

निरावरण आतम परकास्या, नित निकलंक एक नूर ।।२।।

मन पवना वाणी नहीं पहुँचे, बावन अंछर न बंधे रूप।
त्रिविध ताप लिपै नहीं ताकै, ऐसा है अगम अनूप ।।३।।
ज्ञान फकीरी जाणत कोई गुरुमुख, और भरम भये भकभूर।
नवलनाथ निरणै कर निरखा, गुरु बनानाथ भरपूर ।।४।।

***

पद–३

फकीरी यह रमज निरंतर जाण।
वेद कतेब वाणी नहीं खाणी, रहता आप अवाण ।।टेर।।
चलै न अचल गिरै नहीं त्यागै, लीना पद निरवाण।
फुरै न अफुर करें न अकरता, अलख ऊन्मुनी पिछाण ।।१।।
सत नहीं असत दिवस नहीं रजनी, अनुभव एकरस भाण।
भरम न करम अहं केई पारा, बुधकी थकत पिछाण ।।२।।
दोय न एक ज्ञेय नहीं ज्ञाता, ध्येय ध्याताकी हाण।
परा न अपर दृश्य नहीं दृष्टि, आपोई आप समाण ।।३।।
जीव ब्रह्मकी कहुँ न कलपना, कलपनहार विलाण।
नवलनाथ निरंजन मिलिया, मन किया उलट पियाण।।४।।

***

पद–४

फकीरी या करे कोई सेर,
मन कर मेर श्वास कर मणियाँ, सुरत समझकर फेर ।।टेर।।
इड़ा पिंगला सम का दोनूं, ज्ञान ध्यान धर हेर।
श्वासा सुखमण कुंभक सगति, कर सुंन सिखर की सेर ।।१।।
मन मिल पवन शबद मिल सूरति, उलटन मूल सुमेर।
सुखमण मारग मीन पपीलगत, खग ज्यूं सुरती पेर ।।२।।
सुरति न नूरति रूप न मूरति, लीन भये सुंनकी ढेर।
सुन केई पारा वो आतम न्यारा, अलख अजूणी अजेर ।।३।।

बनानाथ गुरु किरपा कर दी, ध्यान कला समसेर।
नवलनाथ परमपद परस्या, काट बन्धन मन केर।।४।।

***

पद–५

फकीरी त्याग वैराग दोय धार।
सरधा कर बिचधार दुधारो, दुतियाके सिर मार।।टेर।।
त्याग खड्ग ले अरिदल परसत, जब दरसत दीदार।
भागत भरम ज्यूं त्यागत संसै, यहैं भसमीभूत संसार।।१।।
अगनीसैं धातु पाणीसैं कपड़ा, सब मल तजत विकार।
संकलप विकलप तजत वासना, त्यूं निकसत आतम सार।।२।।
हंसा जिम खीर नीर विन गिरसत, दधि मथ घिरत निकार।
जीव विवेकी पीवके प्यासै, कर ध्यान धमण एकतार।।३।।
चक्रवरती पूरा रण जीतत कोई सूरा, अभय त्रिभुवन करार।
नवलनाथ निरंजण मिलिया, बनानाथ गुरु धार।।४।।

***

पद–६ (राग– परभाती )

दुःखातीत पुरुषकी महिमा, सुण मेरा भाई।
स्थित होय शुध स्वरूपमैं, गुणा रहित समाई।।टेर।।
ना कुछ त्याग न संगरे, निगमा भोम वसाई।
हद बेहदकै ऊपरे, सुरता जाय बिलाई।।१।।
चित्त समीरके संग विना, दुतिया लहर मिटाई।
अदृष्ट भई निज आतमा, दुःख न व्यापै काई।।२।।
शीत उष्ण कोउ ना लगै, जन्म मरण न पाई।
हरष सोक कित संभवै, आपो आप भुलाई।।३।।
महिमा करी उत्तम त्यागकी, मैं द्वंद्वातीत लखाई।
बनानाथ गुरु भेटिया, नवलनाथ गम गाई।।४।।

***

पद–७

उत्तमनाथ तुम उर धरो, उत्तम सीख सदाई।
त्याग ग्रहण कै फंद मैं, कहुं सुख न पाई।।टेर।।
भेद दृष्टिकै लीनभयां, दिरस तुझ रूप समाई।
जलहि तरंग तरंग मिलि जलहि, भेद भरम विलाई।।१।।
त्याग ग्रहणकी समरती, होय दृष्टि दिरस उपाई।
मूल अविद्या जालकूं, जद किरतारथ थाई।।२।।
एक छोड एक झालणा, उभय आग लगाई।
संकलप विकल्प विषय विन, गुणा अतीत रहाई।।३।।
द्वितीया रहित यह पंथ है, बनानाथ समझाई।
शुभाशुभसें मुकत होय, नवलनाथ दरसाई।।४।।

***

पद–८ ( राग– हेली )

पीयाजी तुज परसणकी मोज, खटक हृदे बिच खेद।।टेर।।
पीयासे प्रीत पुराणी जागी, विरहकरी मोय बेहाल।
तोर दरस विन चैन न आवै, भया कलेजे साल।।१।।
सजनपर वारी मिलूं भरतारी, चलि दरद दिवानी देश।
निजर निहारूं हाथ नहीं आवै, रूप विहूणो नरेस।।२।।
तुम विन रूप रूप मोय बांधी, तोय दया नहीं दिलदार।
तड़फ–तड़फ जीव जाय हमारो, पलपल करत पुकार।।३।।
तज निजरूप अरूप होय चाली, जब पायो प्राण आधार।
बनानाथ सतगुरु भल दरसे, किया नवलनाथ निसतार।।४।।

***

पद–९

पियाजी मेरो वसै परासैं पार परेस।।टेर।।
अगम पुरीकै बीच विराजै, अजब अनोखो देश।
निगम मिसाल देह विन दरसै, परसै सुरत हमेस।।१।।

पीवका नूर सूर दसुं दिसमैं, झलकै पुरन्दर वेस।
बादल कै संगबीज मिलाणी ज्यूं नारि मिलीं अमरेस ।।२।।
नारि अरु पुरुष एक भये दोनू, भेद न रया लेस।
आनंदके अनुभव विलूम्बी, मिट गये सकल कलेस ।।३।।
दूजी वृत्ति सबै विसराणी, भाग भरम सनेस।
नवलनाथ सुरता सुलझाणी, गुरु बनानाथ उपदेश ।।४।।

***

पद-१०

पियाजीकी सुरतसूं, तुम हम एकैई रुप ।।टेर।।
पीयाजी हो जिण दिन तुमसैं बिछड़ी, मै तो फिरी अनंतां देश।
सुरत न देखी स्यामकी, भुगते केवल कलेस ।।१।।
चित चिंतामैं जल रही, पायो नहीं भरतार।
जो परणी सोई मर गया, रही व्यभिचारण नार ।।२।।
घर करूं मैं गिर पड़ै, मिलै वो बीछड़ जाय।
खिणक सुखाकै कारणै, करि वादलकी छाय ।।३।।
उण दिल ऐसी उपजी, अमर वरूं भरतार।
पीया मरै नहीं मैं मरूं, जलणो पड़ै न लार ।।४।।
फुरि जद पीवसे बीछड़ी, अमर भई तब एक।
नवलनाथ सुरता सुवागणी, गुरु बनानाथ विवेक ।।५।।

***

पद-११

बंगला दवा दसांपर देख, जामैं निरगुण आप अलेख ।।टेर।।
शम दम साध सरोदे लावो, करलो परम विवेक।
सुंन घर सुरति सहज मिलाओ, तो परसो पूरण एक ।।१।।
उदे अस्त विच प्राणकी संधी, छिनभर सुखमण देख।
आवागिवण करै न आतम, अविचल जोती शेष ।।२।।

पवन पार दीदार वो बंगला, अधर अजुणी सुवेक।
सुरति निरत मिले सम पहुँचै, बंगला निरगुण नेक।।३।।
बनानाथ सतगुरुकी किरपा, बंगलो पायो अजब अलेख।
नवलनाथ ता बीच समाणा, आदि पुरुष अभेख।।४।।

***

पद–१२

नाम रूप दोई विणसत दीसे, कुण उतरै भवपारी।
मूरख कैसी मुकति विचारी, जाको अर्थ कहो नर नारी।।टेर।।
देखण सुणन कहण सब माया, मिथ्या मिरग जलधारी।
सो पद जो माया विन कहिये, ज्यां नहीं गम तुम्हारी।।१।।
करे भेखसे टेक ओ विनगम, मनमैं मोह अपारी।
सूरज देख आगियो उमंगे, देखो जोति हमारी।।२।।
परचा पूछत फिरे अवरोंकूं, अपनी गति विसारी।
चाबत चिणा मांगे कस्तूरी, अद्भूत ये भिख्यारी।।३।।
परचाही माया अपारचाही माया, निरगुण लख करतारी।
चवदे लोक सिद्धाई तेरी, तृणसमान तजारी।।४।।
छोटी माया छोड़ सिद्धाई, मोटी माया बँधारी।
साधू समझै काकभ्रिष्ट सम, आतम रूप लखारी।।५।।
साध सिद्धाई अन्तरा ज्यूं, धरनसे गिगन अटारी।
संत निरंतर मुक्ति समझै, सिद्ध माया उलझारी।।६।।
राज आदि अष्ट सिद्धि फेरी, ऋषभदेव तपधारी।
निजरूप मायाके पारा, नवलनाथ सुखारी।।७।।

***

पद–१३

अवधू मैं हूं अमर अनादि सदा, जुग धरता आतम जोती नरेस।
जोगी जाद आद अविनासी, अविगत नूर परेस।।टेर।।

हुता अचेत चेत सुध कीनी, माया प्रकृति प्रवेस।
किरियाजाल भालभव सिंधू, मकड़ी तार बंधेस।।१।।
ले वैराग्य राग दुख त्यागी, आपै मांय लखेस।
सतगुरु बूझ सूझ सुध लीनी, निज घर पायो निरभेस।।२।।
तुरीये हजूर सूर सम दरसै, दूजा भरम न लेस।
बनानाथ गुरु अगम अजूणी, नवलनाथ सोई सेस।।३।।

***

पद-१४

जिण शब्दोंमैं ब्रह्म नहिं परचै, सो शबद ही तजो प्रचारी।
आतम जामैं प्रतक पाइये, परचा कोण वडारी।।टेर।।
ब्रह्म प्रचै होय तो बोलो, नहीं तो चुपकर जारी।
माया मयी परचा नहीं मानूं, मायाई असत असारी।।१।।
जो तूं उड़ताफिरे आकासां, जतन करी बहुभारी।
पक्षी आगे उड़त विन जतनां, तामैं सिद्ध विचारी।।२।।
हम निरगुण के अवतारी, जिणने माया सृष्टि पसारी।
आदि अंत एक ब्रह्म अखंडित, मूरख क्यूं माया उलझारी।।३।।
उतपति परचा परलय परचा, परचा थितये सारी।
मेरा परचा इन परचोंसे न्यारा, उपजै विणसै न लिगारी।।४।।
परचा मुकति एकधारी, जातैं दुःख मिटै संसारी।
गुंजा गेह पारस मणि खोवै, ताकूं मूरख कहै जग सारी।।५।।
बनानाथ गुरु केवल चेतन, परचे नवलनाथ मुरारी।
एको ब्रह्म नास्ति द्वितीये, वेद सिद्धांत लखारी।।६।।

***

पद-१५

माया प्रकृति है हमारी, हम तो चेतन रूप ता पारी।
शास्त्रदिष्ट विचारी साधू, मन बिकलप तज भारी।।टेर।।

माया भारी सब जुग रचिया, हम ताका आधारी।
पांच पचीस तीन होय पसरी, हम चेतन हारा द्रष्टा री ।।१।।
हमहीं जीव ईश सब कलपै, हमी ब्रह्म कलपना धारी।
प्रकृति पार पुरुष अविनासी, लखै जिनकी बलिहारी ।।२।।
परचा एक शबदका देखो, ज्यां मैं दरसत है दीदारी।
तुम तो गुरु शबद नहीं परचो, जांसु मिटै न चौरासी थारी ।।३।।
हम तो गुरु ईश्वर एक कर मानूं, जासूं उपज्या ज्ञान भवपारी।
ज्ञान दृष्टिमैं दूजा नहीं दरसै, खंडि प्रकृति सारी ।।४।।
बनानाथ गुरु अगम अजूणां, निरगुणके अवतारी।
निगम अगम नेत्र कर निरख्या, नवलनाथ सोई वारी ।।५।।

***

पद–१६

स्वसमवेद कोई विरला पावै, उलटा विरछा मूल समावै ।।टेर।।
आप अकलतैं सकल पसारा, धर अम्बर रचिया आकारा।
पसरा विरछ फूलिया बागा, आपहि जल आप सींचण लागा ।।१।।
आपहिं बीज वीरछ अविनासी, आपहि जीव भये जाति चौरासी।
अंछर एक अनादी देवा, तीणकर बावन अंछर भेवा ।।२।।
प्रथम सहजे सोहं उचारा, सहस्र दल कीया कमल पसारा।
मानवरोवर हंस कहाया, मेर डंड घर राह चलाया ।।३।।
तुरिये अतीत रूप सोउ भूला, अछर चार मिल मूल घर फूला।
सहस्र विसरिया च्यार दृढाया, जन्म मरणके मारग धाया ।।४।।
मूल कमल तुरिये जीव सो थाया, संख बंधाणा फेर वंक न पाया।
सुधी राह तज वंकी लीनी, जिण कारण चौरासी चीनी ।।५।।
संख भमर एक ग्रंथी लागी, बीज जागत अवस्था जागी।
वेद अथर्व परा भई वाणी, द्रिस जाल सत्ता लपटाणी ।।६।।
जाग्रत होय लिंग घर आया, खटदल अंछर कमल उपाया।
काम कलीपर करत गुंजारा, विरमादेव रजोगुणधारा ।।७।।

उलटा उरध नाभ घर आया, दश अंछर एक कमल रचाया।
सगत भुंज पश्यंती जागी, साम वेद स्वासा धुन लागी।।८।।
पीठ कुंडली सोवत ध्याना, नील वरण सँग विष्णु बखाना।
माया सगति परबल धारी, सहस्र बहोत्तर नाड़ि पसारी।।९।।
पवनरूप सूर अभंगा, प्रलय अवसथा सुखोपति संगा।
जाग पवनसे मन संग धाया, हृदै द्वादश अंछर पाया।।१०।।
मनमैं देखि मध्यमा वांणी, यजुरवेदकी कला पिछाणी।
मन कला चंदमहेसुरराया, संकलप डोरि सुपन दरसाया।।११।।
द्वादश कला सूरकी छाया, मनरूप होय चंदा थाया।
कंठ कमल मन मधुकर आया, षोडश दल एक कमल उपाया।।१२।।
रिगवेद वैखरी वाणी, इंद्रया स्थूल सत्ता उलझाणी।
अंछर सोलै उचरत संगा, देवी सरस्वती जाण अरधंगा।।१३।।
बैठे त्रिकुटी द्विदल सधाना, महा जागरत अवस्था जाना।
अंछर दोय हंस घर माना, नैण दोय लख ज्ञान विज्ञाना।।१४।।
विक्षेप आवरण दरसै माया, चंद्रलोक घर रहत समाया।
चरमदृष्टि देखत सथूला, लख चोरासी भुगती सूला।।१५।।
वाणी च्यार वेद सोई च्यारी, लखत भेद कोई ब्रह्म विचारी।
बावन कमलदल अंछर एही, बुधिवन्त सुसमवेद ईनै केही।।१६।।
तीन अवस्था माया पसारा,चतुरथ ब्रह्म सब जाणनहारा।
तुरिये जाण जीवन मुकति सोई, जन्म मरण दुख भुगतै न कोई।।१७।।
तुरिये अतीतमें वेद न वाणी, थकत भये सब वचनकी हाणी।
आदि घर सो कह समझाया, जिण घर मारग हंसा आया।।१८।।
नवलनाथ अनुभव कही वाणी, उलट चलै कोई पीछा प्राणी।
बनानाथ सतगुरु परवाणी, अमरलोकको लाये निसाणी।।१९।।१६।

***

पद–१७

पूरण करिये सोई नारि है, पुरे सो पुरुष कहाय।
नारि पुरुष मिल जग रचा, कहूं भेद समझाय।।टेर।।
पिरथी परथम नारि भई, जल जाको भरतार।
उभै मेल अन्न ओखदी सब रचना आधार।।१।।
अन्न रसमई एक पुरुष भया, रज बीरज नर अरु नार।
दोनूं रचना शरीरकी, अन्न रस पुरुष आधार।।२।।
पवनमई एक पुरुष है, अन्न रस पुरुषके पार।
सरब रसोकूं पूरता, पवन पुरुष भज सार।।३।।
मनोमयी एक पुरुष है, रहो पवन पुरुषकूं धार।
ताकरि पूरण पवन होय, मन पुरुष सचियार।।४।।
विज्ञान पुरुष ता ऊपरे, मनकूं पूरेसोय।
पूरण करे विज्ञानकूं पुरुष आनन्दमय जोय।।५।।
आनंद पुरुषका रूप है, पुरुष ही आनन्द अपार।
नवलनाथ परै कोई नहीं, जिणं पूर्‍यो संसार।।६।।

***

पद–१८

नाभमें निजार वासा, सुसमवेद उचार स्वासा।
सोहं हंस मिलाय अवधू, निजरूप दरसाया भाई।
सुरत शबद मिलाय।।१।।
उठत शबद अपार धारा, उरध मुख जिमि मीन पारा।
स्वासोस्वास समीर सारा, छेद चक्कर होय न्यारा।
अछर अधर उजास भाई।।२।।
मणी पूर घर अखंड ऐसो, अनन्त सूर उद्योग जैसो।
नाडी चक्र जाल कैसो, तज बहत्तर हजार है सो।
सब आतमको आभास भाई।।३।।

चराचरमें आप देखो, आतमा अज एक लेखो।
सुसम सोहं प्रकाश गुरुपद, नवलनाथ भज तास भाई।
वेद सुसम संचार ।।४।।

***

पद–१९

आदि एक अविचल अविनासी, दूजा किम दरसाया ।।टेर।।
अनन्त जुगांकी मैं आगम वरणूं, जिमि संत सास्तर गाया।
आपोही आप पुरुष प्रभु केवल, मूल न दरसे दूजी माया ।।१।।
पांच पचीस न तिरगुण हंकारा, रैणी सहजे ध्यान समाया।
आप आपणी सगति चेत, चेतक दूजा दरसाया ।।२।।
अपणी सगति मैं आप बंधाणा, प्रकृतीगत आया।
शुध बुध भूल सूल तिरये धारी, जद जीव मान भरमाया ।।३।।
सुपन मांय सुपनीसम स्वामी, कर दूजा दुख पाया।
स्वस्वामी भाव सगत संबंधा, विधि अनेक बणाया ।।४।।
सहज समाधि भूल जग रचिया, लगी समाधी समाया।
नवलनाथ आपका आपा, गुरु बनानाथ देखाया ।।५।।

***

पद–२०

सुसमवेद सचियार सोजो, आतमा दिनरैण खोजो
विषयारस सिरसें त्याग बोजो, आपसे धुन लाय।
अवधू आपो केवल थाय भाई ।।टेर।।
नाभमैं निरवाण जोवो, सुरत सुखमण वीच पोवो।
योगनिद्रा अभै सोवो, अरध ऊरध मिलाय।
अवधू सहज अरस समाय भाई ।।१।।
विषम नाली वंक हेरो, उलट पवना पिच्छम फेरो।
चूर अरिदल गिगन घेरो, सूर शशि घरलाय।
अवधू दमोदम हर पाय भाई ।।२।।

कर चकर सुलटा प्राण पेरो, सोहं हंस एक सार टेरो।
शिखर सीधा ठाय मेरो, सगत सिव घर जाय।
अवधू बहुर जन्म न आय भाई।।३।।
प्राण तन मन सीस तेरो, चरण रहै नवलनाथ चेरो।
नहीं बंधण करम केरो, बनानाथ गुरु ध्याय।
अवधू दियो पूरण ब्रह्म दरसाय भाई।।४।।

***

इति श्रीनवलनाथजी महाराज कृत वाणी संपूर्ण।

*****



ॐ

# श्रीनवलनाथाष्टक प्रारम्भः

***

सर्वज्ञत्वं ध्यानविचित्रं सुखकारं मायातीतं मायिविरक्तं शुभवेषम्।
भावाभावैर्द्वैतविकारैर्गतवादंह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।१।।
ज्ञातृज्ञेयज्ञानविचारे बुधरूपं ध्यातृध्येयध्यानविचारे कृतसारम्।
प्रेमानन्दं प्रेमपयोधो धुतदेहं ह्युतमांनाथः श्रीगुरुमूर्तिंप्रणतोऽस्मि ।।२।।
संसारार्णवनौकारूपंजनतानां सुष्ठुवचाभिर्जननिस्तारं शोभाढ्यम्।
तीर्थविराजं तीर्थीकारं मुनिवेष ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणेतोऽस्मि ।।३।।
श्वासोच्छ्वासरजपाजापैः स्वरलीनं योगाभ्यासे योगिविमोहं योगीशम्।
नित्यकाशे प्रणवस्वरूपं पश्यन्तं ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।४।।
योगैर्भोगैर्भोगावकारै रहितं तं विश्वविभातं सज्जनसोमं योगाभम्।
अचरचरेशं मुद्रावेशं नाथेशं ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।५।।
नित्याभ्यासेऽखण्डविचार प्रथयन्तं सद्भक्तेषु स्वात्मविवेकं कृतदेशम्।
विज्ञवरणां ध्येयं गेयं हृदयस्थं ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।६।।
भूमीमण्डलभूषणरूपं निष्पापं जीवोद्धारे दिक्षुचरन्त शुकरूपम्।
परमानन्दे मग्नस्वान्तं गतनीडं ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।७।।
चित्रविचित्रं दुर्घटबोधं विख्यातं भवसिन्धुं दृष्ट्या शुष्कं कुर्वाणम्।
वादविवादान्दूरं दूरं कथयन्तं ह्युत्तमनाथः श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ।।८।।

ज्ञानं नित्यनिरन्ततरं जनमुदे संदर्शयन्स्वात्मनि
सद्विद्यां रचयन्सुधारसवचोभिर्विज्ञयोगीश्वरैः ।
कारुण्येन कृपारसेन जडतापंकं च संक्षालयंस्तत्स-
त्त्वमसी तिवाक्यिवभवं संलुण्ठयन्द्योतताम् ।।९।।
इदं नवलनाथानां स्वामिनामाष्टकं शुभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यंसभवेद्द्रवबन्धहा ।।१० ।।

।। ॐ तत्सत् ।।

इति श्रीउत्तमनाथकृतं श्रीनवलनाथाष्टकं समाप्तम् ।

*****





# श्रीनवलनाथजी महाराजकी स्तुति प्रारम्भः

***

– दोहा –

श्री श्री श्री गणपति गुणद, आदिनाथ उरध्याय।
श्री गुरु नवल जु नाथके, गुण कछु कहूं गणाय ।।१।।

– सोरठा –

अतिमनकर आनंद जियाराम गुण नित जपूं।
पूरण परमानंद बनानाथकूं विनय कर ।।२।।

– कवित्त –

कैधों आज धराको सनाथ करनेके काज,
आदि नाथ शंभु निज सुरत सवारी है।
पातंजलि बली निज योगके प्रचार हेतु,
मारवाड़ मांहिं सु प्रगट देह धारी है ।।
पापकूं पछार नर नारके उद्धार अर्थ,
गीता को स्वरूप कैधों कृष्ण ये मुरारी है।
ऐसे नवल नाथके चरण बीज माथ न्याय,
बार बार हाथ जोरि बीनती हमारी है ।।३।।

शंभुको स्वरूप सब योगिन को भूप यह,
तेज हैं अनूप जैसो मत्स्य तप धारी है।
गोरक्ष प्रत्यक्ष मानो बैठो सभा बीच आय,
यंत्र मंत्र तंत्रको महा अधिकारी है।।
बड़े बड़े भूप सो प्रगट शंभु रूप लखि,
सह न सकत तेज जैसो तिमिरारी है।
ऐसे नवलनाथके चरण बीच माथ नाय,
बार बार हाथ जोरि वीनती हमारी है।।४।।
वेदनको ब्रह्मा सम जानत है भेदभेद,
खेद हरि सुखी जिन कीने नरनारी है।
न्यायबीच गौतम रु सांख्यमें कपिल सम,
व्यास सो प्रकाश वेद अर्थ बीच भारी है।।
अर्थशास्त्र माहिं मानो जैमिनी विराजे आय,
योगमें पतंजली सो पर उपकारी है।
ऐसे नवलनाथके चरण बीच माथ नाय,
बार बार हाथ जोरि वीनती हमारी है।।५।।

– दोहा –

नादबिंदु ज्ञानी महा, कैधों यहै कणाद।
ऐसे नवलनाथकूं, रटत सकल मनुजाद।।६।।
नमो नाथ तव पदकमल, बनानाथ सिरनाय।
नवलनाथ अति नवलकर, नितप्रति करहु सहाय।।७।।
नवहु नाथके तेजयुत, नवलनाथ अति नूर।
करै गोवर्द्धन वीनती, सिद्धनके कुल सूर।।८।।

इति पं० गोवर्द्धनशर्मा कृत
श्रीनवलनाथजी महाराज की स्तुति समाप्त

*****

मङ्गलाचरणम्

# श्रीनाथपञ्चकम्

***

अस्ति भाति प्रियत्वेन सर्वत्र संस्थितात्मने ।
मायाभेदनिरस्ताय श्रीमन्नाथाय ते नमः ।।१।।
निष्कलाय निरीहाय शान्ताय परमात्मने ।
सर्वेषामादिभूताय श्रीमन्नाथाय ते नमः ।।२।।
नेति नेतीति वाक्येन वेदा यं प्रवदन्ति वै ।
अनिर्वाच्यस्वरूपाय श्रीमन्नाथाय ते नमः ।।३।।
सर्वेन्द्रियगुणैर्नित्यमप्रत्यक्षस्वरूपिणे ।
स्वानुभूत्येक गम्याय श्रीमन्नाथाय ते नमः ।।४।।
रज्जौ भुजङ्गवद्यस्मिन्नधिष्ठाने चिदात्मनि ।
विवर्तते जगतसर्वं श्रीमन्नाथाय ते नमः ।।५।।
भवतापापहं पुण्यं शोभनं नाथपंचकम् ।
तेन नः प्रीयतां देवो व्यापको नाथसञ्ज्ञकः ।।६।।

***

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

# योगेश्वर श्री उत्तमनाथजी महाराज कृत वाणी

***

## पद-१

साधो अब प्रकट्यो पूरण भाग, गुरुचरणोंमें गयो चितलाग।
सतगुरु निज बिड़द संभाल, मेरा सब हर लिया जंजाल।।टेर।।
गुरु देव मेरा प्राण आधारा, जिन दिया शब्द ततसार।
राग द्वेष मदलोभऽअहंकारा, भागा सबही विषयविकार।।१।।
भवजल अनन्त ही जानके, डरकर मैं करी है पुकार।
सतगुरु सहाय करके मोकूं तुरत किया है भवपार।।२।।
अनन्त प्रकाश कृपालु कहिये, है गुरु दातारों ही दातार।
सदघन सूर उरमें ऊगो, दीवी सकल वासनाको जार।।३।।
परमानन्द दिलहीमें पायो, देख्या है गुरुदेवका दीदार।
नानाविधिकी कलह कलपना, मिटी बहुत जनमकी हार।।४।।
नवलनाथ गुरु पूरण पूरा, समज्या सही ब्रह्म विचार।
उत्तमनाथ ता मांय समाया, रया नहीं है भेद लिगार।।५।।

***

## पद-२

भव तिरणेको अवसर आयो ए।
बहुत जनमके पूरव, पुण्यसे मानुष तन पायो ए।।टेर।।
ईश्वर किरपा सन्त समागम, गुरु चरणोंमें आयो ए।
प्रेमके पुष्प ध्यानको धूप दे, चितचन्दन चढ़ायो ए।।१।।

शील संतोष अमान अहिंसा, दम दया उर लायो ए।
काम क्रोध मद लोभ मोहको, खणखोज बहायो ए।।२।।
त्याग वैराग्य श्रद्धाको धारके, बक्र भाव हटायो ए।
अनेक युगोंके मैल त्याग, ज्ञानगंगामें न्हायो ए।।३।।
गुरुदेव पायो नहीं जबलों, बाहर धायो ए।
सतगुरु शब्द सुनायके, ज्ञेय ज्ञाता बताओ ए।।४।।
नवलनाथ गुरु कृपा करके, भ्रम मूल मिटायो ए।
उत्तमनाथ स्वरूप समझके, निज निश्चल थायो ए।।५।।

***

पद-३

अब मन ममताकूं मारो ए।
सकल उपाधिको मूलजाणके, अहंता टारो ए।।टेर।।
सरब स्वरूप एक अखण्डी, न कोई भेद विकारो ए।
जाते नाम रूप सब दीसे, कलपित संसारो ए।।१।।
एकाग्र मन बुद्धिकूं करके, गुरु शब्द विचारो ए।
शब्द विचार समज दिलमें, निज रूप निहारो ए।।२।।
स नहीं इदं गुप्त नहीं चौड़े, नहीं अन्तर बारो ए।
भोक्ता भोग्य प्रेरकता न जामें, सो पद निश्चय धारो ए।।३।।
नवलनाथ गुरु दया करके, दियो शब्द इशारो ए।
उत्तमनाथ समझ कर सही, हुवो भव पारो ए।।४।।

***

पद-४

अब मन गोविन्द गुण गावो ए।
ऐसी रमज़ समज सेही जोवो, परमपद पावो ए।।टेर।।
लघु मृदु रिजु ही होयके, सत्संगमें ही नहावो ए।
मान गुमान मद मत्सर सब दूर बहावो ए।।१।।

सुर दुरलभं ये नरतन पायके बिरथा न गमावो ए।
स्वासो स्वास शिव सिमरके, जग जीत ही जावो ए।।२।।
थल जल अनल अनिल नभमें, कर ब्रह्मही भावो ए।
द्वैत भरम काम करम सब, अविद्या कूं ढावो ए।।३।।
नवलनाथ गुरु शब्द सुणायो, जामें लिव लावो ए।
उत्तमनाथ सोई समझके, भव भाव मिटावो ए।।४।।

***

पद–५

फकीरी फिकर देवै सब खोय,
विषयानन्द अभिलाष त्यागके, निजानंद निश्चयही होय।।टेर।।
वेद पुराण दधिकुं मथके, लियो है सार निचोय।
किरिया करम असार समझके, फेर नहीं बोझो ढोय।।१।।
अनघ अलेप असंगी विचरे, सदा रहे निरमोय।
शम दम श्रद्धा तितिक्षा करके, सुरत शब्दमें पोय।।२।।
नाम रूप सब छोड़ उपाधी, भरम रखे नहीं कोय।
अचल अखंड अनंत प्रकाशी, सत् चित् आनंद जोय।।३।।
निस वासर निरंतर होयके, निजमें लगावै लोय।
उत्तमनाथ फकर है सोई, रहे सम दृष्टिमें सोय।।४।।

***

पद–६

फकीरी काम क्रोधकूं मार,
पूजा लोभ रु गौरव गुमान, तन अभिमान बिडार।।टेर।।
आसा पतनी मम सुत त्यागो, चिन्त बान्धव विसार।
मोह मंदिर अरु करम खजानां, इनकूं देवो जार।।१।।
द्वैत बुद्धिकूं त्याग परेरी, नाम रु रूप विसार।
अपणा आप अरूप अनामी, नहिं कोई आर न पार।।२।।

चित चैत्य दृश्य अनातम, येही है झूठ विकार।
अचेत्य चेत आनन्दस्वरूपी, सत ही चेतन सार।।३।।
चेत अचेत कह्यो नहीं जावै, नहीं कोई दृश्य दीदार।
उत्तमनाथ अचल अखण्डी, आपोई निश्चय धार।।४।।

***

पद–७ (हेली)

जग छीलरियेने छोड़िये, सुख सागरमें नहाय।।टेर।।
दृश्य जालमें भरमके, अब नहीं खत्ता ही खाय।
सतगुरु दीन दयाल है, जिन दिया राह बताय।।१।।
सकल शिरोमणि नाम है,सोहं शब्द दरसाय।
शब्द पकड़के पूगिए, क्षर अक्षरकूं ही ढाय।।२।।
असुर स्वभावों को मेटिये, दैवी सम्पद उर लाय।
विषयानंदकूं ही त्यागिये, चिद्घन चेतन चाय।।३।।
तम रज सत्त्वके ऊपरे, भरियो आनंद अथाय।
मगमें अरिदल जो रहै, मार गोविंद गुण गाय।।४।।
अक्षय अमर निज धाम है, तहां विरला हरिजन जाय।
भरम मिटै सब वासना, पुनर धरै नहीं काय।।५।।
नवलनाथ गुरुदेवने, पूरण पदपरसाय।
उत्तमनाथ वहां पहुंचिया, फिर वह पीछा नहीं आय।।६।।

***

पद–८ (हेली)

जगकी कथा सब छोड़के, गुरुमहिमाकुं ही गाय।।टेर।।
निज स्वरूपको ही जोइए, त्याग विषयकी चाय।
आप उलटके आपमें, आपे आप समाय।।१।।
राग द्वेष मद लोभकूं, ज्ञान–अगनसूं जलाय।
भांग भवकी भरमना, देखो आनंद अथाय।।२।।

तोय दृष्टिमें नहीं तरंग है, यूं चिद्में नहीं करम न काय।
नाम रूप व्यभिचारमें, अनुगत एक ही दरसाय ।।३।।
नवलनाथगुरु पूरण रूप है, सत् चित आनंद अमाय।
उत्तमनाथ ता बीचमें सदा रहो लिवलाय ।।४।।

***

पद-९

मन रे गोविंदगुण क्यों नहीं गावै,
मानुष जनम मिल्या पुण्यपुंजसे, अवसर गयो फेर नहीं आवै ।।टेर।।
विषय लम्पट दीन आतुरा है, जाको जायके क्यूं तू दांत दिखावै।
जो प्रभु सकल जगतकूं पाले, ताकूं तू बारबार क्यूं बिसरावै ।।१।।
कुटिल अधम पापी ही कहिये, जिनकूं हरि चर्चा नहीं भावै।
जिनके पुण्य पुरबले प्रगटे, निरन्तर नाम नीरमेंही नहावै ।।२।।
नाम जहाजमें बैठके समझे, नाम अरथमेंही जाय समावै।
आवागमन होवै नहीं तुम्हारी, पुरुषारथ सब विध ही पावै ।।३।।
ओ संसार भ्रमजल है भारी, जामें तू फिर फिर गोता खावै।
जे गुरु खेवट शरणमें जावै, कह उत्तम तुमको पार पहुँचावै ।।४।।

***

पद-१० (मंगल)

सुरती करत पुकार बेरो नहीं होय रे,
मुसाफिर झटके जाग रहो मत सोयरे ।।१।।
सूतां तव जावे दाव आवै नहीं कोय रे,
फिर लख चोरासी जूण फिरेगा ही रोय रे ।।२।।
जगत जंजाल है झूठ रहो मत मोय रे,
गुरुके शरणमें जाय निजानंद जोयरे ।।३।।
परमानंद परकाशमें लगाओ ही लोय रे,
उत्तमनाथ ही समझ भरमकूं खोय रे ।।४।।

***

### पद–११ ( रेखता )

निजानंदमें सोई जन छकिया, निरंतर अहं ब्रह्म यूं बकिया ।।टेर।।
बहुत जनमका पुण्य पकिया, छोड्या महल माल मंढी तकिया।
नामरूप सच्चिदानंद लय किया, रह्या नहीं भरम सब अकिया ।।१।।
कबजमें किया है मन नटिया, जगख्यालका उठा दिया अटिया।
विषय वासमें ही नहीं दटिया, आठों याम सोहं सोहंही रटिया ।।२।।
गुरु मिल्या सही सौदा ही पटिया, भागा सबही रिपूदल डकिया।
जाका भया है काम सब नकिया, देख्या है दीदारही बिन ढकिया ।।३।।
ज्ञानी कबहूँ जगमें नहीं लचिया, परमानंद प्रेममें ही मचिया।
मिल्या नवलनाथ गुरु सचिया, उत्तमपद सबमें ही जचिया ।।४।।

***

### पद–१२

गुरु चरणोंमें रखो चित गोई, ब्रह्मबोधले कलमष धोई ।।टेर।।
तू नहीं किसका तेरा नहीं कोई, काम्यकर्म बोझ मत ढोई।
दुरमति कर देखो मत दोई, आतम अद्वय अखंड है योई ।।१।।
समझ तू निज स्वरूपको जोई, हाड़ मांस तू चरम नहीं लोई।
पुण्य पाप सुख दुःख न कोई, आपो भूल तू आप क्यो रोई ।।२।।
तेरी भूल मूल अविद्या है योई, तेरे विना सिद्ध ही नहीं होई।
दृश्य सब तुमही में पोई, स्वप्नीमें स्वप्न ज्यूं होई ।।३।।
छोड़ कल्पना होय निरमोई, आगम निगमको सार निचोई।
नवलनाथ गुरु सेन पजोई, उत्तम सत आनन्द है सोई ।।४।।

***

### पद–१३

समजरे मन मैलापन धोय।
धोयों विना भय ना मिटै, थारो भव तिरणो नहीं होय ।।टेर।।
या जग आडम्बर ख्यालमें रे, भूल रहो मत मोय।
आयो अवसर जावसी, पीछे नेण गमावोला रोय ।।१।।

काम क्रोध दंभ लोभ मोहमें रे, फँस रहे सब कोय।
विषयानन्दकूं ही मान के वे, फिर फिर बोझो ढोय।।२।।
काग बक स्वभाव ही त्यागियेरे, हंसगत हालो जोय।
हंस होय हीरा चूणलो थे, गुरु गम गाढी गोय।।३।।
नरतन पदारथ पायके रे, वृथा अब मत खोय।
सुरती कहे ये पुकारके, अब चेत चेत मत सोय।।४।।
नवलनाथ गुरु यूं कह्यो रे, जगदीश सबमें जोय।
उत्तमनाथ सो समजके अब, समदृष्टी शीतल होय।।५।।

***

इति श्रीउत्तमनाथजी कृत वाणी समाप्त

*****

# कठिन शब्दार्थ

( पद संख्या-१ )

**साधो**– साधक
**भाई**– मनोवृत्ति
**हरिजन**– ईश्वरभक्त
**हर**– भगवान् शंकर
**वां रे**– उनके
**निगै**– अनुभव में
**निरंजन**– दुःख रहित, परमात्मा
**भूलां**– भुला हुआ
**भोभ**– मंगल. मूल आधार, शमसान
**सवाई**– सर्वोच्च
**आपै**– स्वयं, आत्मा
**सुध**– स्वच्छ, पवित्र
**बुध**– बुद्धि
**सिवरयां**– स्मरण
**निरमल नीर**– चेतन आत्मा
**नाता**– सम्बन्ध
**शील**– संयमता
**साज्या**– धारण करना
**घर आता**– अन्तःकरण की शुद्धि
**मेहर**– कृपा
**जस**– गुण
**निगे**– खोज, अनुसंधान
**निरख्यो**– अनुभव करना
**सास**– श्वास (पूरक)
**उसाँसे**– प्रश्वास (रेचक)
**सिमिरत**– सोहं शब्द का स्मरण
**सैन**– ईशारा,समझाया
**परस्या**– आत्म तत्त्व की अनुभूति
**विख्याता**– जीवभाव, जन्म मरण

( पद संख्या-२ )

**कुदरत**– परमात्मा की माया/शक्ति
**कुरबानी**– स्मरपण
**आगम**–इश्वर रचित लीला, धर्मशास्त्र
**बिरला**–कोई एक
**हेरत**– खोजना
**हेरानी**– सुध बुद्ध खोना
**संतसार**–सुध लेना
**विगत**– बीती हुई, भूतकाल
**सायब**– परमात्मा
**निर्वानी**– दुःख रहित

( पदसंख्या- ३ )

**पार**– दूर
**प्राणीलाल**– परमात्मा
**देहि**– आत्मा, बुद्धि
**दिवांनी**–पागल
**खड़ी खड़ी**– लगातार, दिनरात
**निहारू**– देखना
**दरद**– जिज्ञासा
**ब्रहन**– विरह
**वाव**– व्याकुलता
**प्यास**– मिलने की इच्छा
**खलक**– संसार
**मैरम**– दयालु
**मुराद**– कामना
**रूतवंती**– उदास
**सदकै**– समर्पण भाव, तैयार होकर
**पाँच सखी**– पाँच ज्ञानेन्द्रिय

( पद संख्या- ४ )

**साध**– साधक
**सोजलो**– खोजना
**मांजां**– जिज्ञासु
**सप्तधात**– रक्त-मांस-मज्जा-अस्थि-वसा-वीर्य
**सूबटो**– पंच भौतिक शरीर
**अमोल**– कीमत रहित
**केइक**– कोई जन
**अडोल**– स्थिर
**कमाई**–पुण्य संग्रह
**माई**– माया
**तोल**– इज्जत, जीवन
**रत**– परमात्मा के साथ तन्मय
**नेह**– मोह
**परतक**– प्रत्यक्ष
**आगला**– शिष्य

( पद संख्या-५ )

**वारणी**–बहार

कूकै– रोना
नार कुनार– नींद
गिगन– ब्रह्मरन्ध्र
निबली– कमजोर
कुजात– बुरा
जमरांणा– यमराज
आगी– आगे
सेल– भाला, बरची
राड़– झगड़ा
कार– शब्द रेखा
कुंइं– कुआ
चिकारी– नींद
निराट– बदमाश
पाड़– खोदना
निसडी– निकली

( पद संख्या–६ )

विसर गयो– भूल गया
छक्यौ– भरपूर
बंधण– विषयों में फंसना
मृगजल मिथ्या
मुक्रके– कांच का बना हुआ
सार– परमात्मा
कारज– कार्य (परमात्मा से मिलने का)

( पदसंख्या– ७ )

करम कमाई संजोग– अच्छा कार्य करने के कारण
गिरो– ग्रहण करो
ताप– अध्यात्म, आधिभौतिक, आधिदैविक
संताप– दुःख
भखै– बोले (कथन करना)

( पद संख्या–८ )

समता सैज– अभेद दृष्टि
कां नै– किसलिए
भरीभूल– अज्ञान
सांची– सत्यवस्तु
अधीन– आश्रय
चूण– आनन्द
मोती– ज्ञान रूपी
अवदर– उदर (अन्तःकरण)
फेरा– जन्म–मरण

( पद संख्या–९ )

प्यारी– सुरता वृत्ति
सोले सिणगार– पाँच यम, पाँच नियम, पाँचों विषयों का निरोध, मन एकाग्रह
शील– संयमता
चेतन की चाल– चेतन तत्त्व की ओर
मुंदरी– मौन
झरोखै– ब्रह्मरन्ध्र
आसण किया– वृत्ति का निरोध
परसी– प्रगट होना
रंग रचरई– ज्ञान की पराकाष्ठा
उणदेश– सहस्रार
अर्थ– अनुभव
बाण – अवस्था

( पद संख्या–१० )

अरध– नाभिदेश, मणिपूर चक्र
उरध– त्रिवेणी स्थान
मेर– रुकावट
इक्कीसूं छेद– सात चक्रों का त्रिगुणात्मक छेदन
छतीस बाजा– अनाहद नाद
वेगम– चिन्ता रहित, परमात्मा

( पद संख्या–११ )

कलेश– दुःख (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वैष, अभिनिवे

तत– परमात्मा
आसो– है
असार– मिथ्या
लेखिए– जानीये
अथाय– सीमा रहित
पेखिए– इज्जत, मान
छाणही– खोज करना
परवांण– प्रमाण
प्रकृति– माया
खंडण– बाध
निसपरी– निष्प्रिय

( पद संख्या–१२ )

दिहाड़ो– दिन, अक्सर
गरवा– गुरु
सखी– सुरता
लघुतारा– विनम्रता
आजुड़ो– आज

**पाँच सखी**– पाँच ज्ञानेन्द्रियां
**पचीसूं**– पचीस प्रकृति
**अरध**– मणिपुर चक्र
**उरध**– त्रिवेणी
**पवन पिछाण**– प्रणों की गति को जानना
**कांमणी**– परमात्मा मिलने की इच्छावृत्ति
**दशवें**– सहस्रार चक्र
**धुरिया**– अनहद नाद बजना
**जीत**– दर्शन
**सैनाण**– प्रमाण
**दिगार**– दिदार, दर्शन

**( पद संख्या–१३ )**

**जागो**– परमात्मा के चिंतन में लगना
**जुगत**– युक्ति
**कमलापति**– भगवान् विष्णु
**औसर**– अवसर
**हमै**– अब
**गगन मँझार**– ब्रह्मरन्ध
**षट्चक्र**– मूलाधार- स्वधिष्ठान-मणिपूरक-अनाहत-विशुद्ध-आज्ञा
**गंगावती**– सुषुम्ना
**विनवती**– बिना प्रकाश
**देही**– आत्मा
**तिरपती**– तृप्ती
**सायब**– गुरु महाराज
**मोपर**– मेरे पर
**छत्रपति**– जन्म-मरण मिटाने वाले

**( पद संख्या–१४ )**

**तुझ**– परमात्मा
**सैण**– सेन, ईशारा
**वैण**– बंसुरी का शब्द, कवल
**वाटड़ी**– वाट, इन्तजार
**झांकत**– देखना
**मोहणां**– मोहन
**दिया**– दिन
**दहण**– दहन, जलाना
**वेगरज सत**– सत रज गुणों का वेग
**भावै**– चाहे

**( पद संख्या–१५ )**

**विरद**– यश, कीर्ति
**इला**– इड़ा
**दवादस**– बारह अंगुल श्वास
**आसगत**– आशा का नाश
**बधायो**– स्वागत
**चाव**– इच्छा
**सौलवां**– सोलह गुणों का बखान
**वर वास**– केशर का घर
**अनंत लोचन**– ज्ञान चक्षु
**रीजाण**– राजी करना

**( पद संख्या–१६ )**

**परभातै**– प्रातः (ब्रह्ममुहूर्त)
**निरवाण**– परमात्मा
**सवालि**– प्रेमी
**सूंप्या**– अर्पण करना
**पीवतां**– साधन करते
**आवागौंण**– आवागमन
**घमसाण**– भयंकर युद्ध
**च्यारू खाण**– चार जुणी (उद्भिज-अण्डज-स्वेदज-जरायुज)

**( पद संख्या–१७ )**

**परवांण**– प्रमाण
**वायक**– महावाक्यादि, परमात्मा
**जिग**– यज्ञ
**लिगार**– स्पर्श नहीं करना
**लाधे**– मिलना, प्राप्ति
**बीज विसतार**– पेड़

**( पद संख्या–१८ )**

**दुहेलो**– कठिन
**महेलो**– अवसर
**वाट**– मार्ग
**हरदम**– नित्य
**बहेलो**– बहाना

**( पद संख्या– १९ )**

**उधरिया**– उद्धार हो चुका
**साख**– प्रमाण
**पिछम**– सुषुम्ना
**हीरा**– सोहं रूपी मोती
**त्रास**– दुःख
**सुनविच**– ब्रह्मरन्ध्र
**जगसूं**– माया से
**रैत**– रहना

( पद संख्या–२० )

**सायर**– समुन्द्र
**पद**– आत्मानुभूति
**परसैलो**– प्राप्त होना
**दिष्ट**– दीखनेवाला, दृश्य
**मुष्ट**– अदृश्य
**द्रिश**– दिशा
**निगे**– देखना
**नेड़ो**– नजदीक
**अपरवल**– शक्तिशाली
**सरबग**– स्वर्ग, वैकुण्ठ
**श्याम**– ईश्वर
**वरेलौ**– प्राप्त करना
**अगम**– अगम्य
**अगोचर**– इन्द्रियों का अविषय
**निगम**– वेद

( पद संख्या–२१ )

**परापेर**– परा पश्यन्ति
**बारै**– बाहर, परे
**आप**– आत्मा
**सुरा**– पानी
**अखतां**– अक्षय
**सबखे**– सर्वनाश
**गेह**– गृह
**ऊलो**– छोटा, नजदीक
**पेलो**– दूर, बड़ा

( पद संख्या–२२ )

**खबर**– जानकारी
**खिलका**– देह
**ख्याली**– आत्मा
**अलोगत**– अदृश्य
**धाया**– स्थिर
**चौकस**– सावधान
**चौकी**– त्रिवेणी
**कंवलमांहि**– नाभिदेश
**अरधंग्या**– अर्धांगिनी
**शीव**– शिव (ब्रह्मरन्ध्र में स्थित)

( पद संख्या–२३ )

**अविगत**– अनिवर्चनीय
**मेहर**– कृपा
**पांचु**– पाँच तत्त्व में चलने वाले स्वर
**जमजालम**– यमराज द्वारा किया जाने वाला अत्याचार
**अणभे**– अनुभव

( पद संख्या–२४ )

**देश**– परमात्म तत्त्व
**हटक**– घेरना
**अटक**– रोकना
**नवतत**– पाँच ज्ञानेन्द्रिय, चार अन्तःकरण
**रमज**– स्वयं आत्मा
**दलीचै**– अटल आसन
**मुजरा**– अन्तिम नमस्कार

( पद संख्या–२५ )

**परतक**– प्रत्यक्ष
**परवाण**– प्रमाण
**सुतै**– स्वत
**चौथा**– आत्मा
**निरदाया**– अन्तःकरण से परे
**चार बाणी**– वैखरी-मध्यमा-पश्यन्ति-परा
**उकत**– विचार में आना

( पद संख्या–२६ )

**हुसियार**– सावधान
**वैहोनी**– व्यवहार करना
**कांटा**– विषयभोग
**फूला**– अभिमान
**धांम**– सांच
**शर सारे**– तरकस पर खींचा हुआ बाण
**मनमांई**– मन के अनुसार
**पाल पहूचानैं**– किनारे पर
**पाड़ै**– गिराना
**बगतर**– कवच
**सेल**– भाला
**सोजी**– ज्ञानदृष्टि

( पद संख्या–२७ )

**चेतत**– सावधान
**भींना**– फंसा हुआ
**मूना**– मौन
**कवली**– की गई प्रतिज्ञा
**बरतावै**– पालना
**सरवग**– सर्वता
**भालै**– मानना
**कलमाँ**– पूजा
**निबाज**– नमाज

**ऊला**– निरर्थक
**षट्मत**– सेवड़ा(जैन)–दरवेश(मुसलमान)–
सनातन–जंगम–जोगी–संन्यासी

( पद संख्या–२८ )

**पाल**– किनारा
**बटाऊ**– जिज्ञासु
**वाट**– मार्ग
**वलतारो**– दुःखी पुरुष
**निहाल**– बेड़ा पार (कल्याण)
**वुसतां**– भूसी, ज्ञान खजाना
**मुकाम**– घर (ब्रह्मानन्द)

( पद संख्या–२९ )

**हाटडी**– ज्ञान की दुकान
**गिरथा**– जिह्वा पर
**ग्रहैं**– ग्रहण करे
**विडार**– भागना, ग्रहण नहीं करना
**सुधड़रो**– सुधरे हुए का
**विषमघाट**– पिंगला नाड़ी
**दांणीड़ो**– धान निकालने वाला, मनोवृत्ति
**सूमर**– अमृत
**चारू खाण**– जन्म–मरण, (चार खानि)

( पद संख्या–३० )

**बोलदां**– बोलता है
**कहंदा**– कहता हूँ
**गिनै**– ध्यान
**शशियर**– चन्द्र स्वर
**धवणाय**– सुषुम्ना
**सैस कला**– सहस्रार
**सारंग**– परब्रह्म
**वाकी**– उनकी
**खवासी**– सेवा
**अचाया**– ईच्छा रहित
**गैबी**– अज्ञात, बिना जान पहिचान वाला
**मरम**– गुप्त, भेद
**मालक**– परब्रह्म
**मुड़दा**– स्थिर मन
**सोवन सिखर**– ब्रह्मरन्ध्र

( पद संख्या–३१ )

**जोगी**– योग क्रिया में रत
**निगै**– अनुभव किया
**निसतारा**– जन्म मरण दुःख से रहित
**पाँच पचीस**– पाँ विषय एवं पचीस प्रकृति
**अडग**– स्थिर
**भेव**– भेद
**वाके**– उनके
**खरा**– सत्य
**अखै**– अक्षय
**निरधुंधी**– आवरण रहित
**वांई**– वहां (आत्मानुभूति)

( पद संख्या–३२ )

**सहजो**– सहज
**करण**– इन्द्रियाँ, अन्तःकरण
**पंछी**– मन
**पर**– पैर
**वेगमपुर**– शिव शक्ति के रहने का स्थान
**किम**– कैसे
**देवल**– परमात्मा
**झाँई**– प्रतिबिंब
**सांई**– परमात्मा
**पारख**– बिना समझे
**दाव**– अवसर

( पद संख्या–३३ )

**समांई**– समझायी
**गोतलो**– गोत्र (निरंजन) की पहिचान
**गम आई**– धीरज, शान्ति धरना
**घरूँ**– घर से
**वैहतां**– चलने का मार्ग
**खोज**– निशान
**विलाई**– मिटना
**असमान**– सहस्रार चक्र
**रेवाई**– रहता है
**विलुंबिया**– भरपूर
**कलपाई**– कल्पना करना
**अनड़**– पक्षी
**अंबु**– पानी
**मधा**– मध्य

( पद संख्या–३४ )

**रैता**– निवास
**द्वादश**– बारह अंगुल श्वास
**उरण**– वहां तक
**आपो**– आत्मा
**अधर**– बिना आधार

सधर– आधार सहित
सहल– भ्रमण, घूमना

( पद संख्या–३५ )

विणज– व्यापार, ज्ञान प्राप्ति का व्यापार
अरध– आधा
शरीरी– आत्मा
कुबद– दुर्बुद्धि
विरांणी– विजातीय
साय– तीर
दालिद– पाप
अधकी– पापों की
नाव– उधारी
जाव– जबाब

( पद संख्या–३६ )

झगड़ो– जन्म मरण का चक्र
गमले– धीरज धरणा
लंक– कटि (आपानवायु)
सांसै– प्राणवायु
इम– यह

( पद संख्या–३७ )

निरख निरख– समझ समझ कर
डोरी– वृति
अधर– नाभिदेश
आकासा– त्रिवेणी
नटवो– मन
संसै– संशय
ठोढ– स्थान
थिरप– थरपना
दृष्टि– दीखायी देना
मुष्टि– अदृश्य (परमात्मा), मुट्ठी
पीयाणा– विचित्र, गमन
निरवाणा– दुःख रहित

( पद संख्या–३८ )

खिलका– शरीर
ाय– सहमति
एकरसता– एकमार्ग (एक सिद्धान्त)
लार– पिछा
सवागी– उच्चकोटि
ाल– आत्मानुभूति
होले मांही– स्वयं के अन्दर

( पद संख्या ३९ )

सबदां– गुरु द्वारा दीया गया शब्द
दरस्या– दृष्टिगोचर होना

( पद संख्या–४० )

निगै बिना– बिना जाने
पचहारै– अनावश्यक परिश्रम
भोले– अनजान

( पद संख्या–४१ )

जरो– समझना
अगम– ब्रह्म, अगम्य
समर– स्मरण
परगल– विचित्र
सूधा– सीधा

( पद संख्या–४२ )

हंसा– जीव. आत्मा
मानसरोवर– ब्रह्मरंध्र
सगम– शिव, ब्रह्म
वेगम– अनुभव/ चिन्ता रहित, परमात्मा

( पद संख्या–४३ )

हंस हंस– खुशी खुशी
स्वायंत बूंद– सोहं शब्द
महर– भेदी

( पद संख्या–४४ )

मही– दही
इंड– शरीर
संका– सन्देह

( पद संख्या–४५ )

कायासिंध– मनुष्य शरीर मिलना कठिन
सेल अणी– भाले की नोक

( पद संख्या–४६ )

विध– साधना
पिछमदिश– सुषुम्ना मार्ग
इक्कीसूं– सात चक्रों को त्रिगुण माया से छेदना
छतीसूं– विभिन्न प्रकार के

( पद संख्या–४७ )

रणुकार– सोहं शब्द का लगातार श्वासों के साथ जप
अकल कला– सहस्रार

( पद संख्या–४८ )

ऊँचो चढ हेलो– सत्य बात बताना. अपने आत्मस्वरूप में स्थिति

**अलो**– छोटा, सूक्ष्म

( पद संख्या–४९ )

**अजब संदेशो**– जन्म मरण मिटाने की साधना
**घर मैं**– आत्म तत्त्व का निश्चयरूपी घर

( पद संख्या–५० )

**अफुर**– संकल्प विकल्प रहित
**अबोल**– कथनी में नहीं आता

( पद संख्या–५१ )

**अवर**– दूसरी
**अंबर**– आकाश
**दीप**– प्रकाश
**निरदाया**– कलंक रहित, अन्तःकरण से परे
**वसता**– निवासी
**वसती**– नगरी
**अवरण**– आवरण
**थया**– रहित
**अथाग**– अभेद, अपरम्पार
**थाग**– किनारा, भेद

( पद संख्या–५२ )

**जैरी**– जिसकी
**विगत**– बिता हुआ
**मरम**– भटकना
**मांई**– अन्दर
**जोरावर**– शक्तिशाली
**दसवां**– सहस्रार
**भलहल**– उत्कृष्ठ

( पद संख्या–५३ )

**अथिर**– अस्थिर,बदलनेवाला
**तार**– प्राण,प्रणव
**सभर**– भरा हुआ
**मानै**– मानना
**स्वाद**– विषयभोग
**घर**– आत्मानुभूति
**भौम**– मंगल अवस्था, शून्य
**खुपर**– शिर

( पद संख्या–५४ )

**बेगम**– अज्ञात, परमात्मा
**गमकर**– धीरज धरना
**तबक**– लोक
**द्वादश**– बारह अंगुल श्वास
**दिवाण**– दिवान, मंत्री
**गैब**– छिपना
**गम**– दुःख
**सदर**– आनन्द, होश, सुध

( पद संख्या–५५ )

**होरी**– वृति
**खेलूंगी**– अनुभव करना
**पाँच सखी**– पाँच ज्ञानेन्द्रियां
**महोलो**– वातावरण
**मैलातकी**– अशुद्धभाव
**सुनको**– ब्रह्मरन्ध्र
**झणकार**– अनहद नाद
**रंगराच्या**– आनन्द की अनुभूति
**निरत**– लयवृत्ति
**परमवास**– ब्रह्मरन्ध्र
**सांम**– परमात्मा
**लार**– पिछे, साथ

( पद संख्या–५६ )

**थायके**– प्राप्त करके
**पीतम**– प्रियतम
**समजी**– समझना
**संपिया**– पवित्र, परमात्मा
**दुहाग**– रंडपा, सुषुम्ना
**मानेतण**– सुहागण
**महोलै**– बस्ती
**खुशाल**– आनन्दित

( पद संख्या–५७ )

**मोपर**– मेरे पर
**ख्याल**– माया का कर्म
**पाल**– रूकावट
**निरत**– तन्मयता वृत्ति
**मैरम**– कृपा

( पद संख्या–५८ )

**मंझार**– बीच में
**ओलगो**– पहिचानना
**अमी**– अमृत
**थाय**– किनारा
**परापर**– पर एवं अपर से परे, अपरम्पार

( पद संख्या–५९ )

**सिरधार**– स्वामी, मुख्या
**रेलत**– डालना, उडेलना

**पालत**– मना करना
**करतार**– परमात्मा
**झली**– पकड़ी गई
**बारूंईमास**– हमेशा के लिए
**खुमार**– आनन्द की मस्ती

**( पद संख्या–६० )**

**परसत**– स्पर्श
**वसत**– ठहरना
**सरबंणा**– श्रवण इन्द्रिय
**सांभली**– सहन करना
**अवर**– अधिक
**तास**– आवाज
**विखम**– कठिन
**थाट**– आनन्द

**( पद संख्या–६१ )**

**मोय**– मैंने
**सीर**– भाग, हिस्सा, खास वस्तु
**चीन**– पहिचान
**लेवत**– लेना
**बीन**– सोच समझ कर
**जत**– संयमी
**अंगा**– अंग

**( पद संख्या–६२ )**

**अबै**– ऐ प्राणी
**सरत**– हल निकालना, बन जाना
**निगमपाल**– वेदों की सीमा
**झीवर**– मछली पकड़ने वाला, काल
**विणसै**– नाश होना
**झीणी**– सूक्ष्म
**निराट**– एक मात्र
**अगम**– अगम्य,परमात्मा

**( पद संख्या–६४ )**

**तरवर**– वृक्ष, जीवन
**दो फल**– जन्म मरण, पाप पुण्य
**सीस बिना**– अभिमान रहित
**सिंवरण**– स्मरण
**साख**– डालियां
**कैरो**– तीर

**( पद संख्या–६५ )**

**ठाढ़ा**– ताजा मोटा
**तरूवर**– ध्यान अवस्था
**कीमत**– हार या जीत
**लिगारा**– कुछ नहीं
**आंब**– आत्मानुभूति

**( पद संख्या–६६ )**

**विरछा**– चेतन
**बाला**– सच्चा जिज्ञासु
**सधर**– परमात्मा
**आपा**– शरीर
**भेदी**– प्रबल जिज्ञासा
**करारा**– सच्चा, जोरदार

**( पद संख्या–६७ )**

**अधरवृच्छ**– परमात्मा
**पपील**– अधर्मी, चिंटी
**मेवा**– आत्मानुभूति
**रहत पुरुष**– शिव

**( पद संख्या–६८ )**

**झूलिये**– आनन्द लेना
**मोती**– सोहं शब्द
**खंट खूंट**– सम्पूर्ण शरीर में निरत वृत्ति
**छीलरजल**– विषयकीच
**बुग**– जीवभाव
**हंस**– ज्ञानी
**बुगला**– अज्ञानी

**( पद संख्या–६९ )**

**चाहत**– इच्छा
**चांनणो**– प्रकाश
**खटकरम**– छः कर्म (स्नान, होम, जप, अर्चन, आतिथ्य, वैश्वदेव)
**ग्रह्या**– ग्रहण करने वाला
**आर**– माया
**कुलकाण**– जन्म मरण

**( पद संख्या–७० )**

**सहेलड़ी**– वृत्ति
**परवाण**– प्रमाण
**पाँच सखी**– पाँच ज्ञानेन्द्रियां
**धुर**– पुनः, वापिस
**गिवण**– चलना
**वैण**– पिछे
**भाण**– आन्तरिक कुम्भक का स्थान
**कैला**– कैसे

( पद संख्या–७१ )

**देस–** ब्रह्मरन्ध्र
**मुख बोलियां–** प्रत्यक्ष अनुभव
**सहेली–** सखी, बुद्धि
**बिहुंणा–** बिना

( पद संख्या–७२ )

**चौथा पद–** आत्मानुभूति
**अकर–** हाथ रहित
**दुरमति–** अविद्या
**मैरम–** प्राप्त वस्तु, परमात्मा

( पद संख्या–७३ )

**बाटड़ी–** मार्ग
**वैण–** शब्द
**टीकै–** ठहरना
**पपील–** अति जिज्ञासा, चिंटी
**रैण–** निवास
**विषम–** कठिन
**अणमूरत–** निराकर
**वाटी–** मार्ग

( पद संख्या–७४ )

**विसवै–** विश्व
**तोयतै–** पानी से
**संपद–** स्पन्द (ऊपर)
**निसपंद–** निस्पंद (नीचे)

( पद संख्या–७५ )

**आसत–** असत
**गही–** पकड़ना
**वाईते–** उसीसे
**लाधे–** मिले

( पद संख्या–७६ )

**सांम–** परमात्मा
**बोध,–** ज्ञान
**बोधक–** ज्ञानी
**वेचून–** शून्य

( पद संख्या–७७ )

**गिवण–** गमन
**मैरम–** रहस्य

( पद संख्या–७८ )

**गम–** रहस्य
**अगम–** अगम्य
**निगम–** वेद
**लीवरी–** ध्यानी
**वरत–** रस्सी, वृत्ति
**लैर–** सुषुम्ना
**धीरप–** धीरज
**वैणी–** बीन बजाने वाला, प्राण
**ललकार–** हिम्मत से,
**माणी–** प्राप्त की

( पद संख्या–७९ )

**दिवाना–** विचित्र
**खलक–** संसार
**पर–** पाँख, पाँव
**पियाणां–** मार्ग तय करना, गमन
**मुगता–** मिलना, प्राप्त होना
**निवाणा–** नम्रता, शान्ति, सुख
**पुरुष–** परमात्मा
**वध–** बढ़ा हुआ

( पद संख्या–८० )

**झुक–** निकट
**गुगें–** मन वाणी का विषय नहीं
**अभंगी–** अखण्डित
**सरबग–** चेतन, सर्वत्र
**खलक–** संसार
**झिगमिग–** चमकता हुआ

( पद संख्या–८१ )

**चिरूंगा–** दीपक
**सोजी–** दृष्टि
**आगम–** धर्मशास्त्र

( पद संख्या–८२ )

**वेहद–** सीमा रहित
**परसै–** पहिचानना
**झिलकै–** प्रकाशवान, चमकना
**छीजै–** घटना
**सोजी–** दृष्टि

( पद संख्या–८३ )

**नूर–** ज्योति
**उदक–** जल
**चसमा–** ज्ञान
**वांई–** उसी जगह

( पद संख्या–८४ )

**वदै–** करे
**वाद–** तर्क

विहंग– पक्षी
बहै– उड़ें
ग्रह्यो– आवास
ग्रहणी– पकड़ना
छोत– छूत

( पद संख्या–८५ )

अकल– बुद्धि
सबर– धीरज
सरबंगी– परमात्मा
अधर आसण– ब्रह्मरन्ध्र में वृति

( पद संख्या–८६ )

धरता– परमात्मा
सात सुंन– सात चक्र, जड़-चेतन, सुषुप्ति आदि सुंन
सिप्रत– समर्थ
चौकी– सहस्रार चक्र, सुंन से परे

( पद संख्या–८७ )

दो– देना
याका– इसका
सैना– इशारा
आऐना– आना
मैं ता– मैं उस
सांसा– कठिन
अभरा– अपूर्ण
सभर– पूर्ण

( पद संख्या–८८ )

सनेसो– सन्देश
रवै– रहना

( पद संख्या–८९ )

इच्छा– वासनाएँ
निजनामी– आत्मस्वरूप
ऊपना– उत्पत्ति
कामा– कार्य
कमठाना– चिणाई, निर्माण
अहदाट– अनजान
लांगिया– पार किया

( पद संख्या–९० )

सवाया– मन लगाकर
का– किस

( पद संख्या–९१ )

जोवो– ढूढ़ना, पहिचानना
मडै– परमात्मा, तत्त्वज्ञ
दाया– अधिकार, दांव
तुरियै– आत्मा

( पद संख्या–९२ )

निरदाई– साक्षी
कतेब– कितने ही
भरवण– बोलना
अनंव– नाम रहित
अवाण– दुःख रहित
अचाई– इच्छा रहित

( पद संख्या – ९३ )

म्याना– गवाह
मुष्ट– नष्ट
नगेवा– नहीं है

( पद संख्या–९४ )

स्वपरकाशी– स्वयंप्रकाश
निरदाया– साक्षी

( पद संख्या ९५ )

शासतर– शास्ता
चिलका– प्रकाश
ऊरण– भेड़, बकरी, मकड़ी

( पद संख्या–९६ )

कैसा– किस प्रकार
मंड्या– छाया हुआ
थकत– हार
हुलासा– आनन्द
लेसा– अणुमात्र

( पद संख्या–९७ )

अनासी– अविनाशी
इचरज– अचम्भा
गमपासी– आत्मानुभूति
परपंच– माथापची
दाखी– गरजना

( पद संख्या–९८ )

हेरा– खोजा
उलट हंस– सोहं
आरपार– सर्वत्र
मूरत– परमात्मा
निरभैरा– निर्भय
रहतदार– परमात्मा के रहने का स्थान
मुजरा– नमस्कार

( पद संख्या-९९ )

अभेसा- अदृश्य
असंख भाण- करोड़ो सूर्य
परम पुरुष- परमात्मा
पाखर- जानकार
रैसा- अणुमात्र
निरलेसा- आलस्यहीन

( पद संख्या-१०० )

अथाया- अपरम्पार
निरआसै- आसा रहित
तिहूंविद्य- तीन प्रकार से
तिथि- स्थित
अचाया- ईच्छा रहित
अनआतम- जड़
निरविशेष- सामान्य
निरमाया- माया रहित

( पद संख्या-१०१ )

वाणी- बोल (वैखरी-मध्यमा-पश्यन्ति-परा)
खाणी- अण्डज-उद्भिज-स्वेदज-जरायुज
तिरगुण- सत-रज-तम
विषे- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध
निरालंब- आडम्बर रहित
सुधा- अमृत

( पद संख्या-१०२ )

बनाई- उत्पत्ति
मनोरथ- मन की कामना
सो है- चेतन तत्त्व
भाव आपण- भावना रूप संसार

( पद संख्या-१०३ )

अदल- न्याय करने वाला
हलाई- विचार करना
उलघंत- पार जाना

( पद संख्या-१०४ )

हरिजन- ईश्वरभक्त
झबका- क्षणिक दृश्य
दृगस्थान- चक्षुस्थान
विस्वै- विश्व
म्यांना- साक्षी

( पद संख्या-१०५ )

अथाई- सीमा रहित
वायक- संसार की रचना करने वाला, शब्द
अवायक- माया
पनरेतत- दस इन्द्रिया-चार अन्तःकरण-प्राण
नवतत- पाँच ज्ञानेन्द्रियां, चार अन्तःकरण

( पद संख्या-१०६ )

धौके- भर्म से
पिंजर- शरीर
बिछूटा- उड़ जाना

( पद संख्या-१०७ )

कलेरी- लिपायमान नहीं
पुरस- चेतन
कुदरत- प्रकृति
मंझारी- अन्दर
लिपै- मिल जाना
लिगारी- किंचितमात्र
उरै- निकट
लिंग- सूक्ष्म शरीर
अखै- अक्षय
इकसारी- समान रूप से

( पद संख्या-१०८ )

वायक- उत्पत्तिकर्ता, शब्द
अंध्य- अबाध, अनंत

( पद संख्या-१०९ )

गुसांई- परमात्मा
कलेश- दुःख
पावक- अग्नि
पाहन- पत्थर
चकमक- रगड़, घर्षण
निरआसै- वासना रहित
अघटतां- उपाधि रहित
संगरे- संग्रह

( पद संख्या-११० )

तोयतै- पानी से
झांई- प्रतिबिंब
अगाध- गहन, गम्भीर
दाया- मौका, अवसर
अवर- मात्रा

( पद संख्या-१११ )

जाण- जानकर
मोरमुराद- बादल देखकर मोर का आनन्दित होना कामना

( पद संख्या-११२ )
ख्याली- आत्मा
विरध- वृद्धि
निरदावैं- दूर, आश्चर्यजनक
कारज- कार्य
राया- रहता है

( पद संख्या-११३ )
बाजी- खेल
बाजीगर- परमात्मा
लाधै- मिलना, प्राप्ति

( पद संख्या-११४ )
निरदावै- अलग, आश्चर्यजनक
मधि- मध्य
सरवां- पात्र
परहरीया- परे स्थिति

( पद संख्या-११५ )
ख्याली- परमात्मा
खिलका- माया
पुतली पिंपि- कपड़े की कठपूतली
प्रकृति- ग्रहण
निवृत्ति- त्याग

( पद संख्या-११६ )
वांक- डेढ़ापन, असत्य
आसा- असम्भव वस्तु की इच्छा
आरत- दुःखी
पोखै- पालन पोषण
इच्छा चार- आसा-शुभईच्छा-परईच्छा-अनईच्छा

( पद संख्या-११७ )
उपासी- उपासक
मायापासी- माया से बन्धन
दुरमत- भेद बुद्धि
दाखी- स्पष्ट रूप से
विणासी- लय

( पद संख्या-११८ )
दोख- अवगुण, दुःख
मिसरत- मिश्रण (जड़ व चेतन)
आव्रणते- आवरण
पडदोऊ- पड़दे में
गेहैं- ज्ञेय

( पद संख्या-११९ )
लख- जानना
हूंजी- कर्तापने का अभिमान
सुतै- स्वतः
विसवे- विश्व
पखैतां- पख, आंशिक

( पद संख्या-१२० )
इंड- शरीर, अण्डाकार
तबक- लोक
इलाकै- पृथ्वी
आस- निकट

( पद संख्या-१२१ )
मुकुर- दर्पण
कलप- तड़फन
घटिया- कम होना

( पद संख्या-१२२ )
अभ्र- भतूलिया, हवा चक्र
अलोई- एक रस

( पद संख्या-१२३ )
चिदजड़ ग्रन्थी- आत्मा के सत-चित गुण शरीर में तथा शरीर के दुःख, द्वैत आत्मा में मालुम होना
थूल- स्थूल
समथाई- समान रूप से स्थित
अप्रमेय- प्रमाण रहित, जाना नहीं जाता है

( पद संख्या-१२४ )
बारा- बाहर
सिष्ट- सृष्टि
इन्द्रजाल- मायाजाल

( पद संख्या-१२५ )
राई भर- अल्प मात्र
रखै- रखना

( पद संख्या-१२६ )
एकण- अकेला
कामा- कार्य
पटपुतरी- कपड़ा परचित्र
तार- धागा
अलोगत- चित्ररूप नहीं, अदृश्य
निरदाया- एक सार, इकसार

( पद संख्या-१२७ )
प्रगट- अनुभव सहित, प्रत्यक्ष
आरत- दुःखी (संसार दुःखरूप)
अकलकला- सहस्रार, कला रहित

अहनिश– दिनरात
हंस– जीव
विसारू– भूलना
छेद्या– नष्ट करना

( पद संख्या–१२८ )

बातां– शब्दचर्चा
तिहूं– तुमसे
तिमरदी– अज्ञान
इसकदी– परमात्मा
वहै– चलना
विखमवाटी– बंकनाल, सुषुम्ना
काँच– नहीं है
गैब– अप्रत्यक्ष

( पद संख्या–१२९ )

बाग– हरा भरा बगीचा
वनमाली– जीव
वनमाली– परमात्मा
उभा– खड़ा

( पद संख्या–१३० )

आगी– आगे
पागी– खोजी
घन– बादल
थाया– विद्यमान
देवल– मन्दिर
निरपखता– निरपेक्ष

( पद संख्या–१३१ )

तत्त्वमसि– तत्-ईश्वर, त्वं-जीव, असि–है
नून– न्यून,अल्प
रैण– रात
आन– अन्य

( पद संख्या–१३२ )

फकीरी– चिन्ता रहित
विखै– विषय (शब्द, स्पर्श,रूप, रस, गन्ध)
करूर– कठिन
कूर– असत्य
कण– एक दाना
डूर– अन्न कणों उपर का छिलका
नवनिधि– पद्म–महापद्म–शंख–कुन्द–मुकुन्द–कच्छप–मकर–नील–खर्व)
आठ सिद्धियां– अणिमा–लघिमा–प्राप्ति–प्राकाम्य–महिमा–ईशिता–वशिता–कामा–सायिता

मूर– मूल

( पद संख्या–१३३ )

निचिंत– निश्चिंत
सुदेश– आत्मतत्त्वविचार
देश– द्वैष, सगुण
विदेश– राग, निरगुण
बंधै– बनता है
मधेस– मध्य
ग्येही– शास्त्र
धेस– न पकड़ना न छोड़ना, बीच में

( पद संख्या–१३४ )

अग्याद– अज्ञात
थाप– स्थिति
उथाप– अस्थिति
त्रयताप– तीन ताप (अध्यात्म, अधिभौतिक, अधिदैविक)
सिमरथ– ईश्वर
उनमेष– आँख खुलने में लगा समय
निमेष– पलक गिरने में लगा समय
भेख– वेश

( पद संख्या–१३५ )

कैसकै– कहना
सदर– विचार
आशय– रहस्य
आन– अन्य
उपाद– उपाधि
करण– इन्द्रियां
बांण– दुःख
अवांण– सुख

( पद संख्या–१३६ )

अदेश– देश रहित
खै– नाश
अखै– अक्षय
रेख– निशान

( पद संख्या–१३७ )

निबेड़ा– निर्णय
सतधार– सत्य का ग्रहण
अदेख– अदृश्य
परला– प्रलय
निरलेस– आलस्य रहित, व्यापक
लेस– अणुमात्र

( पद संख्या-१३८ )

बंगला- रहने का स्थान
छतीस- तरह तरह के
सधर- पक्की, दृढ़, नाभि
पोलां- खम्भा
तैकीक- खोजो
दलीच- अटल आसन
भीचन- वीर
भीच- शूरवीर

( पद संख्या-१३९ )

जागनै- ज्ञान अवस्था
जोयो- आत्मानुसंधान
सबली- मजबूत
जाणें नहीं देउँला- भूलूंगा नहीं
अजब झरोखा- ब्रह्मरन्ध्र
तांती- लगातार वृत्ति
तनड़ा- शरीर
अणी- धार
अगर- अग्र
अदूर- अटल
दिवाना- शीव (शिव)
मांझा- पाप धोना
वालो- प्यारा
सुरी- स्वर
वेगम- चेतन
विरलां- कोई जन
लाघी- मिलना, प्राप्ति

( पद संख्या-१४० )

अखरे- प्राप्त किया, सत्य
संगरे- संग्रह
निरालेप- लिपायमान रहित
अगिरे- पतन रहित

( पद संख्या-१४१ )

परतुक- प्रत्यक्ष
सई- सही, ठीक
तिहूँविध- भाव-भावाभाव-अभाव
लील- नीला रंग
वैदा- वेद

( पद संख्या-१४२ )

निकलंक- कलंक रहित
निरभोई- भय रहित
ठाया- सुरक्षित
ठामो ठाम- ज्यों का त्यों
नूर- चमक

( पद संख्या-१४३ )

बंझ्यापुत्र- बंध्यापुत्र (मिथ्या)
कांई- कही भी
आगैई- भूतकाल
रेसी- भविष्य में
नई- नहीं
हेती- है पना
नेती- न पना
दिरस- दृश्य

( पद संख्या-१४४ )

तीयां- वहां
ईयां- इस प्रकार

( पद संख्या-१४५ )

प्रतिहार- अन्तर्मुखी
बुध- बुद्धि
तीयां- वहां
अनूप- उपमा रहित

( पद संख्या-१४६ )

जथारथ- यथार्थ, सही बात, वास्तविक
खोजी- बुद्धि

( पद संख्या-१४७ )

सांभलो- ग्रहण करना
सई- उचित

( पद संख्या-१४८ )

वायक- उत्पादक, महावाक्य आदि शब्द
सार- अनुभव

( पद संख्या-१४९ )

चारू भाव- चार भाव (प्रागभाव-जो पहले नहीं था,अब है, अन्योन्याभाव-घट में पट का पट में घट का अभाव, प्रध्वंसाभाव जो पहेले था अब नष्ट हो गया, अत्यन्ताभाव-जो तीन काल में नहीं है।)
जुई जुई- अलग-अलग

( पद संख्या-१५० )

अवनी- पृथ्वी
रजनी- रात
ठाना- जाना

अपरकाश– अन्धेरा

( पद संख्या–१५१ )

राया– सर्वश्रेष्ठ

पहान– पत्थर

( पद संख्या–१५२ )

अस्फुरता– फुरने से रहित

होणहार– प्रारब्ध, भावी

निमंता– निमित्त

गिरा– जिह्वा

शोभाखी– सही बात कहीं

निरमेता– निर्भय से

( पद संख्या–१५३ )

मो मांई– मेरे अन्दर

सुतै– स्वतः, प्रेरक रहित

थाई– प्रगट होना

( पद संख्या–१५४ )

तुरीया– आत्मा

जुदा जुदा– अलग अलग

निरदाई– साक्षी

बोधक– चेतन

( पद संख्या–१५५ )

परतक– प्रत्यक्ष

परवाण– प्रमाण

आद्रस– उतल लेंस

आंकतै– अंकों का अंकन

रूपा– चांदी

( पद संख्या–१५६ )

अज्ञेय– अज्ञात

निरदाया– साक्षी

साखी– साक्षी

( पद संख्या–१५७ )

निरवाणी– वाणी रहित

भूल– भोला, अज्ञानी

सयांणा– समझदार, ज्ञानी

( पद संख्या–१५८ )

वंच्छ्यैा– कामना

खपति– विनाश

सैमल– सम्मिलित, साथ

( पद संख्या–१५९ )

चम– चर्म, त्वचा

तरूजर– पेड़ की जड़

( पद संख्या–१६० )

करतार– परमात्मा

अधिकार– अधिक से अधिक

वरणै– वर्णन

सीधा– सरल

( पद संख्या–१६१ )

अथाया– स्थित

अंस– जीव

फंटाया– अलग हुआ

परतक– प्रत्यक्ष

( पद संख्या–१६२ )

विलासा– विनोद, मनोरंजन

हाणी– लय

वंधे– इच्छा

( पद संख्या–१६३ )

आदिपुरुष– परमात्मा

परथम– प्रारम्भ में

अमावस– अविद्या

बीजो– दूसरा

बीज– दूज, द्वितीया

निषण– झुकना

टंकसाला– शब्द की उत्पत्ति

गरणाया– गर्जना

सैंस– हजार

एकुंकारा– समभाव

बक्या– कहा

भाष– कहना

पत– विश्वास

सुघड़– गहन विचारवाला

चार सांग– गिरे (गृहस्थी)–आश्रम–त्यागी–परमहंस

अवर– अगाड़ी

( पद संख्या–१६४ )

सभर– भरपूर

अस्त– असत

( पद संख्या–१६५ )

रैता– सहना

निसाणी– पहिचान, यादगिरी

अजाणी– जानकारी में नहीं

जुदी– अलग

कहाणी– वार्ता

परलै– निकट, की ओर
कैई– कही
सिंध– सिद्धपुरुष
सरब– सर्वज्ञ
सलूणा– आनन्द देनेवाला
नूरी– प्रकाशमय, चमक

( पद संख्या–१६६ )

निरवाण– दुःख रहित
निरवाणी– आत्मा
वाणी– आवाज, शब्द
म्यांना– गवाही
महरम– निश्चय

( पद संख्या–१६७ )

तिरिविध– तीन तरह से
दोख– अवगुण, दुःख
उला– उलझा हुआ

( पद संख्या–१६८ )

सिष– शिष्य
ता बाजी– यह खेल
अचेतन– अज्ञानी
मां जी– हम हैं
काजी– मुसलमान सम्प्रदाय का पंडित
पूगा– रहा
वैमुख– गुरु के विपरित
पाजी– मनमुखी

( पद संख्या–१६९ )

तीन इच्छाएँ– इच्छा (सृष्टि की रचना)-
परमार्थइच्छा-अनइच्छा
जुई जुई– अलग अलग
अरथ– मतलब
निरण– निर्णय
सरवा– सर्वज्ञ

( पद संख्या–१७० )

गंगोदक– गंगाजल की तरह पवित्र
अवास– रहने का स्थान
पालै– बनाना
आचरै– उपयोग में लेवे
निहालै– निहारना
वंछे– प्राप्त होवे

( पद संख्या–१७१ )

बावरी– माया से पागल
बेवार– व्यवहार
धाम– धूप
निमक– क्षणिक
गिवांर– मूर्ख
सेंध– सीध, मार्ग, लक्ष्य
समर– युद्ध
शारंगधर– परमात्मा, सोहं शब्द
टल्यो– मिट गया

( पद संख्या–१७२ )

पीयाजी– परमात्मा
अजब– विचित्र
उमेद– आसा
सवागी– स्वांग (विचित्र वेषभूषा)
भाल– चोट
ब्रहन– विरही
अवघट– अजान
बेदरदी– दर्द का अनुभव नहीं हो
दिलदार– भावुक
सार– दुःख दर्द
बुझी– पूछना
हवाल– हाल
रिक्षपाल– रक्षक
वदन– स्वरूप
किरपाला– परमात्मा
चैन– शान्ति
लाल गुलाल– आनन्दित
ख्याल– खेल

( पद संख्या–१७३ )

करीया– समज्या
अलिया– अज्ञानी
कलिया– उलझना
वृक्ष– परमात्मा
छाया– प्रतिबिम्ब
नीचा– गहरा
फल– मुक्ति
द्रिस– दृष्टि
गम– परमतत्त्व
गुह्य– गुप्त

*******

### श्रीबनानाथजी महाराज का परवांणा

दांख– वर्णन
भँवरा– जीव
ओलखाई– पहिचानना
ढ़ावो– मिटावो
उनमुनमुद्रा– मौनकृति (आन्तरिक ध्यान)
शाम्भवीमुद्रा– बाह्य ध्यान
जरणा– क्षमा
मेखला– कमर में बाँधने का
सिंगी– सींग का बना हुआ ध्वनि यन्त्र
श्रुत– सूनना
सेली– गाती, माला
कुतक– रसांजन
सबर– धीरज
विरोली– विशेष तिलक
चाकड़ी– चिह्न, खड़ाऊ
चेतन– कूटस्थ
वैणा– क्रिया करानेवाला
सेल– माला
हटै– हार
छाजै– स्थिर रहे
नाभ– मणिपुरक चक्र
नागन– कुण्डलिनी शक्ति
भागी– भोग करना
धड़पर शीश– अभिमान
नगर– बिन्दु संचय स्थान
नागण मार– बिन्दु (कामकृति) को उर्ध्वाधर करना
पश्चिम– सुषुम्ना
उठती लहर– विषय भोगने की इच्छा
गांठ– ग्रन्थि
एकी सुमेर– सभीचक्र
फाटी– सक्रिय
उलटा कमल– सहस्रार
अमी– अमृत
शिखर घर– ब्रह्मरन्ध्र
फुरकत– फुरना
बंका– जिज्ञासु
खरतर– विचित्र
नारी– बुद्धि
बिना पांव– ध्यान
टूंटा– संसारिक कार्यों से विमुक्त
गूंगा– आत्मानुभूतिवाला
मुँदरी– इशारा
बहेंरा– संसार की बातें न सुनना
पांगला– संसार की ओर नहीं जाना
अंधा– संसार दिखायी नहीं देता (रसबुद्धि-रमणीत्वबुद्धि-सुखबुद्धि आदि का अभाव)
नटणी– ब्रह्माकार वृत्ति
महरम– रहस्य
आसोजी– भाव
अलागी– अलग, विचित्र
अनावर्त– आने जाने से रहित
अनुपा– समीपता से रहित
निश– चन्द्रमा

*******

### श्री नवलनाथजी महाराज के पदों के अर्थ

दिल– अन्तःकरण
दीवाण– सर्वोपरी, परमात्मा
छाजत– शोभापन
राजत– उदय होना
समाण– मिलना
अदल– पक्ष हीन
प्रजाल– प्रज्ज्वलित
धमण– इंधन
छार– नष्ट
भकभूर– नष्ट, चकनाचूर
सेर– घूमना-फिरना
पपीलगत– सूर्य चन्द्र नाड़ी का न चलना, चिंटी का मार्ग
समशेर– तलवार
अरिदल– काम क्रोध आदि का समूह
धमण– प्राण
निगमा– निश्चय
भोम– पृथ्वी, श्मसान
समीर– हवा
जालकूं– नष्ट करनेवाला
किरतारथ– जन्म मरण से छुटकारा
खटक– पीड़ा
साल– कष्ट
भरथारी– भक्त
तलफ– तड़फ

परासै– परावाणी (मूलाधार से उठती है)
अगमपुरी– सहस्रार
पुरंदर– शरीर
सनेस– वृत्ति
खिणक– क्षणिक
विणसत– नष्ट होना
नर– परमात्मा
नारी– माया
काकभ्रष्ट– कोआ
अवधू– विरक्त योगी
भाल– मस्तक
वड़ारी– कृतघ्न
लखारी– ज्ञान करवाना
स्वसमवेद– सूक्ष्मवेद
बागा– तना
विरमा– ब्रह्मा
चंदलोक– सहस्रार
सचियार– परमात्मा
दमोदम– लगातार
विज्ञान पुरुष– बुद्धि
निजार– आत्मा

*******

श्रीउत्तमनाथजी महाराज कृत पदों के शब्दार्थ
विड़द– धन, आत्मा
खणखोज– कारण का पता लगाकर
वक्र– टेढ़ापन
मैल– पाप
रमज– आत्मा
रिजु– सरल
मत्सर– ईर्ष्या
दधि– समुद्र
निस– रात
वासर– दिन
सः– वह
इदं– यह
अनामी– नाम रहित
चेत्य– चिदाभास
अचेत्य– कूटस्थ
छीलरिया– दुःखरूप संसार
खता– गर्त
मग– मार्ग
अनुगत– परमात्मा
अमाय– कपट रहित
पुंज– भरपूर
आतुरा– रोगी
छकिया– तृप्त
वकिया– कहना
अकिया– नष्ट
अटिया– कच्चा महल
दटिया– मुकाबला करना
डकिया– पार जाना
नकिया– समाप्त
लचिया– झुकना
मचिया– तैयार
सचिया– वास्तविक
जचिया– अच्छा लगना
गोई– तेरा-मेरा कहना
लोई– खून
पोई– स्थित
पजोई– बताना
बोझो ढ़ोय– जन्म-मरण का भार
गोय– धारण करना

।। इति कठिन शब्दार्थ ।।



## श्री पञ्चनाथेश्वर स्तोत्रम्

श्रीनाथ अवतारम् अनाथ उद्धारम् पारब्रह्म पुनि प्रगटेशम् ।।टेर।।
श्रीनाथ बनेशम् हरि हर देशम् श्रुतिवत् मय वाणीशम् ।
करुणा कारम् कलिमल हारम् दशवें द्वारम् दर्शनेशम् ।।१।। श्री
ब्रह्म विचारम् अज्ञ तारम् सुख कारम् दुःख हरणेशम् ।
भव भय टारम् भक्ति अपारम् हरदम हृदय विराजेशम् ।।२।। श्री
श्रीनाथ नवलेशम् योगी भूपम् हिज होलीनेसम् पदवीशम् ।
यन्त्र कारम् मन्त्र उच्चारम् गोरक्षनाथम् सिद्धेशम् ।।३।। श्री
अज अविनाशम् शिष्य अपारम् रसायन विद्याम् रमणेशम् ।
भानु प्रकाशम् वंश उजाशम् अलख अवतारम् अवधूतेशम् ।।४।। श्री
श्रीनाथ उतमेशम् त्यागम् देशम् विरले वैराग्यम् योगीशम् ।
भज जगदीशम् गुणा अतीतम् तपस्वी वेशम् कपिलेशम् ।।५।। श्री
गुरु नवलेशम् शिष्य उतमेशम् कीर्ति अपारम् युगलेशम् ।
ब्रह्माकारम् दृष्टि धारम् गुरु गीता ज्ञानम् गंगेशम् ।।६।। श्री
श्रीनाथ विवेकम् शंभु वेषम् क्षमा धृतिम् मय ध्यानेशम् ।
यदुवंश उजाशम् पुदगल धारम् जीव उद्धारम् गुरुदेवेशम् ।।७।। श्री
व्यास पुनीतम् वाणी श्रुतिशम् रचनाकारम् रुचि ग्रन्थेशम् ।
सततम् ध्यानम् आत्म ज्ञानम् शम दम सम्पत्ति धारेशम् ।।८।। श्री
श्रीनाथ शंकरेशम् शतसन्तोशम् भक्तम् मय गुरु भक्तेशम् ।
क्षमा विभूषितम् मृदुल वाणीम् सम दृष्टि मन भावेशम् ।।९।। श्री
मठ नवलेशम् आज्ञाकारम् सेवा सन्तम् श्रद्धेशम् ।
अजपा जापम् आपा जातम् घनम् विचारम् सर्वेशम् ।।१०।। श्री
गुरु नाथ विवेकम् निरंजन कारम् भ्रम निवारणम् प्रगटेशम् ।
निरन्तर निकटम् नर नागेशम् निर्गुण नैण प्रहलादेशम् ।।११।। श्री

( इति योगी प्रहलादनाथ कृत स्तात्रम् )

हरि ॐ तत्सत् । हरि ॐ तत्सत् । हरि ॐ तत्सत् ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५, फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डिंग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

